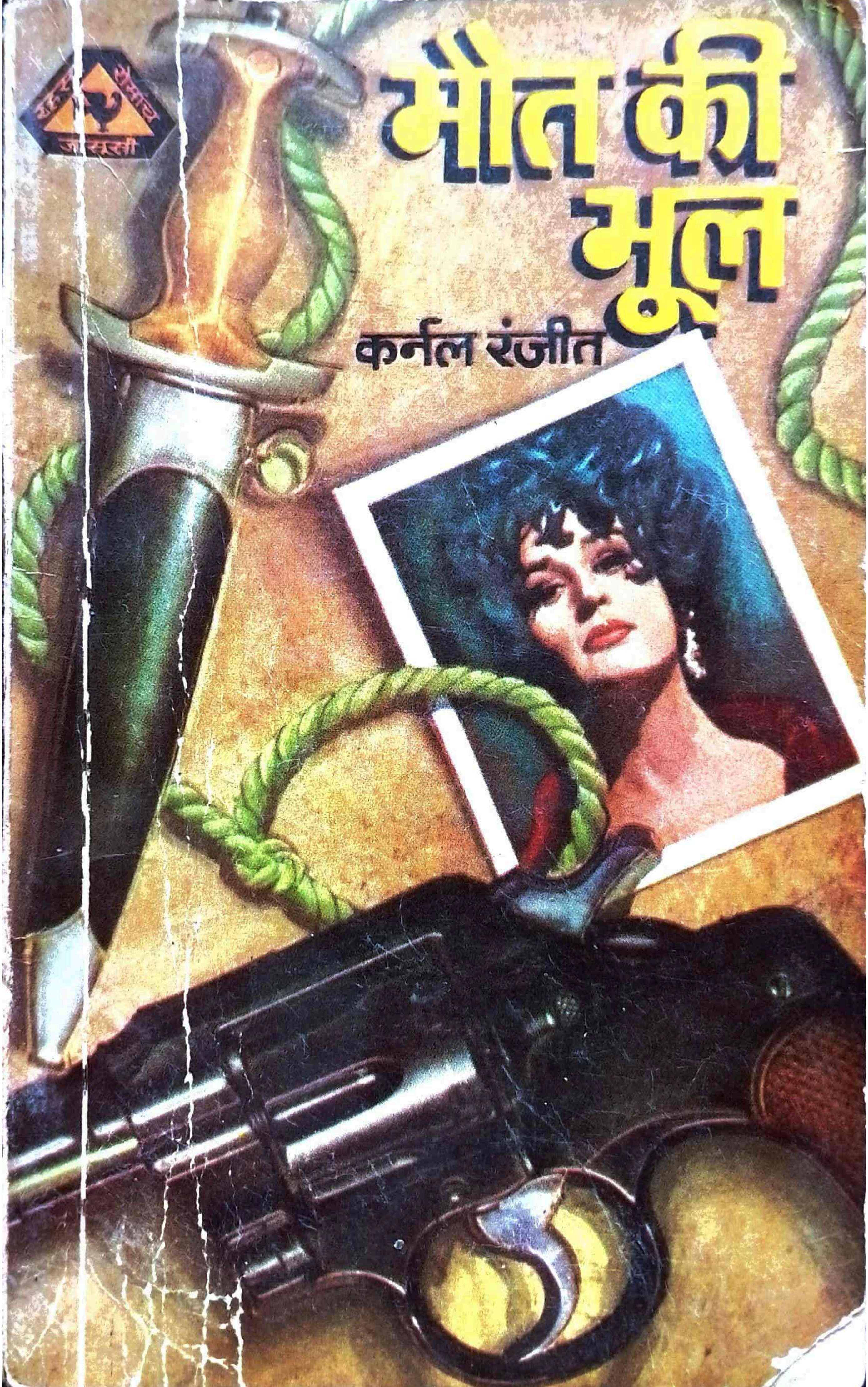
मौत की भूल
कर्नल रंजीत

# मौत की भूल

उसके गले में फंदा था। चाकू उसकी गर्दन के आरपार था। उसके सीने में गोली के घाव का निशान था।……इतनी निर्मम हत्या आज तक किसीने नहीं देखी थी। मरने वाला व्यक्ति बम्बई में अजनबी था।

उसकी हत्या क्यों की गई ? क्या हत्यारों ने उसे किसी प्रतिज्ञा के कारण अलग-अलग तरीकों से कत्ल किया था ? आखिर वह प्रतिज्ञा क्या थी ? कर्नल रंजीत का यह उपन्यास जासूसी साहित्य के बेजोड़, सनसनीखेज़ घटनाओं से भरपूर उपन्यासों की शृंखला की एक कड़ी है, जिसमें मेजर बलवन्त कत्ल के पूरे केस को बड़ी बुद्धिमानी और बहादुरी के साथ हल करता है।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली ३२

# मौत की भूल

कर्नल रंजीत

# मौत की भूल

## १. गुड़िया

सोनिया बीमार थी। उसके पेट में अचानक ज़ोरों का दर्द उठ आया था। उसे अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। डाक्टरों की एक पूरी टीम की देखरेख में अब सोनिया का स्वास्थ्य सुधर रहा था।

सोनिया का हालचाल देखकर मेजर बलवन्त अस्पताल से वापस आ रहा था तो धोबी तालाब के पास आकर उसने अपनी कार की रफ्तार धीमी कर दी। उसने कार की रफ्तार जान-बूझकर धीमी नहीं की थी, उसे लोगों की भीड़ में एक असाधारण लम्बा आदमी दिखाई दिया था जो बार-बार मुड़कर पीछे की ओर देखता था। एक पल के लिए रुककर फिर तेज़ी से चल पड़ता था। उसके माथे पर पसीने की बूंदें थीं। ज़रा-सा चलकर वह कांप उठता था। उसकी गर्दन कांपने लगती थी। आंखें बाहर को उबल पड़ती थीं। वह दाहिने हाथ में पकड़े हुए बैग को झटका देता, कंधों को झुकाकर ज़रा-सा कुबड़ा हो जाता और फिर आगे चल पड़ता। मेजर को उसकी सारी हरकतें संदिग्ध दिखाई दीं। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई आदमी उसका पीछा कर रहा हो और वह पीछा करने वाले से डर रहा हो। कार चलाते-चलाते मेजर उसमें गहरी दिलचस्पी लेने लगा। कोई बात ज़रूर थी, वरना भरे बाज़ार में कोई भी आदमी इस तरह की हरकतें नहीं करता। संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है जो दूसरों पर अपना भय या परेशानी प्रकट करना चाहता हो। मेजर ने अपनी कार सड़क के किनारे रोक दी और कार से निकल आया। वह उस आदमी का पीछा करना चाहता था ताकि देखे कि उसकी हरकतें इतनी संदिग्ध और रहस्यपूर्ण क्यों हैं।

मेजर उस असामान्य लम्बे आदमी के पीछे चलता रहा। एक जगह वह आदमी लेम्पपोस्ट पकड़कर खड़ा हो गया—सहारा लेने के लिए। शायद उसे चक्कर आ गया था। कुछ मिनट ठहरकर सिर को झटका देकर वह फिर आगे बढ़ गया। अब मेजर को पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि उस आदमी की स्थिति वास्तव में शोचनीय है।

वह आदमी एक लेन में मुड़ गया। यह एक तंग गली थी। गली में मुड़कर वह एक बिल्डिंग की सीढ़ियां चढ़ने लगा। मेजर भी दबे पांव उसके पीछे-पीछे चढ़ने लगा। उस आदमी ने मुड़कर देखा और फिर कुलाचें भरता हुआ पहली मंज़िल पर पहुंच गया। मेजर जब पहली मंज़िल पर पहुंचा तो उसने उस आदमी को कांपती हुई उंगलियों से एक फ्लैट का ताला खोलते हुए देखा। मेजर धीरे-धीरे कदम उठाने लगा। वह आदमी दरवाज़ा खोलकर अंदर चला गया। उसने दरवाज़ा पूरी तरह बंद नहीं किया और दरवाज़े के पीछे खड़ा होकर देखने लगा कि मेजर उसके पीछे तो नहीं आ रहा है।

मेजर ने उसके फ्लैट के दरवाज़े के बाहर खड़े होकर कहा, "क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?"

"आप कौन हैं ?" उस आदमी ने घबराकर पूछा।

मेजर को न जाने क्या सूझा, उसने मुस्कराते हुए कहा, "रहमत का फरिश्ता।"

कमरे के अंदर एक मिनट के लिए खामोशी रही। फिर दरवाज़े के पट खुल गए। उस लम्बे आदमी ने दरवाज़े में से पीछे हटते हुए कहा, "तशरीफ लाइए।"

मेजर फ्लैट के अंदर चला गया। फ्लैट में उसके अतिरिक्त और कोई न था। वह आदमी पलंग की ओर बढ़ा और उसपर इस तरह धड़ाम से बैठ गया जैसे उसे चक्कर आ गया हो। उसने मेजर को पलंग के सामने रखी एक ऊंची कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

मेजर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "आप बहुत परेशान मालूम होते हैं। मुझे ऐसा दिखाई दे रहा है जैसे आपको डर लग रहा हो कि कोई आपको मार डालेगा।"

उस आदमी के मुंह से अनजाने ही निकला, "मुझे नहीं, मेरे घनिष्ठ मित्र रामपाल तलवाड़ को आज कोई ज़रूर मार डालेगा।" और फिर जैसे वह चौंक पड़ा। उसे खयाल आया कि वह एक अज-

नबी के सामने अपना भेद खोल बैठा है। वह तुनककर बोला, "आप रहमत के फरिश्ते ही सही, लेकिन आप हैं कौन ? इस ज़माने में रहमत का फरिश्ता मिलता कहां है ? आज के ज़माने में किसीके प्रति सहानुभूति प्रकट करने कौन किसके पीछे आता है ? आज-कल तो लोग सड़क पर एक्सीडेंटों में घायल हो जाते हैं, असहाय पड़े तड़पते रहते हैं और लोग उनसे दूर भाग जाते हैं।"

वह संसार से बहुत ही ऊबा हुआ दिखाई दे रहा था। मेजर ने उसकी बातों का उत्तर न देते हुए उससे पूछा, "आपके घनिष्ठ मित्र को आज कौन मार डालेगा ?"

उस लम्बे आदमी ने बेसुधी में उत्तर दिया, "शायद अब तक उसे मार डाला गया हो।"

"आपके मित्र को किसने मार डाला होगा ? और कहां मारा होगा ?" मेजर ने पूछा।

"हत्यारे ने उसे कहीं भी मार डाला होगा," वह आदमी बोला। एक बार फिर उसे खयाल आया कि वह एक अजनबी के सामने खुलता जा रहा था, "आपने मुझे अभी तक यह नहीं बताया कि आप कौन हैं ?"

"मैंने कहा न, मैं रहमत का फरिश्ता हूं।"

"मज़ाक छोड़िए। यहां एक बहुत ही भले आदमी के जन्म-मरण का प्रश्न है।"

मेजर ने अपना आइडेंटिटी कार्ड जेब से निकालकर उस आदमी के सामने कर दिया।

"ओह, मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा। क्या किसी व्यक्ति की आकांक्षा इस तरह और इतनी जल्दी पूरी हो जाती है ! मैं रास्ते-भर यही सोचता रहा हूं कि मुझे किसी जासूस की सहायता प्राप्त करनी चाहिए।"

"आप पुलिस के बजाय किसी जासूस की सहायता प्राप्त करने की बात क्यों सोचते रहे हैं ?"

"ओह भगवान, क्या तेरी दुनिया में ऐसा भी होता है," उस आदमी ने मेजर की बात अनसुनी करते हुए कहा, "आदमी की घोर निराशा में भी उसकी आकांक्षा पूरी हो जाती है।"

"यह दुनिया संयोगों की दुनिया है। और मेरा विश्वास है कि हम लोग बेबस हैं। किसीने हमारी जिन्दगी का एक-एक पल निश्चित कर रखा है। वह पल कहां बीतेगा, कैसे बीतेगा और उस

पल में किससे भेंट होगी—ये सब बातें हमें मालूम नहीं होतीं, लेकिन किसीने यह निश्चित कर रखा होता है कि हम उस पल में कहां होंगे, क्या कर रहे होंगे और किससे मिल रहे होंगे। मुझे पागल कुत्ते ने नहीं काटा था कि मैं आपका पीछा करता। और आपके फ्लैट में चला आता। बस, यों समझ लीजिए कि मैं किसीका भेजा हुआ आपके पास पहुंचा हूं।"

मेजर ने जीवन का एक कठोर यथार्थ प्रकट किया था। वह आदमी मेजर के इस विचार से बहुत प्रभावित हुआ।

"मेरे मित्र ने मूर्खता की। उसे चाहिए था कि वह अगर मेरठ से आज यहां पहुंचा था तो सबसे पहले मुझसे आकर मिलता। लेकिन वह तो सीधा मौत के मुंह में चला गया···।"

तभी टेलीफोन की घंटी बज उठी और लम्बा आदमी फोन रिसीव करने दूसरे कमरे में चला गया। पांच मिनट बाद जब वह लौटा तो बहुत ही भयभीत और सहमा हुआ था।

"मेरी बात सच निकली। मेरा मित्र सीधा मौत के मुंह में चला गया। वह कालबादेवी में प्लास्टिक और कपड़े की गुड़ियों की एक दूकान में मुर्दा पड़ा है।"

"क्या पुलिस ने फोन किया है ?"

"नहीं, एक ऐसे आदमी ने जिसे मैं नहीं जानता। और जो अपने-आपको मेरा शुभचिन्तक बता रहा था। उसीने बताया कि मेरा मित्र रामपाल तलवाड़ कालबादेवी के गुड़ियाघर में मुर्दा पड़ा है।"

"उसने और कुछ नहीं बताया ?" मेजर ने पूछा।

"और तो कुछ नहीं बताया। मुझे यह नेक सलाह दी है कि मैं कम से कम आज अपने फ्लैट से बाहर पांव न रखूं।"

"क्या आप अपने मित्र को पहचानने या पुलिस में सूचना देने नहीं जाएंगे ?"

"मुसीबत तो यही है कि पुलिस को सूचना नहीं दे सकता।"

"क्यों ?"

"देखिए, यह प्रश्न करने का समय नहीं है। आप जासूस हैं। मेरे स्थान पर आप जाइए और मेरे मित्र के हत्यारे या हत्यारों का पता लगाइए। मैं आपको आपके परिश्रम का समुचित पारिश्रमिक दूंगा। मैं बहुत भयभीत हूं और आज मैं सचमुच अपने फ्लैट से बाहर नहीं निकलूंगा। आप मेरे मित्र की लाश देखकर आइए।

अगर आप उचित समझ तो स्वयं ही पुलिस को सूचना दे दीजिए। आप जब गुड़ियाघर से वापस आएंगे तो फिर मैं आपको विस्तार से सब कुछ बताऊंगा। यह भी बताऊंगा कि मैं कौन हूं। मेरा मित्र रामपाल तलवाड़ कौन था। वह मेरठ से क्यों आया था और मुझे उसके मारे जाने की आशंका क्यों थी," यह कहकर लम्बा आदमी उठा। उसने मेज़ की दराज़ से चैकबुक निकाली और ढाई हज़ार रुपये का चैक काटकर मेजर को देते हुए कहा, "इस समय तो मैं आपको केवल इतना पारिश्रमिक दे रहा हूं। शेष मामला बाद में तै कर लेंगे। मुझे आशा है कि आप घंटे-भर में लौट आएंगे।"

मेजर ने चैक जेब में रख लिया।

"मेरी समझ में नहीं आता कि मेरा मित्र गुड़ियाघर कैसे पहुंच गया। उसे तो किंग सर्किल जाना था।"

"किंग सर्किल में आपके मित्र को किसके यहां जाना था?"

"जब आप लौटेंगे, मैं सारी बातें आपको बता दूंगा।"

"मुझे अपमा नाम तो बता दीजिए।"

"मैंने अपना नाम चैक पर लिख दिया है।"

मेजर बलवन्त हैरान था कि यह कैसा आदमी है कि हर बात को सीमा से अधिक रहस्यमय बनाता जा रहा है।

"आप जल्दी कीजिए। इस बात का पता लगाइए कि मेरे मित्र की हत्या किस हथियार से की गई है। उसका सूटकेस है या नहीं। मैं आपके लौटने की बेचैनी से प्रतीक्षा करूंगा।"

मेजर ने दरवाज़े से बाहर जाते हुए मुड़कर देखा। वह आदमी पलंग पर औंधा लेट गया था। उसका मुंह तकिये पर था। उसके कंधे हिल रहे थे। मेजर समझ गया कि वह रो रहा है। शायद खुलकर रोने के लिए उसने मेजर को जल्दी से बाहर भेज दिया था। मेजर ने उस कमरे को ध्यान से देखा। कमरे में बहुत थोड़ा सामान था।

सीढ़ियां उतरकर मेजर बिल्डिंग से नीचे गली में आया तो वह सोच रहा था कि मनुष्य का भाग्य कैसे-कैसे विचित्र खेल दिखाता है। उसे स्वप्न में भी आशा न थी कि आज जब वह सोनिया को देखकर अस्पताल से लौटेगा तो एक रहस्यपूर्ण आदमी मिलेगा और वह एक नये केस में उलझ जाएगा।

कालबादेवी रोड पर मेजर बलवन्त को गुड़ियाघर को खोजने

में केवल पांच मिनट लगे। दूकान के सामने रत्ती-भर भी भीड़ न थी। मेजर को आश्चर्य हुआ कि गुड़ियाघर में हत्या की वारदात हुई है तो लोगों की भीड़ वहां होनी चाहिए थी। लेकिन भीड़ तो दूर, दूकान तक में कोई ग्राहक होने की संभावना दिखाई न दे रही थी। वह आगे बढ़ा तो उसे गुड़ियाघर के दरवाज़े पर एक प्लेट लटकी दिखाई दी, जिसपर लिखा था : गुड़ियाघर ठीक साढ़े पांच बजे खुलता है और ठीक ९ बजे बन्द हो जाता है। मेजर ने अपनी कलाई पर बंधी हुई घड़ी की ओर देखा। अभी पांच बजने में दस मिनट रह गए थे। मेजर और आगे बढ़ा। उसने देखा गुड़ियाघर का दरवाज़ा बंद नहीं था, भिड़ा हुआ था। मेजर ने दरवाज़े पर हाथ रखा तो वह खुल गया। मेजर को आश्चर्य हुआ कि अन्दर से किसीने आवाज़ नहीं दी।

मेजर ने दरवाज़े के अन्दर जैसे ही पांव रखा ठिठककर रुक गया। उसके सामने एक औरत फर्श पर गिरी पड़ी थी। उस औरत की छाती अड़सठ इंच से कम नहीं थी। कमर ८८ इंच थी। कूल्हे ६६ इंच थे। मेजर की नज़रों ने उसका बदन नाप लिया। उस स्त्री का कद साढ़े ग्यारह फुट था। उसके कूल्हों पर प्याज़ी रंग का अंडरवीयर था। उसके सीने पर हल्के गुलाबी रंग की ब्रेसरी थी। उसके कानों में पत्थर के सुन्दर झुमके थे। होंठों पर खुले रंग की लिपस्टिक थी। वह एक प्लास्टिक की गुड़िया थी। सामान्य स्त्री से दो गुनी। ऐसा मालूम होता था कि वह गुड़िया किसी स्त्री को सामने बैठाकर उसके दोगुने साइज की बनाई गई थी।

गुड़िया को भली भांति देखने के बाद मेजर की नज़रें गुड़िया से हटकर उसकी पिछली ओर गईं जहां एक आदमी निश्चेष्ट पड़ा था। मेजर ने आगे कदम बढ़ाया। वह हैरान हुआ कि क्या गुड़ियाघर में कोई और व्यक्ति नहीं है। गुड़िया के पीछे जिस व्यक्ति की लाश पड़ी थी क्या वह इस दूकान का मालिक था? बेचारा दूकान खोलने के लिए आया होगा और किसीने उसे मार डाला होगा। लेकिन यह कैसे हो सकता था। उस आदमी ने मेजर को यहां भेजा था कि उसका मित्र रामपाल तलवाड़ गुड़ियाघर में मुर्दा पड़ा हैं!

गुड़िया को फलांगकर मेजर दूसरी ओर चला गया। मृत व्यक्ति को देखकर मेजर के होश उड़ गए। किसीने उसकी हत्या

बड़ी क्रूरता से की थी। उसके सीने में गोली का निशान था। गर्दन में एक चाकू आरपार था। रस्सी का एक फंदा भी गर्दन में पड़ा हुआ था।

मेजर ने कमरे में नज़र दौड़ाई। चारों ओर छोटी-बड़ी गुड़ियां पड़ी थीं। नंगी और कपड़ों से सजी-धजी गुड़ियां। फिर गुड़ियों पर से नज़र हटाकर मृतक को दोबारा देखने लगा। उसका कद पांच फुट दस इंच के लगभग था। रंग गेहुंआ था। नाक-नक्श आकर्षक थे। उम्र अड़तालीस वर्ष के लगभग थी। बदन पर चाकलेट रंग का सूट था। पैरों में नये फैशन के सफेद और ब्राउन जूते थे। दायें हाथ की उंगली में मूंगे की अंगूठी थी। कलाई पर कीमती घड़ी थी।

ठीक उसी समय मेजर ने एक ऐसी आवाज़ सुनी जैसे कोई औरत कराह रही हो। फिर उसे एक दर्दभरी सिसकी सुनाई दी। मेजर उस ओर बढ़ा जिस ओर से सिसकी सुनाई दी थी। पार्टीशन के पीछे अधेड़ उम्र की एक औरत जिसने आधुनिक फैशन का लिबास पहन रखा था, एक कुर्सी पर बैठी थी और सिर मेज़ पर टिका हुआ था। वह सिसकियां भर रही थी।

मेजर के कदमों की आहट पाकर उसने मेज़ पर से सिर उठाया। वह एक सुन्दर स्त्री थी। लेकिन किसी अज्ञात दुःख ने उसके चेहरे की सारी कान्ति छीन ली थी।

"आप कौन हैं ?" उस स्त्री ने पूछा।

"मैं यह जानना चाहता हूं कि आप कौन हैं ? और इस पार्टीशन की लकड़ी की दीवार के पीछे गुड़ियों के कमरे में जो आदमी मुर्दा पड़ा है, क्या उसे आपने कत्ल किया है ?" मेजर ने कहा।

"मैं यह पूछती हूं कि आप मुझसे यह पूछने वाले कौन हैं ? मैं इस गुड़ियाघर की मालकिन हूं। मैं तबाह और बर्बाद हो चुकी हूं। मेरे कारोबार को चमके हुए अभी अधिक दिन नहीं हुए थे कि मुझे तबाही ने आ घेरा।"

"क्यों, क्या मृतक आपका पति है ?"

"आप ऐसी बातें करने वाले होते कौन हैं ?" औरत ने अपना प्रश्न फिर दोहराया, "मैं तो इसे जानती भी नहीं हूं। यह आदमी ही तो मेरी तबाही का कारण बनकर यहां आ पहुंचा है," यह कहकर उस औरत ने अपनी कलाई पर बंधी हुई घड़ी की

ओर देखकर कहा, "अभी पांच बजने में तीन मिनट बाकी हैं। आप अन्दर कैसे चले आए ?"

"मुझे फोन पर यह बताया गया था कि यहां एक आदमी जिसका नाम रामपाल तलवाड़ है, मुर्दा पड़ा है।"

"आप क्या कह रहे हैं ? इस आदमी का नाम रामपाल तलवाड़ है ? आपको कैसे पता चला ? क्या आप इसके रिश्तेदार हैं ? मैंने तो आपको फोन नहीं किया। मैंने तो पुलिस को फोन किया है। वह आती ही होगी। आपको किसने फोन किया ?"

"एक अजनबी ने," मेजर ने बात बनाई। वह हैरान था कि सारा मामला बहुत ही पेचीदा था।"

"उसे कैसे पता चला कि यहां किसी आदमी की लाश पड़ी हुई है और उसका नाम रामपाल तलवाड़ है ?—आप कौन हैं ?"

"यह मैं पुलिस के आने पर बताऊंगा," मेजर ने कहा।

वह स्त्री मेजर की इस बात पर बहुत हैरान हुई।

"अगर आप मृतक को जानती नहीं हैं तो यह आपके गुड़िया-घर में कैसे पहुंच गया ? यहां उसकी हत्या किसने की ?" मेजर ने पूछा।

"इन प्रश्नों का मेरे पास एक ही उत्तर है कि मैं बर्बाद हो चुकी हूं।"

"आप बर्बाद कैसे हो गईं ?"

"इस गुड़ियाघर में हत्या की वारदात हुई, अब यहां कौन आएगा ?"

"क्या आपका यह विचार है कि आपका कोई ऐसा दुश्मन है जो आपको हानि पहुंचाना चाहता है ?"

"इसका अर्थ तो यही है कि मेरा कोई दुश्मन है जो मुझे सुखी देखना नहीं चाहता !"

"आपका ऐसा दुश्मन कौन है ?"

"मैं नहीं जानती।"

"क्या इस आदमी की हत्या आपके होते हुए की गई ?"

"नहीं, मैं अपनी दूकान खोलने साढ़े चार बजे यहां पहुंच जाती हूं। आज मुझे पांच मिनट की देर हो गई। मैं चार बजकर पैंतीस मिनट पर यहां पहुंची। गुड़ियाघर का दरवाज़ा बाहर से बन्द था। मैं ताला खोलकर अन्दर आई तो मैंने यह लाश देखी। तभी से मैं मुर्दा-सी हो गई हूं। आप तशरीफ रखिए," उस स्त्री

ने कहा ।

वास्तव में वह स्त्री मेजर की इस बात से प्रभावित हुई थी कि पुलिस के आने पर वह अपना पता बताएगा । उस स्त्री को ऐसा लगा कि वह जिस व्यक्ति से बातचीत कर रही है वह कोई प्रभावशाली व्यक्ति है ।

"गुड़ियाघर का दरवाज़ा बन्द था तो यह आदमी इस दशा में अन्दर कैसे पहुंच गया ?"

"बात यह है कि जिस जगह गुड़िया तैयार होती हैं वहां मैंने फोन किया था कि बड़ी गुड़िया आज दोपहर को पहुंचा दी जाए । मेरा मतलब था कि गुड़िया को पैक करके मेरी दूकान के बाहर रखवा दिया जाए । लेकिन कोई गुड़िया का केस अन्दर रख गया और उसके साथ ही यह लाश भी रख गया । मैं जब चार बजकर पैंतीस मिनट पर यहां आई तो पड़ोसी दूकानदार ने मुझे बताया कि दो राजस्थानी औरतें एक ठेले पर गुड़िया रखकर लाई थीं और अन्दर रखकर चली गई थीं । क्योंकि अक्सर मेरा माल आता रहता है और राजस्थानी औरतें माल लेकर आती हैं, इसलिए दूकानदारों को संदेह नहीं हुआ ।"

"आपकी गुड़िया कौन तैयार करता है ?"

"राजस्थानी औरतें ।"

'आपका माल कहां तैयार होता है ?"

"चेम्बूर में ।"

"क्या राजस्थानी औरतें विशेष रूप से आपके गुड़ियाघर के लिए ही गुड़िया बनाती हैं ?"

"नहीं, दूसरी दूकानों के लिए भी बनाती हैं । लेकिन मैं अपने विशेष नमूने देकर गुड़िया बनवाती हूं ।"

"रामपाल तलवाड़ के बराबर जो गुड़िया पड़ी है, क्या उसका नमूना आपने तैयार किया था ?"

"जी हां, एक रईस औरत अपने से दोगुने साइज़ की गुड़िया तैयार करने का आर्डर दे गई थी ।"

"क्या यह गुड़िया उस रईस औरत की शक्ल से मिलती-जुलती बनाई गई है ?"

"जी हां ।"

"वह रईस औरत कौन है ?"

"मेरे पास उसका पता है ।" यह कहकर उस औरत ने मेज़ की

दराज में से एक रजिस्टर निकाला। उसके पन्ने पलटने के बाद उसने रजिस्टर पर नज़रें लगाए हुए कहा, "मिसेज़ दिनशा शीरीं, ३७१, चर्नी रोड।"

मेजर ने वह पता नोट कर लिया।

"उन राजस्थानी औरतों का पता भी लिखवा दीजिए जो कि गुड़ियां बनाती हैं।"

"सुम्मन बाई—एक प्रसिद्ध राजस्थानी औरत है। उसे गुड़िया वाली बाई भी कहते हैं। चेम्बूर में मछेरों की झोंपड़ियों के पास एक कच्चे मकान में रहती है। कई औरतें उसके यहां काम करती हैं।"

मेजर ने डायरी में सुम्मन बाई गुड़िया वाली का नाम भी लिख लिया। ठीक उसी समय बाहर बरामदे में भारी कदमों की आहट सुनाई दी।

"शायद पुलिस आ गई," उस औरत ने उठते हुए कहा।

"क्या मैं आपका नाम जान सकता हूं?"

"मिसेज़ सरोज कपिल।"

मेजर ने उसका नाम भी नोट कर लिया।

गुड़ियाघर का दरवाज़ा खुला और एक सजीला और रौबीला पुलिस इंस्पेक्टर अंदर आया। पुलिस इंस्पेक्टर की बारीक मूंछें उसके चेहरे पर बहुत सज रही थीं। ऐसा मालूम होता था कि वह किसी भूतपूर्व राजघराने का सदस्य है। उसकी चालढाल में राजाओं जैसा ओज और दर्प था। उसके पीछे उसके सहकारी थे।

पुलिस इंस्पेक्टर एक निराली शान से आगे बढ़कर मेजर के पास आकर बोला, "क्या आप ही इस गुड़ियाघर के मालिक हैं?" और फिर उसने मिसेज़ सरोज कपिल की ओर इशारा करते हुए पूछा, "क्या यह आपकी सेल्स मैनेजर हैं? हमें किसी औरत ने ही फोन किया था।"

"मालिक मैं नहीं, यह हैं," मेजर ने मिसेज़ सरोज कपिल की ओर इशारा किया।

"क्या आपने ही फोन किया था?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

सरोज कपिल ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

"आप कौन हैं?" इंस्पेक्टर ने मेजर से पूछा।

"मेजर बलवन्त।" मेजर ने उत्तर दिया।

"मेजर बलवन्त...! मेजर बलवन्त!..." इंस्पेक्टर ने

यह नाम दोहराते हुए कहा, "जब मैं यहां ट्रांसफर होकर आया हूं, मैंने यह नाम अक्सर सुना है। आप सुप्रसिद्ध जासूस मेजर बलवन्त तो नहीं हैं ?"

"जी हां, वही हूं···और आप ?" मेजर ने पूछा।

"मुझे शमशेर जंग बहादुर राना कहते हैं। मैं दरभंगा के राजपरिवार में से हूं," इंस्पेक्टर ने बड़े गर्व से कहा, "आप यहां कैसे पहुंच गए मेजर साहब ?"

"किसीने मुझे फोन किया था कि इस गुड़ियाघर में रामपाल तलवाड़ नामक व्यक्ति की लाश पड़ी हुई है।"

"कौन आदमी था वह ?"

"उसने अपना नाम नहीं बताया," मेजर बोला। वह इंस्पेक्टर को अभी यह नहीं बताना चाहता था कि उसे किसने भेजा है।

इंस्पेक्टर मिसेज़ सरोज कपिल से सारी कहानी पूछने में व्यस्त हो गया। उसने अपने सहकारियों को उनके काम में लगा दिया। सरोज कपिल ने इंस्पेक्टर को भी वही कहानी सुनाई जो उसने मेजर बलवन्त को सुनाई थी।

कहानी सुनने के बाद इंस्पेक्टर लाश का मुआयना करने लगा। मेजर बलवन्त उस समय प्लास्टिक की उस दैत्याकार गुड़िया को बड़े ध्यान से देख रहा था।

## २. दो राजस्थानी स्त्रियां

इंस्पेक्टर राना ने लाश के पास से उठते हुए कहा, "इस आदमी की मृत्यु को कम से कम तीन घंटे बीत चुके हैं। क्यों डाक्टर साहब, आपका क्या विचार है?" इंस्पेक्टर ने पुलिस डाक्टर से पूछा।

"तीन घंटे से अधिक हो गया," डाक्टर ने उत्तर दिया।

मेजर बलवन्त प्लास्टिक की गुड़िया पर झुका हुआ था। उसने जेब में से चाकू निकाला और गुड़िया के लम्बे जोड़ में फंसाकर ज़ोर लगाने लगा। दो मिनट बाद गुड़िया का जोड़ खुल गया। उसके दो बराबर हिस्से हो गए। उन हिस्सों में काफी खून जमा हुआ था।

इंस्पेक्टर राना मेजर की हरकत को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसने गुड़िया के दोनों हिस्सों में खून जमा हुआ देखा तो

बोला, "इसका क्या मतलब हो सकता है ?"

"मतलब साफ है। रामपाल तलवाड़ की लाश गुड़िया के अंदर बंद करके यहां लाई गई। हमें उन राजस्थानी औरतों से मिलना चाहिए जो गुड़िया को ठेले में रखकर यहां लाई थीं," मेजर ने कहा।

"क्या आप चेम्बूर चलने के लिए तैयार हैं ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"मेरा विचार है कि हमें इसी समय चलना चाहिए।"

जब मेजर बलवन्त और इंस्पेक्टर राना चेम्बूर में पहुंचे, रात के साढ़े सात बजे थे। वे सुम्मनबाई गुड़िया वाली से मिले। सुम्मन बाई बड़ी शिष्ट और भद्र स्त्री थी। क्योंकि वह एक कुशल कलाकार थी, इसलिए हत्या की वारदात को सहन नहीं कर सकती थी। जब उसने यह सुना कि उसकी बनाई हुई गुड़िया में कोई लाश बंद करके कालबादेवी के गुड़ियाघर में ले जाई गई है तो उसका रंग पीला पड़ गया। हत्या की इस घटना से उसकी प्रसिद्धि को धक्का लग सकता था और उसका कारोबार नष्ट हो सकता था। उसने तुरंत अपने यहां काम करने वाली स्त्रियों को इकट्ठा किया। वे कुल चौदह स्त्रियां थीं। सभी राजस्थानी थीं। उनकी आयु अलग-अलग थीं।

सुम्मनबाई ने उनसे पूछा, "आज तुममें से कौन चमकी गुड़िया को कालबादेवी पहुंचाने गई थी ?"

किसी भी औरत ने उसकी बात का उत्तर न दिया। सुम्मन बाई को गुस्सा आ गया। उसने कहा, "मैंने आज सुबह तुमसे यह नहीं कहा था कि 'चमकी' गुड़िया आज दोपहर को कालबादेवी जाएगी क्योंकि सरोज बीबी ने यह हुक्म दिया था ? बोलो, तुममें से चित्रकार ओंकार यादव के पास कौन-कौन गई थीं ?"

सुम्मन बाई ने अपनी कारीगर स्त्रियों का उत्तर पाने से पहले इंस्पेक्टर राना और मेजर बलवन्त को बताया, "जब गुड़िया बनकर तैयार हो जाती है तो रंग करने और नाक-नक्श बनाने के लिए चित्रकार यादव के पास भेज दी जाती है। फिर यादव के स्टूडियो से उस दूकान को भेज दी जाती है जिसने उस गुड़िया का आर्डर दिया होता है," यह कहकर सुम्मन बाई ने फिर अपनी कारीगर स्त्रियों से पूछा, "बोलो, तुममें से कौन-कौन चित्रकार

यादव के यहां गई थीं ?"

दो राजस्थानी स्त्रियां एकसाथ बोल उठीं, "हम गई थीं। लेकिन हमने गुड़िया कालबादेवी नहीं पहुंचाई।"

"तो फिर तुम चित्रकार यादव के यहां क्या करने गई थीं ?"

"गुड़िया लाने ही गई थीं।"

"तो फिर तुम यह कैसे कह रही हो कि तुम गुड़िया लेकर कालबादेवी नहीं गई थीं ?"

दोनों स्त्रियां कुछ लजा-सी गईं और उत्तर देते हुए कुछ झिझकने लगीं।

मेजर बलवन्त बड़े ध्यान से सारी बातें सुन रहा था। वह राजस्थानी स्त्रियों के उत्तर पर बहुत हैरान था, लेकिन थोड़ी देर बाद वह मामले को समझ गया।

उसने उन दोनों राजस्थानी स्त्रियों से कहा, "तुम दोनों चित्रकार यादव के यहां गई थीं। चित्रकार यादव अपने स्टूडियो में नहीं था, उसकी बजाय कोई और था।"

"जी हां," राजस्थानी औरतों ने कहा।

"चित्रकार यादव के स्थान पर जो आदमी वहां था, उसने तुमसे कहा कि तुम्हें यादव की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। उसने तुम्हें स्टूडियो में बैठा लिया। तुम्हें चाय पिलाई, बिस्कुट और मिठाई खिलाई।"

दोनों स्त्रियों ने 'हां' में सिर हिला दिया। इंस्पेक्टर राना मेजर की इन बातों से बड़ा प्रभावित हुआ। उसे अब विश्वास हुआ कि वह सचमुच एक महान जासूस के साथ है। मेजर पहले भी एक चमत्कार दिखा चुका था। उसने चाकू से चमकी गुड़िया को बीच से खोलकर यह सिद्ध कर दिया था कि रामपाल तलवाड़ की लाश उस गुड़िया के अंदर छिपाकर लाई गई। और अब वह राजस्थानी स्त्रियों से एक रहस्य खुलवा रहा था, जैसे वह राजस्थानी स्त्रियों के साथ यादव के स्टूडियो में गया हो। इंस्पेक्टर राना मेजर की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था।

"तुमने चाय पी। मिठाई खाई। और फिर तुम्हें कुछ पता न रहा कि तुम कहां हो," मेजर ने कहा।

उन दोनों स्त्रियों ने 'हां' में सिर हिला दिया।

"तुम्हें जब होश आया तो तुम्हारी क्या हालत थी ?"

दोनों स्त्रियां लजाकर चुप खड़ी हो गईं।

मेजर पहले थोड़ा झिझका और फिर बोला, "जब तुम्हें होश आया तो तुमने देखा कि तुम्हारे बदन पर एक भी कपड़ा नहीं था। कोई तुम्हारे कपड़े उतारकर ले गया था।"

उन दोनों ने हां में फिर सिर हिला दिया।

"तुम्हारे कपड़े लेकर वह आदमी स्टूडियो का दरवाज़ा बन्द करके चला गया था। और चमकी गुड़िया को अपने साथ ले गया था," मेंजर ने कहा, "तुम दोनों को तुम्हारे कपड़े वापस मिले या तुम कोई और चीज़ लपेटकर पहुंचीं? तुमने स्टूडियो का दरवाज़ा किस तरह खोला या किसीको आवाज देकर खुलवाया?"

उन स्त्रियों की झिझक अब दूर हो चुकी थी, क्योंकि मेजर ने सारा मामला साफ कर दिया था।

"न हमने दरवाज़ा खोला और न किसीसे खुलवाया। उस हालत में हम किसीको अपनी सहायता के लिए कैसे पुकार सकती थीं? अचानक किसीने दरवाज़ा खोला और हमारे कपड़े अन्दर फेंक दिए। कपड़े मिल जाने पर हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। हम अपना सारा दु:ख भूल गईं। हमने यह भी देखने की कोशिश न की कि हमारे कपड़े हमें कौन वापस दे गया था," एक राजस्थानी स्त्री ने कहा।

"इसका मतलब तो यह है कि तुम यह नहीं बता सकतीं कि जो आदमी तुम्हारे कपड़े वापस दे गया था वह स्त्री थी या पुरुष था?"

"नहीं," उसी राजस्थानी स्त्री ने उत्तर दिया।

"तुमने यह बात आकर मुझे क्यों नहीं बताई?" सुम्मन बाई ने नाराज़ होकर कहा।

"यह बात भी क्या बताने की थी?" दूसरी राजस्थानी स्त्री ने लजाकर कहा।

सुम्मन बाई चुप हो गई।

"अब यह बताओ कि जब तुम्हें कपड़े मिल गए और तुमने अपने कपड़े पहन लिए तो फिर क्या हुआ?"

"हम दोनों तैयार होकर यह सोच रही थीं कि अब क्या करें—स्टूडियो को खुला छोड़ जाएं या बन्द कर जाएं। तभी चित्रकार यादव आ गए। उन्होंने हमें पहचान लिया। लेकिन वह हैरान हुए कि उनका स्टूडियो क्यों खुला हुआ है। वह तो सुबह से स्टूडियो

में ही नहीं आए थे। वह एक नुमायश की सजावट के सिलसिले में कल्याण गए हुए थे। और कल्याण से सीधे स्टूडियो आए थे। हमने उन्हें बताया कि हम 'चमकी' गुड़िया लेने आई हैं और हमने यहां एक आदमी को बैठे देखा था। यह सुनकर चित्रकार यादव बहुत हैरान हुए और बोले कि मैंने अपने स्टूडियो की चाबियां किसीको नहीं दी थीं।

"इसका मतलब है कि किसी आदमी को मालूम था कि चित्रकार यादव आज अपने स्टूडियो में नहीं आएंगे और आज उनके स्टूडियो से 'चमकी' गुड़िया कालबादेवी जानी है। ऐसा आदमी कौन हो सकता था?" मेजर बोला।

"ऐसा आदमी वही हो सकता है जिसे मालूम था कि मिसेज़ सरोज कपिल ने 'चमकी' गुड़िया को आज मंगाया है। या वह आदमी हो सकता है जिसे यह मालूम था कि मिसेज़ दिनशा शीरीं आज अपने से मिलती-जुलती गुड़िया लेने के लिए गुड़ियाघर आएंगी," इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"बिल्कुल ठीक," मेजर बोला और उसने मन ही मन इंस्पेक्टर राना की सूझबूझ की प्रशंसा की।

मेजर ने राजस्थानी स्त्रियों से पूछा, "चित्रकार यादव ने चमकी गुड़िया को वहां न पाकर कुछ कहा था?"

"बात यों हुई सरकार कि जिस आदमी ने हमारे कपड़े वापस लाकर अन्दर फेंके थे उसने स्टूडियो में एक कागज़ भी फेंका था। चित्रकार यादव ने वह कागज़ उठा लिया था, जिसपर लिखा था कि मेरे आदमियों ने चमकी गुड़िया कालबादेवी पहुंचा दी है। वह कागज़ शायद बाईजी की ओर से था।" एक राजस्थानी स्त्री ने सुम्मन बाई की ओर इशारा किया।

"वह कागज़ मेरी ओर से था? मैंने तो कोई कागज़ चित्रकार यादव को नहीं लिखा," सुम्मन बाई बोली।

"मैं जानता हूं कि आपने ऐसी कोई चिट्ठी नहीं भेजी होगी," मेजर बोला, "यह चिट्ठी उन लोगों की ओर से थी जो इन दोनों औरतों को बेहोश करने और गुड़िया को चुराने के बाद वहां से चले गए थे। उन्होंने यह चिट्ठी चित्रकार यादव को इसलिए लिखी थी कि वह गुड़िया को न पाकर उसकी चोरी हो जाने पर दौड़-धूप शुरू न कर दें।"

इंस्पेक्टर राना को मेजर की हर बात एक चमत्कार दिखाई

दे रही थी।

"मेरा विचार है कि हमारा यहां का काम समाप्त हो चुका है। आइए, वापस चलें," मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर राना और मेजर अपनी-अपनी कार की ओर बढ़ गए। मेजर ने अपनी कार के पास पहुंचकर कहा, "इंस्पेक्टर साहब, आपको यह मालूम करना होगा कि रामपाल तलवाड़ कौन है। उसके सूटकेस में से कुछ चीज़ें बरामद होंगी। शायद वह उसकी मृत्यु पर से पर्दा उठा सकें। उसकी जेबों की तलाशी से भी कुछ चीज़ें बरामद हो सकती हैं। आप उन चीज़ों की लिस्ट मुझे बता दीजिएगा। यह मेरा कार्ड है। इसपर मेरा पता लिखा हुआ है," मेजर ने जेब से अपना कार्ड निकालकर इंस्पेक्टर राना को दे दिया। दोनों ने हाथ मिलाया। मेजर अपनी कार की ड्राईविंग सीट पर जा बैठा और इंस्पेक्टर राना अपनी जीप की ओर बढ़ गया।

मेजर बलवन्त अपने आफिस जाने से पहले सीधा फ्लोरा फाउंटेन पहुंचा। वह असामान्य लम्बे आदमी से मिलकर कुछ बातें उसे बताना और उससे कुछ बातें पूछना चाहता था।

कुछ मिनट के बाद मेजर लम्बे आदमी के फ्लैट के दरवाज़े पर पहुंच गया। दरवाज़े पर ताला पड़ा हुआ था। मेजर सोचने लगा कि इस आदमी ने तो उससे कहा था कि वह बाहर नहीं जाएगा, उसकी प्रतीक्षा करेगा। वह आदमी कहां चला गया!

इतने में उस बिल्डिंग की पहली मंज़िल पर रहने वाला एक आदमी मेजर के पास से गुज़रा। उसने मेजर को हैरान देखकर पूछा, "क्या आप उन साहब से मिलने आए हैं जो इस फ्लैट में आज सवेरे ही आए हैं?"

"जी हां।"

"वह तो शायद फ्लैट छोड़कर जा चुके हैं। आज ही आए और आज ही चले गए। अपना सारा सामान भी ले गए। शायद उन्हें यह फ्लैट पसंद नहीं आया।"

यह सुनकर मेजर अपनी आंखें झपकने लगा। पिछले पांच घंटे में बहुत ही तेज़ी से कई घटनाएं घट चुकी थीं।

"इस बिल्डिंग का मालिक कौन है?" मेजर ने उस आदमी से पूछा।

"मि० कापड़िया हैं। तीसरी मंज़िल के १६ नम्बर फ्लैट में

रहते हैं।"

मेजर तीसरी मंज़िल पर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा।

पांच मिनट के बाद मेजर मि० कापड़िया के फ्लैट में उसके ड्राइंगरूम में था और मि० कापड़िया उसे बता रहे थे, "मुझे वह आदमी यह बताकर नहीं गया कि वह फ्लैट छोड़कर जा रहा है। आज सवेरे ही तो उसने फ्लैट किराये पर लिया था और उसने तीन महीने का किराया एडवांस दिया था। यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी तीन महीने का किराया एडवांस देकर बारह घंटे बाद ही फ्लैट छोड़कर चला जाए। आप मेरे साथ आइए।"

मि० कापड़िया ने चाबियों का एक गुच्छा उठाया और दरवाज़े की ओर बढ़े। मेजर पहले ही फ्लैट से निकलकर बाहर खड़ा हो गया था।

लम्बे आदमी के फ्लैट का दरवाज़ा खोला गया। मेजर ने देखा, थोड़ी देर पहले फ्लैट में जो थोड़ा-सा सामान था अब नहीं था। जाने वाला कागज़ का एक टुकड़ा तक छोड़कर नहीं गया था।

"विचित्र बात है," मि० कापड़िया बोले, "मैंने आज तक ऐसा किरायेदार कभी नहीं देखा कि एक दिन रहे और तीन महीने का किराया दे।"

"वह आदमी आपके यहां कैसे पहुंचा था ?"

"उसने अखबार में विज्ञापन देखा था कि मेरी बिल्डिंग में तीन फ्लैट किराये के लिए खाली हैं," मि० कापड़िया ने कहा, "मैंने किराया बताया और तीन महीने का किराया एडवांस मांगा। उस आदमी ने एक मिनट भी नहीं सोचा और तीन महीने का किराया निकालकर मेरे सामने रख दिया।"

"उस आदमी ने अपना नाम क्या बताया था ?"

"सूरजनारायण जुत्शी।"

"वह काम क्या करता था ?" मेजर ने पूछा।

"उसने कहा था कि वह आधुनिक फैशन के कपड़े तैयार करने वाली किसी फर्म का आर्ट डायरेक्टर था।"

"उसने अपनी फर्म का नाम बताया था ?"

'मैंने पूछा नहीं।"

"धन्यवाद," मेजर बोला।

कापड़िया की बिल्डिंग से मेजर बाहर आया तो वह स्वयं सिर से पांव तक एक परेशानी-भरा प्रश्न बना हुआ था। वह तिलमिलाया हुआ साढ़े दस बजे रात को अपने आफिस पहुंचा। वहां कोई भी नहीं था। सोनिया उसके नाम एक चिट छोड़ गई थी जिसपर उसने लिखा था कि—डाक्टर ने मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी है। अब मैं ठीक हूं। और काफी इन्तजार करने के बाद जा रही हूं।

मेजर सोनिया की चिट पढ़ने के बाद सुधीर के कमरे की ओर गया। वह भी नहीं था।

मेजर रिवाल्विंग चेयर पर सिर पकड़कर बैठ गया। क्या उससे धोखा किया गया? क्या सूरजनारायण जुत्शी ही रामपाल तलवाड़ का हत्यारा था? क्या वह हत्या करने के बाद इतना परेशान और घबड़ाया हुआ था? क्या उसका डर वह डर था जो हत्यारे के दिल में हत्या करने के बाद पैदा होता है। क्या उसके हस्तक्षेप कर बैठने के कारण उसने अपने-आपको बचाने के लिए यह उपाय सोचा था कि मेजर को गुड़ियाघर में रामपाल तलवाड़ की लाश पड़ी होने के विषय में बताकर उसे वहां भेज दिया था, ताकि उसे फरार होने का मौका मिल जाए? क्या गुड़ियाघर में पाई जाने वाली लाश सचमुच रामपाल तलवाड़ की थी? क्या जुत्शी बम्बई का रहने वाला नहीं था? उसने आज ही तो कापड़िया बिल्डिंग में किराये पर फ्लैट लिया था। संभव है पहले बम्बई में ही किसी दूसरे स्थान पर रहता हो और रामपाल तलवाड़ की हत्या करने के लिए उसने कापड़िया बिल्डिंग में अपनी योजना के अनुसार फ्लैट किराये पर लिया हो।

अचानक उसने सोचा कि उसे सूरजनारायण के नाम की पड़ताल करनी चाहिए। उसने जेब में से जुत्शी का दिया हुआ चैक निकाला। वह ढाई हज़ार रुपये का बेयरर चैक था। उसने चैक पर एस०एन० जुत्शी के नाम से ही दस्तखत किए थे। मेजर सोचने लगा कि यह चैक झूठा है या सच्चा है? क्या सूरजनारायण जुत्शी सही नाम है? या उसने रामपाल तलवाड़ को ठिकाने लगाने के लिए यह नाम अपनाया था? अगर बैंक में इस नाम से एकाउंट है तो उसने यह नाम बहुत पहले रखा होगा।

मेजर ने चैक पर बैंक का नाम पढ़ा। यह चैक बैंक आफ इंडिया की विक्टोरिया गार्डंज ब्रांच का था।

मेजर ने निश्चय किया कि वह कल सुबह सबसे पहले बैंक जाएगा।

दूसरे दिन सुबह सबसे पहले सोनिया आफिस में पहुंची। मेजर अभी नाश्ता करने बैठा था। थोड़ी देर पहले उसने सुधीर के कमरे में झांककर देखा था, सुधीर सोया पड़ा था। शायद रात को बहुत देर से आया था। सोनिया ने आफिस में आते हुए मेजर को गहरे सोच में डूबे हुए पाया तो बोली, "आज आपके माथे पर गहरी सलवटें क्यों पड़ी हुई हैं?"

"सोनिया, एक विचित्र घटना हुई है," मेजर ने कहा। और उसने पिछली शाम के पांच बजे से लेकर रात के साढ़े दस बजे तक का सारा किस्सा सुना दिया। किस्सा सुनते-सुनते सोनिया बार-बार चौंक पड़ती थी। मेजर ने अपना किस्सा खतम किया तो सोनिया बोली, "मानव जीवन कितना विचित्र है। कोई कुछ नहीं कह सकता कि आने वाली घड़ी उसके लिए क्या लाएगी।"

"सोनिया, तुम दर्शन बाद में बघारना, पहले यह बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं इस केस में बेकार ही उल्टे ढंग से फंस गया हूं।"

"केस बहुत ही पेचीदा है। इतनी गांठें पड़ी हुई हैं कि दांतों से भी खुलनी कठिन हैं," सोनिया बोली, "बहुत-से प्रश्न उठते हैं।"

"कैसे प्रश्न?" मेजर ने पूछा।

"एक प्रश्न तो यह है कि क्या जुत्शी को सचमुच किसीने फोन किया था कि रामपाल तलवाड़ की लाश कालबादेवी के गुड़िया-घर में पड़ी है? या वह स्वयं ही रामपाल तलवाड़ की लाश वहां रखकर आ रहा था? दूसरा प्रश्न यह उठता है कि उसे लाश छिपाकर गुड़ियाघर में ले जाने की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई? मेरा मतलब है कि क्या जुत्शी या हत्यारा मिसेज़ सरोज कपिल को हत्या के इस केस में उलझाना चाहता था? तीसरा प्रश्न यह है कि हत्यारे को यह कैसे मालूम हुआ कि सरोज कपिल के गुड़िया-घर में आज चमकी गुड़िया लाई जाने वाली है? उसे कैसे मालूम हुआ कि आज चित्रकार यादव अपने स्टूडियो में नहीं होगा? चौथा प्रश्न यह है कि क्या हत्यारे ने रामपाल तलवाड़ की हत्या यादव के स्टूडियो में करने के बाद उसकी लाश गुड़िया में बंद की या वह गुड़िया को किसी दूसरी जगह ले गया और फिर वहां

रामपाल तलवाड़ की हत्या करके उसकी लाश गुड़िया में बंद की ? उसे कैसे पता चला कि राजस्थानी स्त्रियां गुड़िया लेने के लिए यादव के स्टूडियो में आएंगी ? पांचवां प्रश्न यह है कि क्या हत्यारे के सम्बन्ध किसी ऐसे गिरोह से हैं जिसमें स्त्रियां भी हैं ? क्योंकि दो राजस्थानी स्त्रियां ही चमकी गुड़िया को कालबादेवी के गुड़ियाघर में छोड़कर आई थीं। अन्तिम छठा प्रश्न यह है कि क्या हत्या जुत्शी ने की ? या उसके मित्र रामपाल तलवाड़ के किसी दुश्मन ने की ? क्या दुश्मन ने ही पहले उसे घर पर रहने की हिदायत की और फिर उसे वहां से सामान सहित ले गया ?"

"सोनिया, तुम्हारे ये प्रश्न तुम्हारी बुद्धिमत्ता के परिचायक हैं। मुझे स्वयं यह भ्रम हो रहा है कि हत्यारा जुत्शी नहीं था। खैर, मामला बहुत टेढ़ा है। मुझसे एक चूक हो गई। कापड़िया बिल्डिंग में जिस आदमी ने मुझे जुत्शी के फ्लैट छोड़कर जाने के विषय में बताया था मैंने उससे यह नहीं पूछा कि जब वह सामान लेकर फ्लैट से गया तो वह अकेला था या उसके साथ कोई दूसरा व्यक्ति भी था।"

"यह बात तो उससे अब भी पूछी जा सकती है ? एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है।"

"वह क्या ?"

"आपने बताया कि रामपाल तलवाड़ के सीने में गोली का घाव था, चाकू का फल गर्दन के आरपार था और गले में रस्सी का फंदा भी पड़ा हुआ था। जब हत्यारे के पास पिस्तौल या रिवाल्वर था तो हत्यारे ने चाकू का प्रयोग क्यों किया, और जब चाकू का प्रयोग किया तो उसके गले में रस्सी का फंदा क्यों डाला ? हत्यारे ने इन तीनों उपायों को क्यों अपनाया ? क्या रामपाल पिस्तौल या रिवाल्वर की गोली से मर नहीं सका था ? क्या चाकू गर्दन के आरपार हो जाने पर हत्यारे को संदेह रहा कि वह अभी मरा नहीं है और उसने रस्सी का फंदा उसके गले में डाला ? इसी तरह हम उल्टे तरीके से सोच सकते हैं कि पहले हत्यारे ने उसके गले में रस्सी का फंदा डाला, फिर चाकू उसकी गर्दन में भौंका और फिर जब रामपाल तड़पने लगा तो उसे गोली मारकर उसका तड़पना बंद कर दिया।"

"शाबाश सोनिया, अब तुम्हारी नजर में गहराई पैदा होती जा रही है। मेरे विचार से तुम्हारी पिछली बात सही है। फिर

भी रस्सी का फंदा, चाकू और रिवाल्वर का प्रयोग बहुत ही उलझी हुई पहेलियां हैं। खैर, अब इस समय सोचना छोड़ो," मेजर ने कहा और दीवार पर लटके क्लाक की ओर देखा जिसमें पौने दस बज रहे थे। मेजर ने फिर कहा, "डोरा और मालती नहीं आईं। सुधीर भी अभी तक सोया पड़ा है। सोनिया, तुम डोरा और मालती के नाम एक चिट लिखकर यहां छोड़ दो कि वे हमारी प्रतीक्षा करें। और तुम मेरे साथ बैंक आफ इंडिया की विक्टोरिया गार्डज़ ब्रांच में चलो।"

सोनिया ने मेजर के कहने के अनुसार डोरा और मालती के नाम चिट लिखकर मेज़ पर रख दी और उसके ऊपर पेपरवेट रख दिया।

मेजर सोनिया के साथ कार में विक्टोरिया गार्डज़ की ओर चल पड़ा।

## ३. मिसेज़ दिनशा शीरीं

मेजर बलवन्त ने बैंक में पहुंचकर देखा, वहां बहुत भीड़ थी। उसने चैक कैश कराने वाले काउंटर पर जुत्शी का दिया हुआ चैक काउंटर क्लर्क को दे दिया। काउंटर क्लर्क ने चैक लेकर उसे टोकन दे दिया, जिसका नम्बर १२७ था। दस मिनट के बाद खज़ांची के कमरे से आवाज़ आई "टोकन नम्बर १२७" मेजर बहुत हैरान हुआ। उसने टोकन खज़ांची की ओर बढ़ा दिया और खज़ांची ने उसे ढाई हज़ार रुपये दे दिए। मेजर का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। जुत्शी का दिया हुआ चैक झूठा नहीं था। एक विकार उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध उठा। कहीं जुत्शी ने अपने अपराध पर पर्दा डालने के लिए ही तो यह चाल नहीं चली थी कि उसने सच्चा चैक देकर अपने-आपको निर्दोष सिद्ध करना चाहा हो।

मेजर सोनिया के साथ बैंक के मैनेजर के कमरे की ओर बढ़ा। उसने चपरासी द्वारा एक चिट अंदर भिजवाई। मैनेजर ने मेजर को तुरंत अंदर बुलवा लिया। मेजर ने संक्षेप में रामपाल तलवाड़ की हत्या और सूरजनारायण जुत्शी के विषय में मैनेजर को बताने के बाद कहा, "मैं यह जानना चाहता हूं कि मि० जुत्शी का कितना रुपया इस बैंक में जमा है और यह रुपया कब जमा किया

गया और पिछले दिनों इस एकाउंट में से कितने रुपये निकाले जा चुके हैं।"

मैनेजर ने तुरंत एक क्लर्क को बुलाया और उससे जुत्शी के एकाउंट सम्बन्धी कागज़ात लाने को कहा। क्लर्क एक रजिस्टर और एक फाइल ले आया।

"मि० सूरजनारायण जुत्शी ने कल सुबह आठ हज़ार नौ सौ बयासी रुपये जमा कराए थे। यह कल सुबह ग्यारह बजे की बात है। डेढ़ बजे वह तीन हज़ार दो सौ सत्तर रुपये निकलवाकर ले गए।" क्लर्क ने रजिस्टर देखकर बताया।

"क्या वह स्वयं आया था या उसने किसीको भेजा था?" मेजर ने पूछा।

"वह खुद ही आए थे।"

"अगर रुपया जमा करने के फौरन बाद ही इतनी बड़ी रकम निकलवानी थी तो ढाई घंटे ही पहले सारा रुपया क्यों जमा कराया? उसे उतना ही रुपया जमा कराना चाहिए था जितने की उसे ज़रूरत नहीं थी," मेजर ने कहा।

"मैं क्या कह सकता हूं हुज़ूर, वह कोई व्यापारी होगा। रुपया जमा कराने के बाद शायद उसने कोई सौदा कर लिया हो और उस सौदे के लिए उसे ढाई घंटे बाद ही बैंक से रुपये निकलवाने पड़ गए हों।"

"धन्यवाद···," मेजर ने उठते हुए कहा, "सूरजनारायण जुत्शी का पता और बता दीजिए।"

"मि० सूरजनारायण जुत्शी, कापड़िया बिल्डिंग, फ्लोरा फाउंटेन, पहली मंज़िल, फ्लैट नम्बर ३६," क्लर्क ने बताया।

"बहुत-बहुत धन्यवाद," मेजर ने कहा और सोनिया को साथ लिए बैंक से बाहर आ गया।

"मामला बहुत ही अद्भुत है," सोनिया ने कहा, "एक आदमी ने ग्यारह बजे बैंक में रुपया जमा कराया और ढाई घंटे के बाद उसमें से काफी रुपया निकाल लिया। उसे ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी थी। और मज़े की बात तो यह है कि उसने कल ही फ्लैट किराये पर लिया और उसके पते पर बैंक में रुपया जमा कराया गया और फिर शाम को छोड़ दिया। आखिर यह सब क्यों किया गया?"

"ये प्रश्न बहुत ही दिलचस्प हैं," मेजर ने कहा, "और सबसे

दिलचस्प बात यह है कि जुत्शी बैंक में तीन हज़ार दो सौ बारह रुपये छोड़कर न जाने कहां गुम हो गया है।"

"वह इतना रुपया बैंक में छोड़ गया और तीन महीने का किराया मुफ्त में ही मि० कापड़िया को दे गया," सोनिया बोली।

सोनिया के मुंह से कापड़िया का नाम सुनकर मेजर को याद आया कि उसे वहां जाकर उस आदमी से मिलना चाहिए जिसने कल सुबह जुत्शी को अपने फ्लैट में आते और शाम को वहां से जाते हुए देखा था। वह आदमी शायद छुट्टी पर था तभी उसने जुत्शी को सुबह-शाम दोनों समय देखा था। उसके वहां मिलने की पूरी संभावना थी।

लेकिन मेजर का यह अनुमान गलत सिद्ध हुआ। उस आदमी का हुलिया बताने के बाद बड़ी कठिनाई से उसके फ्लैट का पता चल सका। उस आदमी ने मेजर को बताया कि उसने जुत्शी को अकेले ही बिल्डिग से बाहर जाते हुए देखा था। यह सुनकर मेजर की उलझन और भी बढ़ गई।

कापड़िया बिल्डिग से बाहर आकर मेजर और सोनिया चित्रकार यादव के स्टूडियो में पहुंचे। चित्रकार यादव की भेंट से कोई लाभ न हुआ। रामपाल तलवाड़ की हत्या उसके स्टूडियो में नहीं की गई थी। यादव से बस इतनी बात मालूम हुई कि कल सवेरे तड़के ही उसे किसी व्यक्ति ने फोन किया था कि वह अपने नये बंगले को डेकोरेट कराने के सिलसिले में उससे मिलना चाहता है। यादव ने उस व्यक्ति को बताया कि वह कल्याण जा रहा है और शाम को अपने स्टूडियो में मिलेगा तो उस व्यक्ति ने अपना नाम-पता बताए बिना यह कहकर फोन डिस्कनेक्ट कर दिया कि वह शाम को स्टूडियो में ही आकर उससे मिलेगा।

चित्रकार यादव से मिलकर मेजर उसके स्टूडियो से बाहर निकला तो उसके होंठ गोल हो चुके थे और वह सीटी बजा रहा था।

कुछ देर बाद उसने सोनिया से कहा, "देखा सोनिया, किसी आदमी ने चित्रकार यादव को केवल इस बात की पुष्टि करने के लिए फोन किया कि वह कल्याण जा रहा है या नहीं।"

"मेरा दिमाग अभी तक चकरा रहा है कि हत्यारे ने लाश को छिपाने के लिए गुड़िया क्यों इस्तेमाल की ?"

"इस केस में यही प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है," मेजर ने

कहा, "चलो मिसेज़ दिनशा शीरीं से चलकर मिलें।—नहीं, पहले मिसेज़ सरोज कपिल के यहां चलते हैं।"

मेजर को मालूम था कि मिसेज़ सरोज कपिल कालबादेवी में अपने गुड़ियाघर में नहीं होगी। क्योंकि गुड़ियाघर को कुछ दिनों के लिए बंद रखना इसलिए आवश्यक हो गया कि मामला कुछ ठंडा हो जाए। इसलिए वह अपने घर पर ही होगी। मेजर ने आज सवेरे ही डायरेक्टरी में देखकर सरोज कपिल के घर और दूकान के टेलीफोन नम्बर और पूरे पते मालूम कर लिए थे। वह किंग सर्किल की तिलक लेन के मकान नम्बर २८४ में रहती थी। मेजर सुबह से ही एक बात सोच रहा था कि बहुत ही लम्बे आदमी सूरजनारायण जुत्शी ने कहा था कि उसके मित्र रामपाल तलवाड़ को किंग सर्किल जाने के बजाय सबसे पहले उससे आकर मिलना चाहिए था। जुत्शी की इस बात से सिद्ध होता था कि रामपाल तलवाड़ किंग सर्किल में किसी स्त्री से मिलना चाहता था और किंग सर्किल में ही सरोज कपिल का मकान था। तो क्या रामपाल तलवाड़ किंग सर्किल में सरोज कपिल से मिलना चाहता था?

आधे घंटे के बाद मेजर और सोनिया सरोज कपिल के ड्राइंगरूम में बैठे थे। सरोज कपिल के ड्राइंगरूम और मकान को देखने से मालूम होता था कि वहां कोई पुरुष नहीं रहता। सरोज कपिल के बदन पर बहुत ही मूल्यवान और शानदार कपड़े थे। और उन कपड़ों से उसकी धन-सम्पन्नता स्पष्ट प्रकट हो रही थी। सरोज कपिल को पिछले दिन ही मालूम हो गया था कि मेजर बलवन्त एक महान जासूस है। वह उसे अपने यहां आया देखकर कुछ प्रसन्न भी हुई थी और कुछ सहम भी गई थी।

मेजर ने कहा, "मिसेज़ सरोज, मैं एक प्रश्न का स्पष्ट उत्तर चाहता हूं। कल आपके गुड़ियाघर में जिस व्यक्ति की लाश मिली थी क्या आप उसे जानती थीं? आप इस समय यह भूल जाइए कि उस व्यक्ति का नाम रामपाल तलवाड़ था।"

सरोज कुछ देर तक सोचती रही और फिर बोली, "मेजर साहब, कल जब आप अचानक गुड़ियाघर में चले आए थे और आपने मृतक को देखकर यह कहा था कि वह मेरा पति तो नहीं था तो मैं बहुत गुस्से में आ गई थी। लेकिन यह जानकर कि आप हमारे देश के महान जासूस हैं और दुःखियों के बहुत बड़े सहायक

हैं, मैं आपसे झूठ नहीं बोल सकती। कल मेरे गुड़ियाघर में जिस आदमी की लाश आपने देखी थी वह लाश मेरे पति की ही थी। आज से छः वर्ष पूर्व वह मेरे पति थे। मैंने आपके मुंह से जब उनका नाम रामपाल तलवाड़ सुना तो मैं भौंचक्की रह गई थी, क्योंकि छः वष पहले तो उनका नाम रामपाल तलवाड़ था नहीं।"

"छः वर्ष पहले उनका नाम क्या था ?" मेजर ने पूछा।

"सोमदत्त कपूर," सरोज ने बताया, "संभव है मुझसे सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने के बाद उन्होंने अपना नाम बदल लिया हो और रामपाल तलवाड़ के नाम से किसी दूसरे स्थान में रहने लगे हों।"

"सोमदत्त कपूर उर्फ रामपाल तलवाड़ कल ही मेरठ से यहां आए थे। क्या छः साल पहले आप उनके साथ मेरठ में रहा करती थीं ?" मेजर ने पूछा।

"हम लोग आगरा में रहते थे। वहां उनकी एक फैक्टरी थी।"

"काहे की फैक्टरी थी ?"

"तिल्लेदार जूते बनाने की फैक्टरी," सरोज ने कहा, "चार साल हुए, मैंने सुना था कि उन्होंने वह फैक्टरी बन्द कर दी और आगरा छोड़कर चले गए हैं।"

"आप लोगों के सम्बन्ध-विच्छेद होने का कारण क्या था ?"

"मेरे पति बहुत ही धनवान व्यक्ति थे। साथ ही उन्हें अपनी मर्दानगी पर बड़ा घमंड था। वह कामोत्तेजक दवाएं खाते रहते थे। उन्हें गाने सुनने का बहुत ही शौक था। उन्हें मुझसे शिकायत थी कि मैं बहुत ही 'कोल्ड' हूं—मुझमें वह उत्साह और उमंग नहीं है जो एक स्वस्थ और युवा नारी में होनी चाहिए। मुझसे वह यह शिकायत असल में अपना एक स्वार्थ पूरा करने के लिए किया करते थे," सरोज ने निस्संकोच भाव से कहा।

"वह स्वार्थ क्या था ?"

"उनका कहना था कि मुझसे उनकी वासना की संतुष्टि नहीं होती, इसलिए वह इस बहाने से आए दिन एक नई औरत घर में ले आते थे—और फिर एक दिन एक विचित्र बात हुई।"

"वह क्या ?" मेजर ने पूछा।

"ईर्ष्या और डाह ने मेरे अन्दर एक ऐसी नारी को जन्म दे दिया जिसकी काम-पिपासा की कोई सीमा ही न थी। और इस प्रकार एक दौड़ आरंभ हो गई। उस दौड़ ने मुझे एक चेतावनी दी

कि मैं गलत रास्ते पर चल रही हूं। मुझे तुरन्त रुक जाना चाहिए। आगे नहीं बढ़ना चाहिए। मैंने अपने बढ़ते हुए कदमों को रोक लिया। लेकिन उनके कदम बढ़ते ही गए। मैंने कुछ दिनों तक सहन किया, लेकिन विवश होकर मुझे यही निश्चय करना पड़ा कि मुझे इस घर को छोड़ देना चाहिए। वरना मुझमें और एक वेश्या में कोई अन्तर नहीं रहेगा। समाज मुझे ही चरित्रहीन कहेगा। और मैं समाज के हाथों अपने माथे पर कलंक का यह टीका लगवाना नहीं चाहती थी।"

'आपने जब अपने पति को छोड़ा तो क्या कोई दूसरा पुरुष आपके साथ था ?"

"जी नहीं।"

"इन छः वर्षों में क्या आपके पति ने आपसे सम्पर्क स्थापित करने की कोई कोशिश नहीं की ?"

"नहीं। उन्हें मालूम ही न था कि मैं कहा हूं," सरोज ने कहा, "लेकिन चार दिन हुए, मुझे उनका एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने लिखा था कि उन्हें मालूम हो गया है कि मैं कहां हूं और वह मुझसे मिलने के लिए आ रहे हैं। उनका यह पत्र पाने के बाद उनके विरुद्ध मेरे मन में घृणा या रोष पैदा नहीं हुआ। क्योंकि उन्होंने लिखा था कि उन्हें अपने कर्मों और अपने व्यवहार पर बहुत पश्चात्ताप है। उन्हें जीवन में मुझ जैसी स्त्री नहीं मिली। अब उनके पास पहले की अपेक्षा धन बहुत अधिक है और अब वह मुझसे मेल करना चाहते हैं।"

"उन्होंने यह पत्र कहां से लिखा था ?"

"मुज़फ्फरनगर से," सरोज ने बताया, "सच पूछिए तो मुझे उनका पत्र पाकर बहुत ही खुशी हुई थी।"

"खुशी क्यों हुई थी ?"

"एक तो इस बात पर कि अगर मेरे पति को अपने पिछले कर्मों पर पछतावा है और उन्होंने अपने-आपको बदल लिया है तो वह अब कभी भी मुझसे दूर नहीं होंगे। दूसरी इस बात पर कि अब उनके पास काफी धन है, जिसकी सहायता से मैं कला से सम्बन्धित अपने इस शौक को, जो अब मेरा व्यवसाय बन गया है, उन्नति के शिखर तक ले जा सकूंगी।"

"ओह···!"

"लेकिन मेरी इस खुशी की उम्र बहुत ही छोटी निकली।

मेरे पति जिस दशा में मेरे पास आए वह आपने देखी ही थी। उनकी गर्दन में रस्सी का फंदा था, चाकू का फल उनकी गर्दन के आरपार था और सीने में गोली का सूराख था।"

"इसका मतलब है कि वह आज सुबह किंग सर्किल में आपके पास नहीं आए ?"

"जी नहीं।"

"इसका मतलब तो यह है कि कोई रास्ते में से ही उन्हें अपने साथ ले गया। उन्हें मार डालने के लिए," मेजर बोला। और फिर गहरी नज़रों से सरोज को देखते हुए बोला, "क्या आप सूरजनारायण जुत्शी नाम के किसी व्यक्ति को जानती हैं ?"

"जी नहीं।"

"मैं फिर आपसे पूछना चाहता हूं कि जब आप और आपके पति में वासना-सम्बन्धी दौड़ लगी हुई थी तब कोई पुरुष आपके निकट तो नहीं आ गया था ? किसीने आपका यहां तक पीछा तो नहीं किया ?"

"नहीं, न मेरा किसी पुरुष से घनिष्ठ सम्बन्ध ही हुआ और न मेरा किसीने पीछा ही किया।"

"किसी ऐसे पुरुष की पत्नी या प्रेमिका आपकी दुश्मन तो नहीं बन गई जिसके साथ आपके घनिष्ठ सम्बन्ध हो गए थे ?"

"मैं कुछ कह नहीं सकती।"

"आपने पुलिस को यह तो नहीं बताया कि आपके गुड़ियाघर में जो लाश पाई गई है वह आपके पति की लाश थी ?"

"नहीं, मैं पुलिस को कैसे बता सकती हूं ! वरना पुलिस मेरे पीछे पंजे झाड़कर पड़ जाएगी," सरोज बोली, "मेजर साहब, मुझे इस मुसीबत से बचाइए। मैं आपके इस अहसान का बहुत अच्छा बदला चुकाऊंगी।"

मेजर ने मुस्कराकर कहा, "अब आप मेरे अन्तिम प्रश्न का उत्तर दीजिए। क्या आपके पति के कुछ रिश्तेदार भी हैं।"

"दो विधवा बहनें हैं। भाई कोई नहीं है। मां-बाप कभी के मर चुके हैं।"

"विधवा बहनों की उम्र क्या है ?"

"एक की उम्र चालीस साल है और दूसरी की अड़तीस साल।"

"कहां रहती हैं ?"

"मुज़फ्फ़रनगर में।"

"मेरे मन में एक नई बात आई है," मेजर ने कहा, "संभव है जब आपके पति की बहनों को यह पता चला हो कि आपके पति अपनी पिछली हरकतों पर शर्मिन्दा हैं और आपसे पुनः सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं तो उन्हें यह बात पसंद न आई हो। क्योंकि उन्हें यह आशा होगी कि आपके पति के बाद उनकी जो भी सम्पत्ति होगी वह उन दोनों को ही मिलेगी। लेकिन अगर आप दोनों के सम्बन्ध सुधर गए तो उन्हें वह सम्पत्ति नहीं मिल पाएगी और इसलिए उन्होंने अपने भाई की हत्या कर दी हो।"

"मैं कुछ कह नहीं सकती," सरोज ने कहा, "मेजर साहब, मेरी सहायता कीजिए। मुझे इस संकट से उबारिए।"

"आपने मुझे जो भी कुछ बताया है अगर वह सच है तो मैं आपकी अवश्य सहायता करूंगा," मेजर ने उठते हुए कहा।

मेजर सोनिया के साथ चर्नी रोड पर पहुंचा। वह मिसेज़ दिनशा शीरीं से मिलना चाहता था। मिसेज़ दिनशा शीरीं बहुत ही सुशिक्षित और सुसंस्कृत स्त्री थीं। वह मेजर और सोनिया को अपने जिस ड्राइंग रूम में ले गई वह अनेक मूर्तियों से सुसज्जित था।

मेजर ने पूछा, "मिसेज़ शीरीं, आपने मिसेज़ सरोज कपिल को अपने से दुगने साइज़ की गुड़िया बनाने का आर्डर क्यों दिया था?"

मिसेज़ दिनशा शीरीं हंस पड़ीं और बोलीं, "आप इस ड्राइंग-रूम में ये मूर्तियां देख रहे हैं न। ये सभी मूर्तियां मानवाकार हैं। ये सभी मूर्तियां मेरी सहेलियों की मूर्तियां हैं—जो मेरी सहेलियों को माडल बनाकर मूर्तिकारों ने बनाई हैं। मैं अपनी मूर्ति बनवाना नहीं चाहती। मैं नहीं चाहती कि किसी नारी को पत्थर में ढाला जाए, क्योंकि नारी किसी भी दशा में पत्थर नहीं होती। वह तो संसार के सुकुमारतम अंशों का एक सुन्दर और सुकुमार संग्रह है। मैंने सोचा कि मुझे अपनी मूर्ति प्लास्टिक की बनवानी चाहिए—गुड़िया जैसी मूर्ति। न जाने यह समझकर मुझे क्यों खुशी होती है कि मैं नारी नहीं, केवल एक गुड़िया हूं!"

मेजर ने मिसेज़ दिनशा शीरीं की ओर देखा, वह सचमुच ही एक गुड़िया थी—स्वस्थ और जवान गुड़िया।

"लेकिन मेरा प्रश्न फिर भी बना रहता है कि आपने अपने साइज़ से दुगुने साइज़ की गुड़िया क्यों बनवाई ?" मेजर ने कहा।

मिसेज़ दिनशा शीरीं ने एक ठहाका लगाकर कहा, "मैं चाहती थी कि मेरी गुड़िया मेरी सहेलियों की मूर्तियों पर छा जाए। मेरी एक दुर्बलता और भी है। मैं चाहती हूं कि मैं जहां कहीं भी होऊं, सबपर छाई रहूं।"

"खूब," मेजर के मुंह से निकला, "आपने गुड़िया बनाने का आर्डर कब दिया था ?"

"आज से आठ दिन पहले।"

"क्या आपने यह आर्डर किसीके सामने दिया था ?"

"नहीं।"

"क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह जानता था कि आपने मिसेज़ सरोज कपिल को अपनी शक्ल की और अपने साइज़ से दूने साइज़ की गुडिया बनाने का आर्डर दिया है।"

"जी नहीं। मैं तो उस गुड़िया को यहां लाकर सबको अचंभे में डाल देना चाहती थी। इसलिए मैंने गुड़िया के सम्बन्ध में किसीको भी कुछ नहीं बताया था।"

"फिर सोच लीजिए। क्लब में या किसी सहेली के यहां आपके मुंह से अनजाने में यह बात तो नहीं निकल गई कि आप इस तरह की कोई गुड़िया बनवा रही हैं ?"

मिसेज़ दिनशा शीरीं सोच में पड़ गईं। दो मिनट के बाद उन्होंने कहा, "मुझे याद आ गया। परसों सुप्रसिद्ध चित्रकार ललिता सेनी की चित्र-प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ था। वहां मुझे चित्रकार यादव मिला। मुझे देखकर वह लपका हुआ मेरे पास आया और बोला, 'मिसेज़ दिनशा, मैं आपकी गुड़िया को ऐसा रंग दे रहा हूं कि मद्धिम रोशनी में कोई भी यह न जान सकेगा कि वह कोई निष्प्राण गुड़िया है या जीवित अप्सरा है।' मैंने अपने होंठों पर उंगली रखकर यादव को चुप रहने का इशारा किया और फिर उसने इस सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं कहा।"

"यह भी तो हो सकता है कि किसीने उसे यह कहते हुए सुन लिया हो," मेजर ने कहा।

"क्यों नहीं हो सकता—ज़रूर हो सकता है।"

"मिसेज़ दिनशा, अब मेरे कुछ प्रश्नों के खूब अच्छी तरह सोच-समझकर और ठीक-ठीक उत्तर दीजिए," मेजर ने कहा,

"क्या आप सूरजनारायण जुत्शी नामक किसी व्यक्ति को जानती हैं ?"

"नहीं।"

"क्या आपको मालूम था कि आपकी हमशक्ल गुड़िया बन जाने के बाद वह मेकअप के लिए चित्रकार यादव के स्टूडियो में ले जाई जाएगी ?"

"यह बात तो मुझे यादव के बताने पर ही मालूम हुई कि वह मेरी गुड़िया का मेकअप कर रहा है।"

"यह मालूम हो जाने के बाद क्या आप स्टूडियो में गई थीं ?"

"नहीं।"

"क्या आप रामपाल तलवाड़ को जानती हैं ?"

"जिसकी हत्या का समाचार आज सुबह के अखबारों में प्रकाशित हुआ है ?" मिसेज़ दिनशा ने कहा।

"जी हां, वही।"

"मैं उसे बिल्कुल नहीं जानती।"

"धन्यवाद, आशा है आपसे फिर भेंट होगी।" मेजर ने उठते हुए कहा और फिर जैसे उसे कोई बात याद आ गई। उसने पूछा, "मिसेज़ दिनशा, हत्या की इस वारदात के बाद क्या आप अपनी गुड़िया लेना चाहेंगी ?"

"ज़रूर लेना चाहती हूं।"

मेजर ने और कुछ न पूछा और दरवाज़े की ओर बढ़ गया।

पौन घंटे के बाद मेजर सोनिया के साथ अपने आफिस में वापस पहुंचा तो वहां सुधीर, मालती और डोरा बैठे रमी खेल रहे थे। वे मेजर और सोनिया के तेवरों को देखकर समझ गए कि दोनों कोई महत्त्वपूर्ण काम करके लौटे हैं। अभिवादन के बाद वे प्रतीक्षा करने लगे कि देखें आज मेजर किस रहस्य का उद्घाटन करता है।

## ४. तीन चित्र

मेजर चुपचाप मेज़ के पीछे अपनी रिवाल्विंग चेयर पर जा बैठा तो डोरा, मालती और सुधीर समझ गए कि मेजर किसी गंभीर समस्या पर विचार कर रहा है। सोनिया ने उनको दबी ज़बान में सारा किस्सा सुनाया तो उन सबका दिल

बल्लियों उछलने लगा। उन्हें प्रसन्नता हुई कि इस बार एक जटिल केस सामने आया।

तभी टेलीफोन की घंटी बजने लगी। मेजर ने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया। दूसरी ओर से इंस्पेक्टर राना की आवाज़ आई, "मेजर साहब!"

"मैं बोल रहा हूं।"

"मेजर साहब, मृतक के सूटकेस से और उसकी जेबों से अनोखी चीज़ें निकली हैं।"

"ज़रा विस्तार से बताइए कि क्या-क्या चीज़ें मिली हैं?"

"सूटकेस में चार सूट, छः कमीज़ें, दो पाजामे, चार तौलिये, शेव का सामान, बारह हज़ार रुपये के करेंसी नोट, कुछ रेज़गारी, चाबियों का गुच्छा, एक पत्र किसी मिसेज़ दिनशा शीरीं का लिखा हुआ है।"

मेजर बलवन्त दिनशा शीरीं का नाम सुनकर चौंक पड़ा। उसने कहा, "इंस्पेक्टर साहब, यह देखकर बताइए कि मिसेज़ दिनशा शीरीं ने पत्र किसके नाम लिखा है?"

"किसी मि० कपूर के नाम है। लेकिन कपूर से पहले के अक्षर पढ़े नहीं जा रहे हैं।"

"खूब," मेजर बोला, "अब आप यह बताइए कि आपको और क्या-क्या मिला है?"

"सूटकेस से तीन फोटो मिले हैं। तीनों फोटो स्त्रियों के हैं। मैं हर फोटो के पीछे लिखा हुआ नाम पढ़कर सुनाता हूं। पहले फोटो के पीछे सरोज का नाम लिखा है। दूसरे फोटो के पीछे दिनशा शीरीं का नाम लिखा है और तीसरे फोटो के पीछे लिखा है सतवन्ती। अब मैं आपको उन चीज़ों की लिस्ट सुनाता हूं जो मृतक के कपड़ों से निकली हैं। सोने का एक सिगरेटकेस, जिसमें पालमाल के किंग साइज़ सिगरेट हैं। चांदी का लाइटर, जापान का बना हुआ। बढ़िया चमड़े का बना हुआ बटुआ जिसमें बारह सौ सोलह रुपये के नोट और तीन रुपये साठ पैसे की रेज़गारी है। बटुए के अंदर मिसेज़ सरोज का फोटो है। कुछ कागज़ात हैं जो व्यवसाय-सम्बन्धी हैं।"

"बस?"

"ठहरिए। मृतक के सूटकेस से एक बहुत ही विचित्र चीज़ मिली है। समझ में नहीं आता कि वह क्या चीज़ है। देखने में तो

ऐसे जूते दिखाई देते हैं जैसे अपाहिज़ पहनते हैं। और ऐसे डम्बल भी दिखाई देते हैं और ऐसे दस्ताने भी जो मुक्केबाज़ी के काम आते हैं।"

"मैं इन चीज़ों को देखने के लिए आ रहा हूं।"

आधे घंटे के बाद मेजर पुलिस इंस्पेक्टर राना के थाने में पहुंच गया। इंस्पेक्टर राना ने मेजर को वह अनोखी चीज़ दिखाई जो जूते, डम्बल और मुक्केबाज़ी के दस्तानों जैसी दिखाई देती थी। मेजर ने वह चीज़ देखी तो उसके होंठ गोल हो गए। उसने बड़ी कठिनाई से सीटी बजाने की अपनी इच्छा पर काबू पाया। इसके बाद उसने एक दिन के लिए मिसेज़ दिनशा शीरीं का फोटो और उनका लिखा हुआ पत्र इंस्पेक्टर राना से ले लिया। और अपने आफिस की ओर चल पड़ा।

आफिस में पहुंचते ही उसने सुधीर और मालती को मिसेज़ दिनशा शीरीं का पता बताते हुए कहा, "तुम तुरंत इस पते पर चले जाओ। मिसेज़ दिनशा शीरीं के बंगले की कड़ी निगरानी करो। उनसे जो भी मिलने आए उसका पीछा करो।"

सुधीर ने कागज़ पर लिखा मिसेज़ दिनशा शीरीं का पता ले लिया और मालती के साथ आफिस से निकल गया।

मेजर ने सोनिया से कहा, "सोनिया, तुम मिसेज़ कपिल का मकान मेरे साथ देख आई हो। तुम जाकर मिसेज़ सरोज की निगरानी करो। लेकिन किसी दूसरे मेकअप में जाओ।"

सोनिया उठकर मेकअप रूम में चली गई तो डोरा मेजर की ओर इस तरह देखने लगी, जैसे उसके आदेश की प्रतीक्षा कर रही हो।

"डोरा, तुम चित्रकार ओंकार यादव का पीछा करो। यह देखो कि वह अपने स्टडियो से निकलकर कहां-कहां जाता है।" यह कहकर मेजर ने एक कागज़ पर लिखकर चित्रकार यादव का पता डोरा को दे दिया।

डोरा भी चली गई तो मेजर ने क्रेडिल पर से रिसीवर उठाया और डायरेक्टरी में देखकर मिसेज़ दिनशा शीरीं का नम्बर मिलाया।

दूसरी ओर से मिसेज़ दिनशा शीरीं की आवाज़ सुनाई दी "हैलो, कौन?"

"मैं मेजर बलवन्त बोल रहा हूं।"

"ओह, मेजर साहब, अभी-अभी तो आप बीसियों सवाल पूछकर गए थे। मैं इतनी थक गई हूं कि अब मुझमें बोलने की हिम्मत नहीं है।"

"बोलने की हिम्मत पैदा कीजिए।"

"क्यों ?"

"मैं एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मामले पर आपसे बातचीत करना चाहता हूं। मिसेज़ दिनशा शीरीं, आपने ज़िन्दगी में कितना झूठ बोला है ?"

"बहुत कम," मिसेज़ दिनशा शीरीं ने हंसते हुए कहा।

"लेकिन आज तो आपने मेरे सामने झूठ का अम्बार लगा दिया।"

"आप यह क्या कह रहे हैं ?"

"मैं कह रहा हूं कि आप काफी से ज्यादा झूठ बोल लेती हैं," मेजर ने कुछ गंभीरता से कहा, "आपने कहा था कि आप रामपाल तलवाड़ नामक किसी भी व्यक्ति को नहीं जानतीं। चलिए, मैं यह बात मान लेता हूं कि आप रामपाल तलवाड़ को नहीं जानतीं, लेकिन आप सोमदत्त कपूर को तो जानती हैं ?"

"कपूर !···नहीं, मैं किसी सोमदत्त कपूर को नहीं जानती," मिसेज़ दिनशा शीरीं ने बड़ी स्पष्टता से कहा।

"देखिए मिसेज़ दिनशा, रामपाल तलवाड़ और सोमदत्त कपूर एक ही आदमी के दो नाम हैं। और ये दोनों नाम उस व्यक्ति के हैं जिसकी हत्या का समाचार आप आज सुबह अखबार में पढ़ चुकी हैं।"

"हत्यारे के दो छोड़ दस नाम हो सकते हैं, मुझे इससे क्या ?" मिसेज़ दिनशा ने कहा।

"मृतक के सामान से आपका एक फोटो और एक पत्र बरामद हुआ है।"

"आप होश में तो हैं ?" मिसेज़ दिनशा ने कहा।

"बिल्कुल होश में हूं। आपका वह पत्र और आपका फोटो मेरे पास है। आप देखना चाहें तो मेरे पास चली आइए।"

"मैं आ रही हूं। कृपया अपने आफिस का पता बताइए।"

मेजर ने अपने बंगले का पता बता दिया।

चालीस मिनट के बाद मिसेज़ दिनशा मेजर के आफिस पहुंच गई। वह खूब सज-संवरकर और बनठनकर आई थी। उसने

साड़ी इस ढंग से पहनी थी कि उसका आधा सीना और आधा कूल्हा स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। मेजर ने उठकर उसका स्वागत किया और फिर अपनी मेज़ के सामने रखी कुर्सी पर उससे बैठने का इशारा किया।

मेजर ने एक पत्र मिसेज़ दिनशा शीरीं के सामने रख दिया। जब वह पत्र पढ़ चुकीं तो मेजर ने उनका फोटो उनके आगे खिसका दिया। मिसेज़ दिनशा ने फोटो पर एक नज़र डालने के बाद कहा, "फोटो मेरा है। लेकिन यह मृतक के पास कैसे पहुंचा?" और फिर उन्होंने ज़ोर से सांस लेकर अपना सीना पूरा उभारते हुए कहा, "आप यह कैसे कह सकते हैं कि मैंने यह पत्र सोमदत्त कपूर नामक व्यक्ति के नाम लिखा था जिसका नाम रामपाल तलवाड़ भी है?"

"पहले आप यह बताइए कि यह पत्र आपने लिखा है या नहीं?"

"पत्र तो मेरे ही हाथ का लिखा हुआ है। लेकिन सोमदत्त कपूर के नाम नहीं, बल्कि सुखदेव कपूर के नाम लिखा था। इस पत्र के साथ मैंने अपना यह फोटो भी भेजा था। यह बात चार साल पुरानी है।"

"सुखदेव कपूर कौन है? आपने उसे पत्र क्यों लिखा और अपना फोटो क्यों भेजा?"

"सुखदेव कपूर आज से दस वर्ष पहले स्टीफेन्सन कालेज में मेरा क्लासफैलो था। हम दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे। एम० ए० करने के बाद वह शिकागो चला गया एक स्टील कार्पोरेशन में प्रोजेक्ट इंजीनियर बनकर। फिर वह वहीं यूनिवर्सिटी में लेक्चरार हो गया। उसने वायदा किया था कि वह शिकागो में अपने रहने की पूरी व्यवस्था करने के बाद मुझे वहां बुला लेगा। आज से चार साल पहले उसने मुझे एक पत्र लिखा था कि शिकागो में अब उसने अपने पांव अच्छी तरह जमा लिए हैं। मैं उसे अपना ताज़ा फोटो भेजूं। मैंने उसे पत्र लिखा और फोटो भी भेज दिया।"

"उसने आपका ताज़ा फोटो क्यों मंगवाया था?" मेजर ने पूछा।

"यह एक रहस्य था, जो बाद में उसने मेरा फोटो पाकर अपने पत्र में खोला। वह यह देखना चाहता था कि छः साल के

बाद मुझमें कितना परिवर्तन आया है।"

"उसने पत्र में आपको क्या लिखा था?"

"उसने लिखा था कि उसे मेरे फोटो को देखकर अत्यधिक निराशा हुई है। मैं अब ग्लैमर गर्ल[1] नहीं रही। अमेरिकन वातावरण में सीधी-सादी लड़की के लिए कोई स्थान नहीं। यहां तो ऐसी लड़की चाहिए जो हर समय शोले की तरह जगमगाती रहे। और फिर उसने आगे चलकर लिखा था, 'शीरीं, मुझे अमेरिकन रहन-सहन बहुत भा गया है। मैं तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता। मैं अपने पुराने प्यार को याद करते हुए तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम मुझे भूल जाओ। मैंने यहां एक ऐसी लड़की से विवाह करने का निश्चय कर लिया है जो साक्षात् शोला है। तुम भी विवाह कर लेना। मैं तुम्हारे सारे पत्र और फोटो तुम्हें भेज रहा हूं।'"

"क्या वे पत्र और फोटो तुम्हें मिले?"

"जी हां, लेकिन यह पत्र और यह फोटो नहीं मिला। मुझे तो हैरानी है कि मेरा यह पत्र और फोटो सोमदत्त कपूर या रामपाल तलवाड़ के पास कैसे मिला?" मिसेज़ दिनशा शीरीं ने एक बार फिर अपने फोटो की ओर देखते हुए आश्चर्य से कहा।

"मिसेज़ दिनशा शीरीं, आपने विवाह कब किया?"

"तीन साल पहले।"

"क्या आपका विवाहित जीवन सुखी है?"

"कैसा विवाहित जीवन? मैं तो अपने माता-पिता के पास रहती हूं। मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है।"

"क्यों?"

"उसका विचार है कि मैं आवश्यकता से अधिक माडर्न गर्ल हूं। अल्ट्रा माडर्न हूं।"

"मिसेज़ दिनशा, आपका जीवन तो एक ट्रेजडी है। आपके प्रेमी ने आपको इसलिए छोड़ दिया कि आप ग्लैमर गर्ल नहीं और आपके पति ने आपको इसलिए छोड़ दिया कि आप ग्लैमर गर्ल हैं। कैसी दुनिया है। कहीं ग्लैमर गर्ल होना एक गुण है और कहीं अवगुण है।"

"जी हां, जिन्दगी एक ट्रेजडी इसी तरह बनती है।"

"मिसेज़ दिनशा शीरीं, मैं इस समय आपकी बातों पर विश्वास किए लेता हूं। लेकिन आपकी बातों की जांच-पड़ताल करूंगा।

१. चित्ताकर्षक लड़की

अगर आपकी बातें सच निकलीं तो मैं आपकी भरसक सहायता करने और आपको सुखी बनाने की चेष्टा करूंगा। लेकिन अगर आपकी बातें झूठी निकलीं तो आपको किसी भी दशा में क्षमा न करूंगा। और आपको उचित दंड दिलवाऊंगा।"

"क्या मैं अपना यह पत्र और फोटो ले जा सकती हूं?" मिसेज़ दिनशा शीरीं ने उठते हुए कहा।

"कभी नहीं। आपका यह पत्र और फोटो मेरे पास धरोहर-स्वरूप ही रहेंगे। अगर आपका बयान सच सिद्ध हुआ तो आपको वापस कर दिए जाएंगे।"

"अच्छा तो सो लांग।"

"सो लांग...!" मेजर ने उत्तर दिया।

मिसेज़ दिनशा शीरीं के जाने के बाद मेजर ने मेज़ पर ज़ोर से मुक्का मारा और अपने-आपसे बोला, "मैं भी कितना बेवकूफ हूं कि मैंने अकारण ही अपने-आपको इस केस में उलझा लिया। यह केस तो बिल्कुल सिरदर्द है।"

मेजर देर तक भिन्नाता रहा। थोड़ी देर बाद उसे अपने आफिस के बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। फिर उसका चौकीदार एक आदमी को लेकर अन्दर आया, जिसके हाथ में बहुत-सी नेम-प्लेटें थीं।

"साहब, इस आदमी को मैंने दरवाज़े पर रोक लिया। यह ज़बर्दस्ती बंगले में घुसने की कोशिश कर रहा था। मैंने पूछा तो कहने लगा, मैं अपने-आप नहीं आया हूं। मुझे किसीने भेजा है कि मेजर साहब एक नेम-प्लेट बनवाना चाहते हैं।"

मेजर हंसने लगा, "यह किसीने मुझसे मज़ाक किया है। यह विनोद ने तो नहीं किया जो विवाह कराने के बाद कनाडा से छुट्टी लेकर आया हुआ है और इन दिनों बम्बई में है।" यह कहकर मेजर ने चौकीदार से कहा "तुम जाओ। मैं स्वयं ही इससे पूछ लूंगा कि इसे मेरे पास किसने भेजा है।"

चौकीदार चला गया तो आने वाले व्यक्ति ने रहस्यपूर्ण स्वर में कहा, "आपका चौकीदार बहुत सख्त है। मुझे एक बहुत ही लम्बे आदमी ने आपके पास भेजा है।"

"बहुत ही लम्बे आदमी ने? वह तुमसे कहां मिला था?" मेजर ने पूछा। लम्बे आदमी का नाम सुनकर मेजर की दिलचस्पी एकदम बढ़ गई। उस आदमी को सूरजनारायण जुत्शी ने उसके पास

भेजा था।

"परेल में। कहने लगा कि वह आपका मित्र है। आप नेम-प्लेट बनवाना चाहते हैं। उसने सेलोलाइड पर काले अक्षरों की एक नेम-प्लेट पसंद की। उसकी कीमत भी मुझे दे दी। उसने कहा कि मैं आपसे मिलकर यह पूछूं कि आप इस नेम-प्लेट पर किस अन्दाज़ से अपना नाम लिखवाना चाहते हैं।"

"उसने कौन-सी नेम-प्लेट पसंद की थी?"

"यह जो मेरे हाथ में है। उस आदमी ने यह नेम-प्लेट लेकर मुझसे कहा था कि मैं अपना मुंह दूसरी ओर फेर लूं। मैंने अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया तो कुछ मिनट के बाद उसने नेम-प्लेट मुझे वापस करते हुए कहा कि मैं यह नेम-प्लेट आपके पास ले जाऊं।"

"नेम-प्लेट मेज़ पर रख दो। कीमत तुम्हें मिल ही चुकी है। मैं अभी कोई नेम-प्लेट बनवाना नहीं चाहता।"

वह आदमी निराश होकर चला गया। मेजर समझ गया था कि सूरजनारायण जुत्शी ने उस तक कोई संदेश पहुंचाने के लिए इस आदमी को माध्यम बनाया है। मेजर ने सेलोलाइड की वह नेम-प्लेट उठा ली। उसका पेंदा खोखला था। मेजर ने नाखून से उसका पेंदा खोल दिया। उसके अन्दर से सचमुच एक कागज़ निकला। मेजर जुत्शी की सूझबूझ की सराहना किए बिना न रह सका जिसने उस तक संदेश पहुंचाने का एक बहुत ही सुरक्षित उपाय खोज निकाला था।

मेजर ने कागज़ की तह खोली और उसे पढ़ने लगा।

जुत्शी ने लिखा था:

> "कल शाम को जब आप कालबादेवी रवाना हुए तो मुझे फिर मेरे उस हितैषी का फोन आया जिसने मुझे बताया था कि मेरे मित्र रामपाल तलवाड़ की हत्या कर दी गई है और उसकी लाश कालबादेवी के गुड़ियाघर में पड़ी है। मेरे उस हितैषी ने पहले मुझे सलाह दी थी कि मैं घर से बाहर कदम न रखूं। उसने आपके जाने के बाद मुझे फिर फोन किया और मुझे सलाह दी कि मैं तुरन्त फ्लैट छोड़ दूं। मेजर साहब, मैं बहुत ही भयभीत हूं। बहुत दिनों से अपनी जान बचाता फिर रहा हूं। अपने हितैषी का फोन पाने के बाद मेरे पास इतना समय न था, अतः मैं आपका इन्तज़ार किए बिना वहां

से चला आया। अब मैं कहां हूं यह आपसे मिलने पर बताऊंगा। आपसे आज ही मिलूंगा। मेग्नीफिशेंट होटल में रात के नौ बजे। वहां आपको एक जंगली नाच दिखाया जाएगा। आप यह नाच देखकर बहुत खुश होंगे। ज़रूर आइएगा। मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगा।

—जुत्शी"

मेजर ने रामपाल तलवाड़ की हत्या के विषय में जो नक्शा बनाया था, जुत्शी के इस पत्र ने मटियामेट कर दिया था। जुत्शी हत्यारा नहीं था। मेजर ने जुत्शी का पत्र तह करके अपनी जेब में रख लिया। और सोनिया, मालती, डोरा और सुधीर की वापसी की प्रतीक्षा करने लगा।

सबसे पहले सुधीर और मालती आए। उन्होंने रिपोर्ट दी कि जब वह मिसेज़ दिनशा शीरीं के बंगले पर पहुंचे तो वह शायद बंगले में नहीं थी। एक घंटे के बाद वह कार में अपने बंगले पर लौटी।

"वह मुझसे मिलकर गई थी," मेजर ने कहा।

"मिसेज़ दिनशा शीरीं वापस आने के बाद फिर बाहर नहीं निकली। उसके मिलने के लिए भी कोई नहीं आया। हमें पता चला कि वह बंगला मिसेज़ दिनशा शीरीं का अपना नहीं है। उसके पिता का है।"

"तुम लोगों ने अच्छा किया कि वहां से चले आए। अभी मिसेज़ दिनशा शीरीं की निगरानी का समय नहीं आया है।"

सोनिया शाम के साढ़े छः बजे लौटी। उसने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा, "मिसेज़ सरोज कपिल चार बजे तक सोई रही। साढ़े चार बजे तैयार होकर परेल पहुंची। वहां मुस्तफा लेन की तन्वीर बिल्डिग में गई। मैं भी परछाईं की तरह उसके साथ लगी रही।"

सबने अब सोनिया की ओर देखा। वह गोआनी बावर्चिन के वेश में थी। इस मेकअप में भी वह बहुत सुन्दर दिखाई दे रही थी।

"मिसेज़ सरोज तन्वीर बिल्डिग में किससे मिलने गई?"

"मेरे विचार से वह सूरजनारायण जुत्शी से मिली। मैंने जुत्शी को पहले नहीं देखा था लेकिन मैं उसके असाधारण लम्बे कद को देखकर पहचान गई कि यह जुत्शी है।"

"लेकिन मुझसे तो मिसेज़ सरोज़ ने कहा था कि वह सूरजनारायण जुत्शी को जानती ही नहीं है," मेजर ने कहा।

"यह भी तो हो सकता है कि जुत्शी का असली नाम कुछ और हो," सोनिया बोली।

मेजर ने सीटी बजाते हुए कहा, "तुम्हारा विचार ठीक है सोनिया। इस केस में हर व्यक्ति के दो रूप हैं, दो नाम हैं और दो व्यक्तित्व हैं। यह भी हो सकता है कि मिसेज़ सरोज का भी कोई दूसरा नाम हो।"

"मेरा भी यही विचार है कि यह डबल आदमियों का केस है," मालती ने कहा।

"ख़ैर, मिसेज़ सरोज कहीं भाग नहीं जाएंगी। उनसे पता चल जाएगा कि मि० जुत्शी कौन है और वह उनसे मिलने क्यों गई थीं।" मेजर बोला, "आज का काम समाप्त हुआ, अब ज़रा ह्विस्की का दौर चल जाए।"

मालती दौड़कर एक ट्रे में ह्विस्की की बोतल, सोडे की फ्लास्क और शीशे के गिलास ले आई। सुधीर रसोईघर में नौकरानी को आर्डर देने चला गया कि वह वेजीटेबल कटलेट और उबले हुए अंडे ले आए।

पहला पैग पीते हुए मालती ने कहा, "बहुत दिनों से आपने कोई शे'र नहीं सुनाया। हो जाए एक शे'र।"

मेजर खुश होकर बोला, "हम तो एवररेडी हैं। लीजिए शे'र सुनिए :

राहे अदम में चोर ही इतना करम करे
चुपके से ले उड़े मेरी गठरी गुनाह की।"

"वाहवाह, अपने गुनाहों की गठरी की चोरी कराने का खयाल एकदम नया है।" यह कहकर मालती ने पहला पैग एक ही सांस में समाप्त कर दिया और दूसरा पैग अपने गिलास में डालने लगी।

ठीक उसी समय डोरा ने आफिस में कदम रखा। उसने ह्विस्की का दौर चलते देखा तो वह खिल उठी। वह मालती के पास आ बैठी और भरा हुआ गिलास उठाकर पी गई।

नौकरानी वेजीटेबल कटलेट और उबले हुए अंडे ले आई।

"डोरा, तुम कहां से आ रही हो और क्या खबर लाई हो?" मेजर ने पूछा।

"मैं चर्नी रोड जाकर चर्च गेट से आ रही हूं।"

"चर्नी रोड और चर्च गेट से ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां। क्योंकि मैं चित्रकार यादव का पीछा करती रही थी। चित्रकार यादव मिसेज़ दिनशा शीरीं नामक एक पारसी स्त्री से मिला। दोनों चर्च गेट पर एक अंग्रेजी फिल्म देखने गए। मैं चर्नी रोड से चर्च गेट तक उनके पीछे-पीछे गई और जब वे सिनेमा-हाल के अन्दर चले गए तो मैं यहां लौट आई।"

"चित्रकार यादव और मिसेज़ दिनशा शीरीं अंग्रेजी फिल्म देखने गए हैं ! लेकिन दोनों ने इनकार किया था कि वे इस सीमा तक एक-दूसरे से परिचित नहीं हैं," मेजर ने कहा।

"वही दोहरे व्यक्तित्व की बात है," मालती बोली।

"यह केस ऐसा है कि एक पेच के अन्दर सैकड़ों केस पड़े हुए हैं," डोरा बोली।

ह्विस्की की बोतल खतम हो गई तो मेजर ने कहा, "कल इन दुहरे नामों और दुहरे व्यक्तित्वों की पहेली हल करने की कोशिश की जाएगी। अब छुट्टी।"

"मैं ज़रा अपना मेकअप उतार आऊं," सोनिया बोली।

सोनिया ने जानबूझकर मेकअप रूम में देर लगा दी। उसके वापस आने तक सब लोग जा चुके थे। सुधीर डोरा के साथ चला गया था। अब आफिस में मेजर और सोनिया ही रह गए।

मेजर मालती के साथ अपने किस्से के बाद सोनिया की ओर अधिक ध्यान देने लगा था। एकान्त मिलते ही वह सोनिया को अपनी बांहों में भर लिया करता था। अब भी उसने ऐसा ही किया। और बोला, "सोनिया, मेरे साथ मेग्निफिशेंट होटल में चलो। वहां तुम्हें एक जंगली नाच दिखाया जाएगा।"

"चलिए।"

थोड़ी देर बाद सोनिया और मेजर मेग्निफिशेंट होटल की ओर जा रहे थे।

## ५. जंगली नाच

मेजर और सोनिया नौ बजकर दस मिनट पर मेग्निफिशेंट होटल पहुंच गए। लम्बे कद का जुत्शी एक पेड़ के साए में खड़ा बड़ी बेचैनी से मेजर की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके

साथ एक स्त्री को देखकर वह कुछ उदास-सा हो गया। लेकिन जब मेजर ने उसे बताया कि सोनिया उसकी असिस्टेंट है तो जुत्शी की सारी निराशा दूर हो गई। वह उनको होटल के अन्दर ले गया जहां उसने अगली कतार में मेजर और अपने लिए एक टेबल रिज़र्व करा रखा था। जुत्शी के हाथ में चमड़े का एक बैग था।

अभी नाच शुरू नहीं हुआ था। स्टेज पर एक अंग्रेज़ी गीत की धुन बज रही थी।

जुत्शी ने बैरे को लेमन स्क्वेश लाने के लिए कहा। लेमन स्क्वेश आ गया तो जुत्शी ने बैग में से जिन की बोतल निकालकर थोड़ी-थोड़ी जिन तीनों गिलासों में डाल दी।

"अभी शायद नाच शुरू होने में कुछ देर है ?" मेजर ने कहा।

"जी हां।"

"फिर तो हम काम की बातें कर सकते हैं," मेजर ने जुत्शी की ओर अर्थपूर्ण नज़रों से देखते हुए कहा, "आज शाम को पौने पांच के लगभग मिसेज़ सरोज कपिल आपसे मिली थीं ?"

"हां, मिसेज सरोज कपिल मेरे मित्र रामपाल तलवाड़ की पत्नी हैं," जुत्शी ने कहा।

"यों कहिए कि मिसेज़ सरोज कपिल आपके मित्र सोमदत्त कपूर की पत्नी हैं," मेजर ने कहा।

जुत्शी ने आश्चर्य से मेजर की ओर देखा, "अच्छा, तो आपको मेरे मित्र का असली नाम मालूम हो चुका है ? कहीं मिसेज़ सरोज कपिल ने तो आपको मेरे मित्र का असली नाम नहीं बताया ?"

"उन्होंने ही बताया था," मेजर बोला, "अब आप अपना असली नाम बताइए।"

जुत्शी मुस्कराया, "आपका अनुमान बिल्कुल ठीक है। सूरज-नारायण जुत्शी मेरा असली नाम नहीं है।"

"तो आपका असली नाम क्या है ?"

"मैं अपना असली नाम अभी नहीं बता सकता।"

"खैर, एक बात बताइए। यह बात तो समझ में आ जाती है कि आपने सुबह एक फ्लैट किराये पर लिया और शाम को छोड़ दिया। तीन महीने की किराये की भी परवाह नहीं की। लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि आपने बैंक आफ इंडिया की

विक्टोरिया गार्डन ब्रांच में कल सुबह लगभग नौ हज़ार रुपये जमा कराए और ढाई घंटे बाद ही उनमें से लगभग तीन हज़ार रुपये क्यों निकलवाए ?''

''मैं रुपया जमा करा चुका तो किसीने तीन हज़ार मांगे। ये रुपये एक ऐसे आदमी ने मांगे थे कि मैं इनकार कर नहीं सकता था।''

''वह आदमी कौन है ?''

''इस समय मैं उसका नाम भी नहीं बता सकता।''

''अच्छी बात है। एक और बात रह जाती है जिसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। आपने सुबह यह क्यों कहा था कि आपके मित्र को सीधे किंग सर्किल जाने के बजाय पहले आपसे मिलना चाहिए था।''

''मैंने यह बात इसलिए कही थी कि मुझे मालूम था कि कुछ लोग, जो उसकी राह ताक रहे हैं, उसे मार डालेंगे। लेकिन मुझे यह मालूम नहीं था कि वे लोग उसकी हत्या करने के बाद उसकी लाश उसीकी पत्नी की दूकान में रख आएंगे।'' जुत्शी बोला, ''इसीलिए मैंने आज सरोज कपिल को अपने घर बुलाया था। यह पूछने के लिए कि क्या हत्या होने से पहले मेरा मित्र उनसे मिला था। वह सरोज के घर तक पहुंच नहीं पाया। और फिर वही हुआ, जिसकी मुझे आशंका थी।''

''आपको यह कैसे पता चला कि कुछ लोग आपके मित्र की राह ताक रहे थे और उसे मार डालने के लिए घात लगाए बैठे थे ?''

''अभी मैं इस बात का उत्तर भी नहीं दूंगा।''

''आपका मित्र छः वर्ष तक अपनी पत्नी से अलग रहा। इस बीच वह कहां था ?''

''मेरे पास,'' जुत्शी ने कहा।

''आपके पास ?'' मेजर का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था, ''वह आपके पास कहां रहा ?''

''इस प्रश्न का उत्तर मैं अभी नहीं दे सकता।''

''अगर आप मेरे किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देंगे तो मैं यह केस कैसे हल कर पाऊंगा ?'' मेजर ने कहा।

''आप मुझे थोड़ा-सा समय दीजिए। और अपने ढंग से पता लगाइए।''

"अच्छी बात है। आप यह बताइए कि आप इतने भयभीत क्यों हैं ?"

"वह लोग जो मेरे मित्र की हत्या कर चुके हैं, वे मुझे भी मार डालना चाहते हैं। लेकिन मैं उनके हत्थे नहीं चढ़ पा रहा हूं।"

"लेकिन आप उनसे कब तक बचे रह सकते हैं ?"

"अभी तक तो बचा ही हुआ हूं," जुत्शी ने कहा।

"अगर आपकी ज़िन्दगी खतरे में हो तो आप मेरे यहां चले चलिए।"

"केवल दो दिन मुझे और आज़ाद रहने दीजिए। अगर खतरा बढ़ गया तो मैं खुद ही आपके पास चला आऊंगा।"

"क्या आप बम्बई में काफी दिनों से रह रहे हैं ?"

"नहीं, मुझे तो बम्बई में आए हुए केवल दस ही दिन हुए हैं।"

"इससे पहले आप कहां थे ? और आपका मित्र कहां था ?"

"हम दोनों आज से दस दिन पहले इकट्ठे थे। वह मेरठ में रुक गया था और मैं बम्बई चला आया था। मेरठ में उसे खतरा पैदा हुआ तो उसने मुझे तार द्वारा उस खतरे की सूचना दी। मैंने उसे अपने पास बुला लिया। लेकिन मुझे क्या खबर थी कि खतरा उसकी मृत्यु का रूप ले लेगा।"

"क्या आप मिसेज़ दिनशा शीरीं को जानते हैं ?"

"इसका उत्तर मैं अभी नहीं दूंगा।"

"आप न बताइए। लेकिन आपके मित्र के सूटकेस से मिसेज़ दिनशा शीरीं का एक पत्र और एक फोटो बरामद हुआ है।"

"सच ?"

"इसका अर्थ है कि आप मिसेज़ दिनशा शीरीं को जानते हैं," मेजर ने कहा।

"नहीं, मैं उन्हें बिल्कुल नहीं जानता," जुत्शी ने कहा, "मेरे मित्र के सूटकेस से और क्या-क्या निकला ?"

मेजर ने सोमदत्त कपूर उर्फ रामपाल तलवाड़ के सूटकेस और उसकी जेबों से मिली हुई सारी चीज़ें बता दीं और जब उसने यह बताया कि उसके सूटकेस से एक ऐसी चीज़ भी बरामद हुई है जो देखने में जूते भी हैं, डम्बल भी और बाक्सिग के दस्ताने भी दिखाई देते हैं, तो जुत्शी का मुंह खुला रह गया।

"मेजर साहब, मेरे मित्र की कोई भी चीज़ गुम न होने पाए।

और किसीको भी यह पता न चलने पाए कि उसके सूटकेस से क्या-क्या निकला है।"

"सारी चीज़ें पुलिस के पास हैं," मेजर बोला।

"पुलिस की कोई बात नहीं, किसी और को इन चीजों के बारे में मालूम नहीं होना चाहिए।"

"चिन्ता न कीजिए," मेजर ने कहा और सोचने लगा कि जुत्शी इस बात पर ज़ोर क्यों दे रहा है कि उसके मित्र के पास से जो चीज़ें मिली हैं उनके बारे में किसीको भी कुछ पता न चलने पाए। कुछ रुककर मेजर ने पूछा, "क्या आप बता सकते हैं कि लम्बे जूते और डम्बल जैसी चीज़ क्या है ?"

"मैं अभी नहीं बता सकता; लेकिन मैं जानता हूं कि वह चीज़ क्या है," जुत्शी ने कहा।

"आप चाहते हैं कि आप दो दिन तक आज़ाद रहें। इसके बाद आप मुझसे कहां मिलेंगे ?"

"मैं आपको संदेश भिजवा दूंगा। मेरा कुछ पता नहीं कि मैं कल कहां होऊंगा। मैं आज परेल की मुस्तफ़ा लेन वाला मकान भी छोड़ रहा हूं। मेरे लिए हर दूसरे दिन अपना ठिकाना बदल देना आवश्यक हो गया है।"

"क्यों ?"

"आप बेकार ही प्रश्न किए जा रहे हैं। अभी मैं आपके किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता," जुत्शी ने कहा और लेमन स्क्वेश के गिलासों में थोड़ी-थोड़ी जिन और डाल दी।"

तभी हाल में अंधेरा छा गया और जंगली नाच शुरू हो गया।

स्टेज पर पलभर के लिए रोशनी हुई और फिर बुझ गई। स्टेज पर एक जंगल-सा दिखाई देने लगा। झाड़ियां और पेड़ों से भरा जंगल। एक झाड़ी से जंगली कबीले की एक औरत निकली अर्द्ध नग्न। और फिर दूसरी झाड़ी में से एक चीता दिखाई दिया जो उस औरत पर झपट पड़ने के लिए घात लगाए खड़ा था। औरत उस चीते से बचने के लिए नाचती हुई दाव खेल रही थी। उस नाच का विषय यह बताया गया कि इंसान आदिम युग में शिकार था और जंगली जानवर शिकारी थे। और इंसान को जंगली जानवरों से बचने के लिए हर घड़ी किस तरह भयभीत रहना पड़ता था। वह नृत्य आदिम युग के मानव के जीवन और

उसकी सूझ-बूझ का चित्र प्रस्तुत कर रहा था। जंगली स्त्री नाचती हुई जिस प्रकार उस चीते से बचती थी, उसका बचने का यह अंदाज़ ही उसके नृत्य की विशेषता थी। अन्त में चीता उसपर झपटा और उसे झंझोड़ने लगा। चीते की पकड़ से मुक्त होने के लिए वह स्त्री ज़ोर लगाने लगी। उसका यह प्रयत्न ही नृत्य का प्राण था। जब वह स्त्री चीते के नीचे ज़ोर लगाते हुए निश्चेष्ट हो गई तो नृत्य समाप्त हो गया। पर्दा गिर गया और हाल तालियों से गूंज उठा।

मेजर और सोनिया भी देर तक तालियां बजाते रहे।

पर्दा फिर उठा और होटल का मैनेजर एक स्त्री तथा एक पुरुष के साथ स्टेज पर दिखाई दिया। मैनेजर ने उन दोनों का परिचय देते हुए बताया कि इस स्त्री ने इस नृत्य में जंगली कबीले की स्त्री और पुरुष ने चीते का अभिनय किया था। दोनों एक पश्चिमी देश के नर्तक हैं।

मेजर और सोनिया रात के ग्यारह बजे मेग्निफिशेंट होटल से बाहर निकले तो दोनों नशे से चूर थे। जंगली नाच ने उनके नशे को मादकता प्रदान कर दी थी। जुत्शी होटल में ही रह गया था। उसने मेजर को इशारा किया था कि वह उसे छोड़कर चला जाए।

मेजर सोनिया को उसके फ्लैट पर छोड़कर अपने आफिस की ओर चल पड़ा।

रात के सवा ग्यारह बजे मेजर आफिस में पहुंचा। वह कार से बाहर निकला तो यह देखकर हैरान हुआ कि उसके आफिस में बत्ती जल रही थी और चौकीदार आफिस के बाहर टहल रहा था।

"क्यों क्या बात है ?" मेजर ने चौकीदार से पूछा।

"सरकार एक औरत आपका इंतज़ार कर रही है," चौकीदार ने बताया।

"एक औरत मेरा इंतज़ार कर रही है ?" मेजर हैरान हुआ।

"जी हां, रात के दस बजे से बैठी है। और कह रही है, आपसे मिले बिना नहीं जाएगी।"

"क्या तुमने उसे कॉफी पिलाई ? —खाने के लिए पूछा ?"

"मैंने तो कई बार कहा। लेकिन न उसने कॉफी पी और न खाना खाया। बेचारी बहुत ही घबड़ाई हुई मालूम होती है।"

मेजर ने चौकीदार से कुछ पूछा और सीधा आफिस में चला

गया। एक औरत उसे देखते ही कुर्सी से उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़कर बोली, "नमस्ते मेजर साहब।"

"आप खड़ी क्यों हो गईं, बैठिए," मेजर ने कहा।

मेजर अपनी रिवाल्विंग चेयर पर जा बैठा, "कहिए, ऐसा क्या काम था कि आप मुझसे मिले बिना जाना नहीं चाहती थीं ?"

मेजर ने देखा वह स्त्री जिस कुर्सी पर बैठी थी उसके पास ही कागज़ का एक लिफाफा रखा हुआ था। उस स्त्री ने लिफाफे में हाथ डाला और एक बोतल निकालकर मेज़ पर मेजर के सामने रख दी।

मेजर ने हैरानी से उस बोतल की ओर देखकर कहा, "यह तो दूध की बोतल है।"

"जी हां, दूध की ही बोतल है। लेकिन इसे आपके पास लाना ज़रूरी था।"

"क्यों ?"

"इस दूध में ज़हर है।"

"लेकिन मैं तो ज़हरों का विशेषज्ञ नहीं हूं," मेजर ने कहा।

"आप समझे नहीं। मेरे पति दो दिन से गुम हैं। मैं पुलिस-स्टेशन जाकर कहती हूं कि मेरा पति दो दिन से गुम है, उसे तलाश किया जाए, तो वे लोग मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। कहते हैं, मेरे पति दूधपीते बच्चे नहीं हैं। आज नहीं तो कल आ जाएंगे। मैं क्या करूं ? कहां जाऊं ? मेरे पड़ोसी ने, जो एक डाक्टर हैं, मुझे सलाह दी कि मुझे आपके पास जाना चाहिए। उन्होंने ही मुझे आपका पता दिया।"

"लेकिन दूध की बोतल से आपके पति के गुम होने का क्या सम्बन्ध है ?"

"वास्तव में मैं घबराहट के कारण अपनी बात समझा नहीं पा रही हूं," उस स्त्री ने कहा।

"आप दो मिनट चुपचाप बैठकर अपने-आपको संभालिए। क्या आपके लिए कॉफी मंगवाऊं ?"

"नहीं, नहीं," वह बोली।

मेजर समझ गया कि वह घबड़ाहट के कारण हिचकिचा रही है। मेजर कॉफी के प्याले बनाने के लिए किचन में चला गया और दस मिनट मे कॉफी बनाकर ले आया। एक प्याला उसने अपने सामने और दूसरा उस स्त्री के सामने रख दिया। कॉफी

पीने के बाद उसकी घबड़ाहट दूर हो गई ।

मेजर कॉफी पीते हुए उसे बड़े ध्यान से देखता रहा । उसकी आयु लगभग अड़तीस वर्ष की थी । मेजर को अचानक ऐसा लगा कि जैसे उसने इस स्त्री को कहीं देखा है । और फिर उसे वह फोटो याद आ गया जो सोमदत्त कपूर या रामपाल तलवाड़ के सूटकेस में मिला था । वह फोटो उन तीन फोटुओं में से एक था । उसके पीछे लिखा हुआ नाम मेजर को याद आ गया । मेजर उसे घूरकर देखने लगा । किसी ज़माने में यह स्त्री बहुत ही सुन्दर रही होगी । उसके चेहरे की बनावट बहुत ही आकर्षक थी । लेकिन ढलती हुई आयु उसके आकर्षण को धीरे-धीरे समाप्त करती चली जा रही थी ।

"आप मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं ?" उस स्त्री ने पूछा ।

"आपको पहचानने की कोशिश कर रहा हूं," मेजर ने कहा, "क्या आप रामपाल तलवाड़ को जानती हैं ?" मेजर ने जान-बूझकर रामपाल तलवाड़ का दूसरा नाम सोमदत्त कपूर नहीं लिया ।

"जी नहीं ।"

"अच्छा तो आप सोमदत्त कपूर को जानती हैं ?" मेजर ने पूछा ।

यह नाम सुनते ही वह स्त्री इस तरह उछल पड़ी, जैसे उसे काले मकोड़े ने काट लिया हो । लेकिन वह बोली कुछ नहीं ।

"आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया ?" मेजर ने कहा, "मिसेज़ सतवन्ती, आप मुझे नहीं जानतीं, लेकिन मैं आपको जानता हूं ।"

मेजर के मुंह से अपना नाम सुनकर वह स्त्री कुर्सी पर से उछल पड़ी ।

"आप सोमदत्त कपूर का नाम सुनकर इतनी क्यों घबड़ा उठीं ?"

"इसलिए कि मुझे संदेह है कि सोमदत्त कपूर मेरे पति को बहकाकर ले गया है । यह भी संभव हो सकता है कि उसने मेरे पति को मार डाला हो ।"

मेजर हंसने लगा, "आपके पति को सोमदत्त कपूर ने मार डाला है ? आपको शायद पता नहीं कि बेचारे सोमदत्त कपूर को ही किसीने कल शाम मार डाला । कहीं आपके पति ही ने तो उसे नहीं मार डाला और उसकी हत्या करने के बाद कहीं भाग गया ?"

मेजर ने यह बात इसलिए कही थी कि उसे इस केस की विशे-

षता याद आ गई थी। मेजर ने सोचा कि अगर सतवन्ती का पति गुम है और सतवन्ती को यह संदेह है कि उसके पति की हत्या सोमदत्त ने ही की है तो इसके उलट यह बात भी हो सकती है कि सतवन्ती के पति ने ही सोमदत्त कपूर की हत्या की हो और फिर कहीं भाग गया हो।

"आप कैसी बात कर रहे हैं! अगर आज से दस साल पहले आपने यह कहा होता कि मेरे पति ने सोमदत्त को मार डाला तो मैं आपकी बात पर विश्वास कर लेती।"

"आज से दस साल पहले आपके पति सोमदत्त कपूर की हत्या क्यों कर सकते थे?" और अगर वह दस वर्ष पूर्व ऐसा कर सकते थे तो अब क्यों नहीं कर सकते थे?"

"दस साल पहले की बात और थी। तब मेरे पति बहुत ईर्ष्यालु थे। वे जानते थे कि सोमदत्त कपूर मुझपर हाथ डालना चाहता है। यानी उनकी पत्नी को उनसे छीन लेना चाहता है।"

"हूं···मिसेज़ सतवन्ती, क्या आपको मालूम है कि कल किसीने सोमदत्त कपूर को मार डाला। कल सुबह के ग्यारह बजे से एक बजे के बीच। आपके पति कब से गुम हैं?"

"किसीने सोमदत्त की हत्या कर दी?" सतवन्ती ने आश्चर्य और प्रसन्नता-भरे स्वर में पूछा।

"हां···आपके पति कब से गुम हैं?"

"परसों रात से," सतवन्ती ने कहा और फिर कुछ समझते हुए बोली, "नहीं, नहीं, मेरे पति किसीकी हत्या नहीं कर सकते।"

"आप सोमदत्त की हत्या पर प्रसन्न दिखाई दे रही हैं," मेजर बोला।

"हां। मैं जानती थी कि वह अगर अब भी यहां आ गया तो मेरे अंदर की नारी उसके सामने फिर कमज़ोर पड़ जाएगी।"

"मिसेज़ सतवन्ती, क्या आप यह जानती हैं कि मृतक सोमदत्त कपूर के सूटकेस में एक फोटो मिला है। वह फोटो आपका है इसलिए मैंने आपको पहचान लिया।"

"मेरा फोटो सोमदत्त कपूर के सूटकेस से निकला है?"

"जी हां," मेजर ने कहा, "उसके पास आपका फोटो कैसे पहुंच गया और वह उसे अपने सूटकेस में क्यों रखता था?"

"मैंने उससे कभी प्यार किया था—अपने विवाह से पहले"

"ओह—सोमदत्त कपूर कहीं आपको ब्लैकमेल तो नहीं कर

था ?"

"नहीं, छः साल से तो उसका कहीं पता ही नहीं था कि वह कहां है ।"

"मिसेज़ सतवन्ती, आपने बताया कि आपके पति परसों शाम से गुम हैं । आपके पति के गुम होने में और सोमदत्त की हत्या में गहरा सम्बन्ध दिखाई देता है । क्या आपके पति को मालूम था कि आप विवाह से पहले सोमदत्त कपूर से प्यार करती थीं ?"

"मुझे ऐसा लगता है कि मेरे पति को इस बात का पता लग गया था ।"

"आप कहती हैं कि दस वर्ष पहले आपके पति बहुत ईर्ष्यालु थे । क्या उस ईर्ष्या की आग अब भी उनके मन में नहीं जल रही थी ?"

"कुछ कह नहीं सकती ।"

"खैर, आप यह बताइए कि आप मेरे पास किस विचार से आई हैं ?"

"मैं चाहती हूं कि आप मेरे पति को तलाश कीजिए। और इस बात का पता लगाइए कि मेरी और मेरे पति की कौन हत्या करना चाहता है ।"

"मिसेज़ सतवन्ती, पहले आप यह बताइए कि आपको यह संदेह क्यों है कि कोई आपको और आपके पति को मार डालना चाहता है ?"

"मुझपर दो बार घातक आक्रमण हो चुका है ।"

"आपपर दो बार घातक आक्रमण हो चुका है ?"

"जी हां ।"

"कब ?"

"आज सुबह । मैं सुबह छः बजे दूध के डिपो से दूध लेने जाती हूं । आज सुबह जब मैं दूध लेने जा रही थी तो किसीने मुझे मोटर के नीचे लेकर कुचलने की कोशिश की ।"

"वह कौना था ?"

"मैं उसे देख नहीं पाई । क्योंकि वह बड़ी तेजी से मोटर दौड़ाकर ले गया । मैं केवल उसकी पीठ ही देख पाई । उसने सिलेटी रंग की बुश्शर्ट पहन रखी थी ।"

"और दूसरी बार आपपर आक्रमण कब हुआ ?"

"शाम को दूध लाने के बाद। मैं डिपो से दूध लाई । मैंने एक बिल्ली पाल रखी है । क्योंकि मेरे कोई बच्चा नहीं है ।

मैं दूध रखकर घर के सामने सब्ज़ी खरीदने गई। वापस आई तो मैंने देखा कि दूध की बोतल के पास बिल्ली मरी पड़ी थी और बोतल में से थोड़ा-सा दूध कम था। मैं हैरान हुई कि दूध की बोतल का ढक्कन कैसे खुल गया। मेरे पीछे कौन आया जो दूध में ज़हर मिला गया। अगर बिल्ली ने दूध न पिया होता तो मेरी मृत्यु निश्चित थी। मैंने दूध की बोतल अपने पड़ोसी को दिखाई तो उसने दूध की जांच करने के बाद मुझे बताया कि दूध में पोटाशियम साइनाइड मिला हुआ है जो बीस आदमियों को मौत के घाट उतार सकता है। इन दो बातों से मुझे संदेह होता है कि कोई मुझे और मेरे पति को मार डालना चाहता है।"

"आपके पति को नहीं केवल आपको मार डालना चाहता है," मेजर ने कहा, "यह भी हो सकता है कि आपके पति ही आपको मार डालना चाहते हों।"

"यह आप क्या कह रहे हैं?"

"मैं ठीक कह रहा हूं। आपको कुछ दिनों के लिए अपना मकान छोड़कर किसी दूसरे मकान में चले जाना चाहिए।"

"यह नहीं हो सकता। अगर मेरे पति वापस आ गए और उन्होंने मुझे घर पर न पाया तो अकारण ही उनके मन में सौ अंदेशे जाग उठेंगे।"

"तो फिर आप अपने घर में ही रहिए। लेकिन किसी अजनबी के लिए दरवाज़ा न खोलिए। आपके पति का नाम क्या है?"

"मि० राजीव प्रभाकर।"

"क्या काम करते हैं?"

"खिलौनों की एक फर्म 'वंडर लैंड' में कैशियर हैं।"

"यह फर्म कहां है?"

"हार्नबी रोड पर।"

मेजर ने सतवन्ती के पति का नाम, फर्म का नाम और पता नोट कर लिया।

"चलिए, मैं आपको छोड़ आऊं," मेजर ने कहा और दूध की बोतल सेफ में बंद कर दी ताकि उसकी अनुपस्थिति में कोई दूध पी न जाए।

फिर वह सतवन्ती को कार में बैठाकर उसके घर की ओर चल पड़ा।

# ६. कुएं में लाश

अगली सुबह मेजर बलवन्त इंस्पेक्टर राना के पास पहुंचा। वह सोनिया, डोरा और मालती के आने से पहले ही नाश्ता करके चल पड़ा था। सुधीर अभी सोया पड़ा था। इंस्पेक्टर राना ने मेजर को सुबह साढ़े आठ बजे अपने यहां देखा तो वह समझ गया कि कोई गंभीर मामला है। वह मेजर को अपने आफिस में ले गया।

मेजर बलवन्त ने इंस्पेक्टर राना की मेज़ पर दूध की एक बोतल रखी तो राना ने चौंककर पूछा, "यह क्या है ?"

"इस बोतल में ज़हर मिला दूध है," मेजर ने कहा, "कोई मिसेज़ सतवन्ती को मार डालना चाहता था जिसका पति दो दिन से गुम है। सतवन्ती वही स्त्री है जिसका फोटो सोमदत्त कपूर के सूटकेस से निकला था।"

"ओह," इंस्पेक्टर ने कहा।

"सतवन्ती राजीव प्रभाकर की पत्नी है जो खिलौनों की एक फर्म 'वंडर लैंड' में कैशियर था। सतवन्ती का कहना है कि जबसे उसका पति गुम हुआ है तब से उसपर दो बार घातक आक्रमण हो चुका है। एक बार किसीने उसे कार के नीचे लेने की कोशिश की और दूसरी बार किसीने उसकी दूध की बोतल में जहर मिला दिया। दूध पीकर अगर उसकी बिल्ली न मर जाती और यही दूध सतवन्ती ने पी लिया होता तो उसकी मृत्यु निश्चित थी।"

"सतवन्ती की हत्या कौन करना चाहता है ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"मेरा विचार है कि राजीव प्रभाकर ही अपनी पत्नी को मार डालना चाहता है," मेजर ने कहा।

"क्यों ?"

"एक पुरानी ईर्ष्या के कारण, जो अभी तक राजीव के दिल में कांटे की तरह खटक रही है," यह कहकर मेजर ने सोमदत्त कपूर और सतवन्ती के घनिष्ठ सम्बन्धों के विषय में बताया।

"यह बात है। फिर तो सोमदत्त कपूर की हत्या और राजीव प्रभाकर के गुम होने में भी घनिष्ठ सम्बन्ध हो सकता है," इंस्पेक्टर ने कहा, "अब आप क्या चाहते हैं ?"

"सबसे पहले तो मैं इस दूध की जांच कराना चाहता हूं। आप यह बोतल विषों के विशेषज्ञ के पास भेज दीजिए," मेजर ने कहा, "इसके बाद हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि 'वंडर लैंड' फर्म के कर्मचारियों की कैशियर राजीव प्रभाकर के विषय में क्या राय है ?"

इंस्पेक्टर राना ने मेज़ पर पड़ी घंटी बजाई। एक कांस्टेबल अंदर आया। इंस्पेक्टर ने दूध की बोतल उसे देते हुए कहा, "इस बोतल को संभालकर ले जाना। यह ज़हर से भरी हुई है। इसे डा० महाजन के पास ले जाओ। उनसे कहना कि इंस्पेक्टर साहब जल्द से जल्द इस दूध की रासायनिक जांच की रिपोर्ट चाहते हैं।" कांस्टेबल चला गया तो इंस्पेक्टर ने मेजर से पूछा, "आप राजीव प्रभाकर के रवैये के बारे में उसके साथी कर्मचारियों की राय क्यों जानना चाहते हैं ?"

"मुझे यह संदेह हो रहा है कि राजीव प्रभाकर को यह मालूम हो गया था कि सोमदत्त कपूर बम्बई आ रहा है। वर्षों से वह प्रतिशोध की आग दबाए बैठा था। उसे बदला लेने का सुनहरी मौका मिल गया। उसने सोमदत्त कपूर को मार डाला। और उसकी लाश उसकी परित्यक्ता पत्नी के गुड़ियाघर में रखकर उसे अपने पति की हत्या के केस में फंसाने की कोशिश की। मैं आपको एक बात बता दूं इस केस की विशेषता यह है कि इस केस से जितने भी लोग सम्बन्धित हैं, उनमें से हरएक का व्यक्तित्व दुहरा है। हर घटना के दो पहलू हैं।"

इंस्पेक्टर राना कुछ सोच में पड़ गया। फिर उसने कहा, "राजीव प्रभाकर सोमदत्त की हत्या का प्रबन्ध कैसे कर पाया होगा। चित्रकार ओंकार यादव के स्टूडियो से गुड़िया ले जाना। फिर दो राजस्थानी स्त्रियों के कपड़े प्राप्त करना, फिर दो आदमी तैयार करना जो गुड़िया के अन्दर छिपी हुई लाश गुड़ियाघर के अंदर पहुंचाकर लाश को गुड़िया से बाहर निकालकर रख आएं।"

"बस यही प्रश्न तो हल करना है कि राजीव प्रभाकर ने सोमदत्त की हत्या करने के लिए यह सब कुछ कैसे किया ? उसने यह स्कीम कैसे बनाई ? और उसे कैसे क्रियान्वित किया ?" मेजर बोला।

"आप सवेरे ही आ गए हैं। आपके लिए कॉफी मंगवाता हूं। क्योंकि अभी दूकानें खुलने में पचास मिनट बाकी हैं।"

',चलिए, कॉफी मंगवाइए।''

इंस्पेक्टर राना ने एक कांस्टेबल को कॉफी लाने का आदेश दिया।

मेजर और इंस्पेक्टर कॉफी पी रहे थे कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। इंस्पेक्टर ने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया, "हैलो!"

दूसरी ओर से आवाज़ आई, "क्या इंस्पेक्टर साहब हैं?"

"बोल रहा हूं।"

"नमस्ते इंस्पेक्टर साहब, मैं माटुंगा हल्के का इंस्पेक्टर चौधरी लेखराम बोल रहा हूं।"

"कहिए चौधरी साहब, कैसे याद फर्माया?"

"इंस्पेक्टर साहब, घंटाभर हुआ, किंग सर्किल के एक कुएं से एक लाश बरामद हुई है। कुएं में पानी बहुत कम था। इस कुएं का पानी इस्तेमाल नहीं किया जाता। आज सुबह सवेरे कुछ कुत्ते कुएं के चारों ओर इकट्ठे हो गए और भौंकने लगे। लोगों को संदेह हुआ। कुएं के चारों ओर भीड़ लग गई। शोर मच गया कि कुएं के अंदर लाश है। लाश निकाली गई और पुलिस को सूचना दे दी गई। मैं फौरन वहां पहुंच गया। कुएं से जिस आदमी की लाश बरामद हुई है उसका सम्बन्ध आपके हल्के के कत्ल केस से मालूम होता है। इसलिए आप इस लाश के सम्बन्ध में आवश्यक कार्रवाई कीजिए।"

"आपको कैसे पता चला कि जिस आदमी की लाश आपके हल्के के कुएं से बरामद हुई है उसका सम्बन्ध मेरे हल्के के कत्ल केस से है?"

"उस आदमी के सीने पर गोली का घाव है। उसकी गर्दन में आरपार चाकू घुसा हुआ है। और गले में रस्सी का फंदा भी पड़ा हुआ है। आपके हल्के में पाई गई लाश की दशा भी बिल्कुल ऐसी ही थी। मैंने अखबार में उस लाश का सारा विवरण पढ़ा था। अन्तर केवल इतना है कि मेरे हल्के में मिली लाश के पास से किसी प्रकार के कागज़ात के बजाय कुछ जेवर मिले हैं।"

"आपके विचार से लाश कुएं में कितनी देर तक पड़ी रही होगी?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"डाक्टर की रिपोर्ट है कि उस व्यक्ति की हत्या हुए लगभग अड़तालीस घंटे हो चुके हैं। डाक्टर की रिपोर्ट से भी प्रकट होता

है कि इस लाश का कालबादेवी के गुड़ियाघर में मिलने वाली लाश से गहरा सम्बन्ध है। मेरा विचार है कि दोनों आदमियों की हत्या एक ही दिन, एक ही समय, एक ही ढंग से की गई। आप फौरन चले आइए।"

"मैं आ रहा हूं। मेरे साथ मेजर बलवन्त भी आ रहे हैं, जो इस समय मेरे पास बैठे हैं।"

"मेजर बलवन्त···? हमारे देश के विख्यात जासूस!" दूसरी ओर से इंस्पेक्टर चौधरी लेखराम ने कहा।

"जी हां, वही। लाश कहां है?"

"माटुंगा के पुलिस थाने में।"

"हम जल्द ही पहुंच रहे हैं," यह कहकर इंस्पेक्टर राना ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

"किसकी लाश मिली है?"

"यह तो मालूम नहीं हो सका। हां, इस लाश से आपके इस विचार की पुष्टि अवश्य हो जाती है कि इस केस की हर घटना दुहरी है। क्योंकि किंग सर्किल के कुंए से बरामद होने वाली लाश के सीने पर गोली का घाव है, एक चाकू उसकी गर्दन के आरपार है और गर्दन में रस्सी का फंदा भी पड़ा हुआ है।"

मेजर ने यह बात सुनी तो उसके होंठ गोल हो गए। वह सीटी बजाता हुआ खड़ा हो गया।

मेजर और इंस्पेक्टर माटुंगा के थाने में पहुंचे तो इंस्पेक्टर चौधरी लेखराम ने उनका बड़े तपाक से स्वागत किया। मेजर का हाथ अपने हाथ में लेकर इंस्पेक्टर चौधरी देर तक दबाता रहा। मेजर से मिलकर उसे बहुत ही प्रसन्नता हुई।

"आप हमें लाश के पास ले चलिए," मेजर ने इंस्पेक्टर चौधरी से कहा।

इंस्पेक्टर चौधरी उन दोनों को एक कमरे में ले गया, जिसमें एक मेज पर चादर से ढकी लाश रखी हुई थी। लाश से बहुत बदबू आ रही थी।

मेजर ने चादर एक ओर हटा दी। वह चवालीस वर्ष के किसी आदमी की लाश थी। उसके बदन पर पुराना सूट था। लेकिन लगता था, सूट के मालिक ने सूट को वर्षों तक संभालकर रखा होगा। पुराना होते हुए भी सूट खराब नहीं हुआ था।

हालांकि चाकू गर्दन के आरपार था लेकिन कमीज़ के कालर पर बंधी लाल टाई अपनी जगह से खिसकी न थी। मृतक के कोट की ऊपरी जेब में तीन फाउन्टेनपेन थे।

मेजर ने मृतक की उंगलियों को देखकर घोषणा की, "यह लाश किसी पुराने क्लर्क की है। मेरा अनुमान है कि यह लाश सतवन्ती के पति राजीव प्रभाकर की है, जो 'वंडर लैंड' फर्म में कैशियर था।"

मेजर की यह बात सुनकर दोनों इंस्पेक्टर हैरान रह गए। मेजर की नज़रें और उसके विचार सचमुच चमत्कारपूर्ण होते थे।

"ऐसा कीजिए, अपना एक आदमी जल्दी से भाईकला भेजिए," मेजर ने कहा, "मैं सतवन्ती का पता लिख देता हूं। कल रात ही को मैं उसके घर उसे छोड़कर आया था। जीप में सतवन्ती को यहां बुला लिया जाए।"

इंस्पेक्टर चौधरी ने तुरन्त एक हवलदार को जीप लेकर भाईकला भेज दिया।

"आप मुझे वह ज़ेवर दिखाइए जो इस लाश की जेबों से बरामद हुए हैं," मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर चौधरी उन्हें लेकर अपने कमरे में आ गया। उसने अपनी मेज़ की दराज खोलकर टाफी और गोलियों वाला एक डिब्बा निकाला और मेजर के सामने रख दिया।

"यह डिब्बा इस लाश के कोट की जेब से निकला है।"

ज़ेवरों को देखने के बाद मेजर ने कहा, "ये ज़ेवर असली हैं और कीमती हैं। मेरे अनुमान से इनका मूल्य पंद्रह हज़ार रुपये से कम न होगा। इन ज़ेवरों के देखने से पता चलता है कि इसकी हत्या धन के कारण नहीं हुई। लेकिन क्योंकि इस केस में हर बात दुहरी है इसलिए यह भी हो सकता है कि इस डिब्बे में और अधिक ज़ेवर रहे हों। और हत्यारा काम के ज़ेवर निकालकर इन्हें छोड़ गया हो।"

दोनों इंस्पेक्टर फिर चकित होकर मेजर की ओर देखने लगे।

मेजर अभी तक ज़ेवरों को ही देख रहा था। उसने कहा, "इस गरीब क्लर्क के पास इतने कीमती ज़ेवर कहां से आए?" इतना कहकर मेजर ने चुटकी बजाई और फिर कहा, "मेरा विचार है कि ये ज़ेवर हत्यारे ने इसकी जेब में रखे। ये ज़ेवर

इसके नहीं हैं। हत्यारे ने ये ज़ेवर मृतक की जेब में इसलिए रखे कि पुलिस यह समझे कि हत्या ज़ेवरों के कारण हुई है। लेकिन हत्यारा जल्दी में था इसलिए ज़ेवरों को नहीं ले जा सका।"

"मेजर साहब, भगवान ने आपको हर चीज़ की गहराई तक पहुंचने की अपार शक्ति दी है," इंस्पेक्टर चौधरी बोला।

वे तीनों आधे घंटे तक इस नई वारदात पर विचार-विमर्श करते रहे। इतने में एक जीप थाने के कम्पाउंड में आकर रुकी। मेजर आफिस की खिड़की के सामने बैठा था। उसने सतवन्ती को जीप से उतरते हुए देखा। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। मेजर को मनुष्य मात्र के प्रति गहरा स्नेह और सहानुभूति थी। वह इंस्पेक्टर चौधरी के आफिस से निकल आया ताकि सतवन्ती को सहारा दे सके। उसे डर था कि अगर लाश सचमुच ही राजीव प्रभाकर की हुई तो कहीं सतवन्ती बेहोश होकर गिर न पड़े।

सतवन्ती को तसल्ली देते हुए मेजर उसे उस कमरे में ले गया जहां लाश रखी हुई थी। सतवन्ती ने डरते-डरते आंखें मींचकर लाश देखी और फिर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। मेजर समझ गया कि लाश सचमुच राजीव प्रभाकर की ही है।

बड़ी कोशिशों के बाद सतवन्ती को होश आया तो उसके रोने-चीखने से लोगों के कलेजे फटने लगे। मेजर ने बड़ी कठिनाई से उसे शान्त किया। जब उसका रोना कुछ कम हुआ तो मेजर ज़ेवरों का डिब्बा उठा लाया। उसने डिब्बा सतवन्ती के सामने रखकर पूछा, "क्या ये ज़ेवर आपके हैं ?"

सतवन्ती ने ज़ेवर देखे और ना में सिर हिला दिया।

"मिसेज़ सतवन्ती, ये ज़ेवर आपके पति के कोट की जेब से निकले हैं। वह ज़ेवर गिरवी रखने का धंधा तो नहीं करते थे ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं," सतवन्ती ने धीमे से कहा।

"अच्छा तो यह बताइए, जब आपके पति गुम हुए तो क्या उनके नाम कोई पत्र भी आया था ?"

'जी हां, आया था।"

"उस पत्र में क्या लिखा था ?" मेजर ने पूछा।

"उन्होंने वह पत्र मुझे नहीं दिखाया। पढ़कर फाड़ दिया था। और प्रसन्न होकर कहा था, 'अब मेरे मन की साध पूरी होने वाली है।' "

"क्या उन्होंने यही कहा था ?"

"जी हां, मुझे अच्छी तरह याद है। पत्र पढ़ने के बाद ही वह कोई गीत गुनगुनाने लगे थे।"

मेजर मुस्कराया और उसके होंठ गोल हो गए। लेकिन उसने सीटी नहीं बजाई।

"मिसेज़ सतवन्ती, आप अब अपने घर जाइए।" यह कहकर मेजर ने उस हवलदार को आदेश दिया कि वह जीप द्वारा सतवन्ती को उसके घर पहुंचा दे।

सतवन्ती चुपचाप उठकर हवलदार के साथ चल दी। वह इस तरह चल रही थी जैसे वह जीती-जागती स्त्री नहीं, केवल एक परछाईं है।

सतवन्ती जीप में बैठकर चली गई तो मेजर ने कहा, "आपने सुना, सतवन्ती ने बताया था कि उसके पति को गुम होने से पहले एक पत्र मिला था जिसे उसने पढ़ने के बाद फाड़ डाला था। वह प्रसन्न हुआ था और कोई गीत गुनगुनाने लगा था। उसने कहा था कि उसके मन की साध पूरी होने वाली है। क्या आप बता सकते हैं कि वह क्यों प्रसन्न हुआ था ?"

"हमारी समझ में तो कुछ आया नहीं," दोनों इंस्पेक्टरों ने एकसाथ कहा।

"मैं आपको बताता हूं कि राजीव प्रभाकर पत्र पाकर क्यों इतना प्रसन्न हुआ था। किसीने उसे सूचना दी कि सोमदत्त कपूर अगले दिन बम्बई पहुंच रहा है। शायद पत्र में यह भी बता दिया कि वह किस ट्रेन से आ रहा है। राजीव प्रभाकर रात ही को बदला लेने की धुन में घर से चल पड़ा ताकि वह अपनी इच्छानुसार सोमदत्त कपूर से बदला ले सके। लेकिन उसे खबर न थी कि वह जो व्यवहार सोमदत्त कपूर के साथ करने वाला है वही व्यवहार उसके साथ भी होने वाला है। वह सोमदत्त कपूर को मार डालने के इरादे से निकला था लेकिन स्वयं मारा गया। क्योंकि इस केस की हर घटना दुहरी है इसलिए बात इसके विपरीत भी हो सकती है।"

"वह क्या ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"बात यों भी हो सकती है कि राजीव प्रभाकर ने अपने कुछ साथियों की सहायता से सोमदत्त कपूर की हत्या की हो। लेकिन कुछ और लोग भी थे जो सोमदत्त कपूर और राजीव प्रभाकर

दोनों को ही मार डालना चाहते थे। राजीव प्रभाकर ने जिस अन्दाज़ से सोमदत्त कपूर की हत्या की दूसरे लोगों ने उसी अंदाज़ से राजीव प्रभाकर की हत्या कर दी। उन्होंने सोमदत्त कपूर की लाश तो गुड़िया में बंद करके कालबादेवी के गुड़ियाघर में उसकी परित्यक्ता पत्नी के पास पहुंचा दी, लेकिन राजीव प्रभाकर की लाश कुंए में फेंक दी। इस विश्लेशण से एक पेचीदा गुत्थी सामने आती है।"

"वह गुत्थी क्या है ?" इंस्पेक्टर चौधरी ने पूछा।

"वह गुत्थी यह है। राजीव प्रभाकर की लाश किंग सर्किल के कुंए में मिली है। और सोमदत्त कपूर बम्बई पहुंचते ही सबसे पहले किंग सर्किल में पहुंचा। राजीव प्रभाकर और सोमदत्त की किंग सर्किल में ही हत्या की गई। या उन्हें कहीं दूर ले जाकर मारा गया।"

"मालूम तो यही होता है कि इन दोनों की हत्या किंग सर्किल में ही की गई," इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"मेरी राय अलग है। मैं इसपर विचार करने के बाद ही कुछ कह सकूंगा। अब मैं चलता हूं," मेजर ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

"क्यों, क्या आप खिलौनों की फर्म 'वंडर लैंड' में नहीं चलना चाहते ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"नहीं, अब इसकी आवश्यकता नहीं रही।"

मेजर बलवन्त अपने आफिस पहुंचा तो उसके सभी असिस्टेंट तैयार बैठे थे। मेजर ने उनको नई घटना के सम्बन्ध में बताया तो सब चकित रह गए।

"हमें किंग सर्किल में अपनी सरगर्मियों को तेज़ कर देना चाहिए," मालती बोली।

"बिल्कुल ठीक। तुम सब किंग सर्किल के इलाके में पहुंचकर बिखर जाओ। अधिकतर ध्यान सरोज कपिल पर दो।"

वे सब किंग सर्किल चले गए। मेजर ने नौकरानी से कॉफी मंगवाई और सारे केस पर नये सिरे से विचार करने लगा, जिसकी हर घटना दुहरी थी। काफी सोच-विचार के बार उसने कुछ प्वाइन्ट नोट किए। फिर उसने खाना खाया और सो गया।

मेजर को आंख शाम को पांच बजे तब खुली जब उसके

आफिस के दरवाज़े को किसीने खटखटाया। उसने पलंग पर से उठकर जल्दी से अपने बाल संवारे और बैडरूम से निकलकर आफिस में आ गया। उसने दरवाज़ा खोला तो उसने दरवाज़े पर एक स्वस्थ और सुन्दर व्यक्ति को खड़े देखा। उस व्यक्ति के चेहरे से उसकी धन-सम्पन्नता टपक रही थी। उसके हाथ में शाम का अखबार था।

उस आदमी के पीछे मेजर का चौकीदार भी खड़ा हुआ था।

"फर्माइए," मेजर ने कहा और फिर उस व्यक्ति के हाथ में पकड़े हुए अखबार की ओर देखने लगा। अखबार के मुखपृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में कुएं से निकली राजीव प्रभाकर की लाश की कहानी प्रकाशित की गई थी।

"मैं एक बहुत ही आवश्यक मामले में आपसे सलाह लेने आया हूं। मैंने आपका नाम अखबार में प्रकाशित इस समाचार के साथ पढ़ा और आपका पता पुलिस से मालूम करके यहां चला आया," उस व्यक्ति ने कहा।

"तशरीफ लाइए," मेजर ने उसे रास्ता देते हुए कहा और चौकीदार से कहा कि वह अपनी ड्यूटी पर चला जाए।

मेजर ने उस व्यक्ति को अपनी मेज़ के सामने रखी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और फिर अपनी रिवाल्विंग चेयर पर जा बैठा।

उस आदमी की ठोढ़ी गोल थी और गाल लटके हुए थे। उसने कुर्सी पर बैठने के बाद कहा, "मेरा नाम लखपतराय कठालिया है। मैं ऊनी कपड़ों की मिल 'ड्रेस वैल' का मालिक हूं। आपने शाम का अखबार तो पढ़ा होगा।"

"जी नहीं, लेकिन मैं जानता हूं कि उस खबर में क्या है, जिसमें आपने मेरा नाम भी पढ़ा है।"

लखपतराय चकित होकर मेजर की ओर देखने लगा।

## ७ जेवर

मेजर के चेहरे पर गंभीरता छाई हुई थी।

लखपतराय कठालिया ने चौंकते हुए कहा, "अगर आप यह जानते हैं कि इस खबर में क्या है तो मुझे विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। मेजर साहब, मेरा और एक भले

घर की महिला का सम्मान आपके हाथ में है।"

"वह क्यों ?" मेजर ने हंसते हुए पूछा।

"आप हंस रहे हैं ?" कठालिया बोला।

"हंस इसलिए रहा हूं कि प्रत्येक व्यक्ति का मान-सम्मान उसके अपने हाथ में होता है। आपने कोई ऐसा काम किया है जिससे आपका सम्मान खतरे में पड़ गया है। और आप अपने सम्मान को उस खतरे से बचाने के लिए मेरी सहायता प्राप्त करना चाहते हैं।"

"आप ठीक कहते हैं मेजर साहब, हर आदमी की इज़्ज़त उसके अपने हाथ में होती है। और आपका यह कहना भी सच है कि आदमी अपने कर्मों से ही अपनी इज़्ज़त को खतरे में डालता है। और फिर उस इज़्ज़त को बचाने के लिए दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है," कठालिया ने व्यापारियों जैसे मीठे और विनम्र स्वर में कहा, "मेरी और एक भले घर की महिला की इज़्ज़त बचा लीजिए।"

"आपकी इज़्ज़त को खतरा कैसे पैदा हो गया ?"

"कुएं से राजीव प्रभाकर नामक व्यक्ति की लाश बरामद हुई है। और उसके कोट की जेब से कुछ ज़ेवर मिले हैं।"

"जी हां," मेजर ने कहा।

"जो ज़ेवर राजीव प्रभाकर के पास मिले हैं वे उन ज़ेवरों का एक भाग हैं जो मैंने उस महिला को दिए थे।"

मेजर उछल पड़ा। वह अब कठालिया की बात और अधिक दिलचस्पी से सुनने लगा।

"आपको कैसे पता चला कि जो ज़ेवर राजीव प्रभाकर के पास मिले हैं, उन जेवरों का एक हिस्सा हैं जो आपने किसी महिला को दिए थे !" मेजर ने पछा।

"इस खबर में उन ज़ेवरों का परा-परा विवरण दिया गया है। उनका वज़न और बनावट भी दी है। उसमें जड़े हीरों का रंग-रूप और बनावट भी दी गई हैं। वे कुल मिलाकर बाईस हज़ार रुपये के ज़ेवर हैं और मैंने उस महिला को लगभग एक लाख रुपये के ज़ेवर दिए थे।"

"एक लाख रुपए के ज़ेवर ?—आपने इतने मूल्य के ज़ेवर उसे क्यों दिए ? क्या वह आपकी पत्नी है ?"

कठालिया हंसने लगा। हंसते हुए उसका पेट ज़ोर-ज़ोर से

हिल रहा था। उसने कहा, "मेजर साहब, धनी व्यक्ति की एक पत्नी होती है, जो उसके घर की शोभा होती है और एक या दो प्रेमिकाएं या रखैलें होती हैं। मैंने एक लाख रुपये के ज़ेवर अपनी एक रखैल को दिए थे।"

"आपकी रखैल का नाम क्या है ?"

"मैं नहीं बता सकता।"

"तो फिर इतना ही बता दीजिए कि वह रहती कहां है ?"

"मैं यह भी नहीं बता सकूंगा।"

"फिर आप मुझसे चाहते क्या हैं ?"

"सबसे पहले तो मैं आपको यह बता दूं कि मेरा या मेरी रखैल का हत्या की किसी भी वारदात से कोई सम्बन्ध नहीं है। तीन दिन हुए, मेरी रखैल के ज़ेवर चुराए गए। उनमें से कुछ ज़ेवर राजीव प्रभाकर के कोट की जेब से बरामद हुए हैं। बाकी ज़ेवर किसी चोर के पास होंगे। हो सकता है कि राजीव प्रभाकर ही चोर हो। और बाकी ज़ेवर उसके घर या किसी दूसरी जगह हों। मैं वह बाकी ज़ेवर चाहता हूं जो लगभग अस्सी हज़ार रुपये के हैं। अगर आप उन ज़ेवरों को खोज निकालेंगे तो मैं आपको बीस हज़ार रुपये दूंगा। इस समय ये दो हज़ार रुपये आपको भेंट हैं," यह कहकर कठालिया ने अपने कोट की जेब में से एक बटुआ निकाला और दो हज़ार रुपये के नोट गिनकर मेज़ पर रख दिए।

मेजर नोटों की ओर देखते हुए सोच में डूब गया। वह इस व्यक्ति का प्रस्ताव ठुकराना नहीं चाहता था। लेकिन उसने एक विशेष कारण से अपना विचार तुरंत बदल दिया और बोला, "मैं आपका प्रस्ताव एक शर्त पर स्वीकार कर सकता हूं।"

"वह शर्त क्या है ?"

"अगर इन ज़ेवरों का सम्बन्ध इन दोनों हत्याओं से हुआ तो आपको अपनी रखैल का नाम बताना पड़ेगा।"

"मैं बता दूंगा," कठालिया ने कहा, "आपसे मेरी एक प्रार्थना और भी है। पुलिस को यह किसी भी दशा में नहीं मालूम होना चाहिए कि राजीव प्रभाकर के पास से जो ज़ेवर मिले हैं वे मैंने अपनी रखैल को दिए हैं।"

"आप चिन्ता न करें," यह कहकर मेजर ने राइटिंग पैड कठालिया की ओर खिसका दिया और बोला, "इसपर अपने

बंगले का पता और फोन नम्बर लिख दीजिए ।"

कठालिया ने अपने बंगले का पता और अपना फोन नम्बर लिख दिया ।

लखपतराय कठालिया के जाने के बाद मेजर सोचने लगा कि राजीव प्रभाकर की जेब में ज़ेवर कहां से आए ? क्या उसीने ज़ेवर चुराए थे ? क्या उसके हत्यारे कुछ ज़ेवर ले गए और कुछ छोड़ गए ? अचानक मेजर को एक खयाल आया । वह दौड़कर अपने आफिस के बरामदे में गया । कठालिया अभी ज़्यादा दूर नहीं गया था ।

मेजर ने उसे पुकारकर कहा, "ज़रा सुनिए ।"

कठालिया लौट आया ।

मेजर ने कहा, "दो मिनट के लिए तशरीफ लाइए ।"

कठालिया आफिस में आकर फिर बैठ गया ।

"आपने ये ज़ेवर कहां से खरीदे थे ?"

कठालिया कुछ सोचने लगा और इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हिचकिचाया ।

"मैं यह सुनने के लिए तैयार नहीं हूं कि आप इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते," मेजर ने कहा, "बताइए, आपने ये ज़ेवर किस दूकान से खरीदे थे ?"

"मैंने ये ज़ेवर किसी दूकान से नहीं खरीदे थे," कठालिया ने कहा ।

कठालिया का उत्तर सुनकर मेजर बहुत हैरान हुआ ।

"फिर ये ज़ेवर आपके पास कहां से आए ?"

"ये ज़ेवर मैंने एक विदेशी स्मगलर से खरीदे थे ।"

"विदेशी स्मगलर से ?"

"जी हां—सस्ते मिल गए थे । इसीलिए इनकी बनावट विदेशी है ।"

'ये ज़ेवर आपने अपनी रखैल को कब दिए ?"

"आज से दस दिन पहले ।"

"क्या वह विदेशी स्मगलर अभी तक बम्बई में मौजूद है ?"

"नहीं, वह तेहरान चला गया ।"

"अब आप जा सकते हैं," मेजर ने कहा ।

कठालिया के जाने के बाद मेजर ने दो हज़ार रुपयों के नोट तिजोरी में बंद कर दिए और फिर अपनी रिवाल्विग चेयर पर

बैठकर अपनी नोटबुक में तेज़ी से कुछ लिखने लगा।

रात के साढ़े आठ बजे उसके सभी असिस्टेंट लौट आए। वे कोई विशेष समाचार नहीं लाए थे। लेकिन उन्होंने मेजर को जो बात बताई वह मेजर के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण थी। क्योंकि मेजर ने उन्हें अभी तक ज़ेवरों के विषय में कुछ नहीं बताया था।

मालती बोली, "किंग सर्किल के इलाके में हमें कोई संदिग्ध आदमी नहीं मिला। मिसेज़ सरोज कपिल सारे दिन अपने घर में रहीं। शाम के साढ़े छः बजे वह बन-संवरकर निकलीं। टैक्सी ली और माहिम के धनी लोगों के बंगलों के पास जाकर उतर गईं।"

मेजर ने मालती की बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "मिसेज़ सरोज कपिल 'गुलशन विला' में चली गईं और ४२ नम्बर फ्लैट के सामने जाकर खड़ी हो गईं। गुलशन विला की दूसरी पूरी मंज़िल में एक ही परिवार रहता है।"

मालती और डोरा भौंचक्की रह गईं कि मेजर को इस बात का कैसे पता चला।

मेजर ने असल में पैड पर लखपतराय कठालिया का पता पढ़कर यह बात कही थी।

"लगता है आप हमारे पीछे थे," डोरा बोली।

मेजर हंस पड़ा, "मुझे तुम लोगों का पीछा करने की क्या जरूरत थी! मेरे पास जादू का आईना है जिसमें मुझे सारी दुनिया का हाल दिखाई दे जाता है कि दुनिया में क्या हो रहा है और कौन क्या कर रहा है।" और फिर उसने लखपतराय कठालिया के आने और ज़ेवरों की चोरी के विषय में सब कुछ बता दिया।

फिर मेजर ने क्रेडिल पर से रिसीवर उठाया और पैड पर देखते हुए कठालिया का नम्बर मिलाया।

दूसरी ओर से किसी स्त्री की आवाज़ सुनाई दी, "हैलो!"

"मैं मि०कठालिया से बात करना चाहता हूं," मेजर ने कहा।

"वह तो अपने प्राइवेट रूम में जा चुके हैं," उस स्त्री ने उत्तर दिया, "आप कौन हैं?"

"यही प्रश्न मैं आपसे करना चाहता हूं कि आप कौन हैं?"

"मैं मि० कठालिया की प्राइवेट सेक्रेटरी हूं। मेरा नाम स्टेला है।"

"क्या इस समय मि० कठालिया से बात नहीं हो सकती ?"

"कठिन है।"

"क्या इसलिए कि इस समय वह अपने प्राइवेट रूम में किसी महिला के साथ बिज़ी हैं ?" मेजर ने मुस्कराते हुए कहा।

"ओह···आप कौन हैं ?"

"मैं मेजर बलवन्त हूं। मि० कठालिया ने मुझे एक बहुत ज़रूरी काम सौंपा था। आप उनसे जाकर कहिए कि मेजर बलवन्त फोन पर उनसे बात करना चाहते हैं।"

"होल्ड ऑन प्लीज़," दूसरी ओर से मिस स्टेला ने कहा।

दो मिनट बाद फोन पर कठालिया की आवाज़ सुनाई दी, "हैलो मेजर साहब, क्या वे ज़ेवर मिल गए ?"

"भाग्य ने अगर इसी तरह साथ दिया तो मिल ही जाएंगे," मेजर ने हंसते हुए कहा, "अभी तो मुझे इस बात का पता चला है कि आपने एक लाख रुपये के ज़ेवर किस स्त्री को दिए थे। कहिए तो उसका नाम बता दूं।"

"बताइए।"

"मिसेज़ सरोज कपिल।"

"ओह मेजर साहब, आपको यह बात कैसे मालम हुई ?"

"यह मेरा व्यावसायिक रहस्य है, जिसे मैं बता नहीं सकता," मेजर ने कहकहा लगाते हुए कहा, "मि० कठालिया, इस समय मिसेज़ सरोज कपिल आपके पास ही हैं। क्या आप एक मिनट के लिए उन्हें फोन दे सकते हैं ?"

"अच्छा तो आप यह भी जानते हैं कि मिसेज़ सरोज कपिल इस समय मेरे पास हैं। मेजर साहब, आपके विषय में जैसा सुना था, वैसा ही आपको पाया। ठहरिए, मैं मिसेज़ कपिल को फोन देता हूं।"

एक मिनट के बाद फोन पर मिसेज़ सरोज कपिल की आवाज़ सुनाई दी, "मेजर साहब, नमस्ते।"

"नमस्ते, मिसेज़ सरोज कपिल, आज मुझे पहली बार मालम हुआ कि आपके जीवन के अनेक पहल हैं। और जिस पहल का मुझे आज पता चला है, वह बहुत ही आश्चर्यजनक है। मुझे आशा नहीं थी कि···।"

मिसेज़ सरोज कपिल ने मेजर की बात पूरी नहीं होने दी और बीच ही में बोल उठी, "इस संसार में नारी का अकेले जीना

बहुत ही कठिन होता है मेजर साहब। उसे अपने जीवन को कई पहलुओं में ढालना पड़ता है। वरना वह इस दुनिया में जिन्दा नहीं रह सकती।"

"मिसेज़ सरोज कपिल, क्या आप इसी समय मेरे पास आ सकती हैं ?" मेजर ने कहा, "अगर कोई कठिनाई हो तो मैं मि० कठालिया से आपको छुट्टी दिलवा सकता हूं।"

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं," दूसरी ओर से मिसेज़ सरोज कपिल ने शर्माते हुए कहा।

"आप फौरन मेरे पास पहुंच जाइए। आपको मेरा पता मि० कठालिया बता देंगे।"

"मैं आ रही हूं," सरोज कपिल ने कहा।

मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और मालती, डोरा और सोनिया से कहा, "अब तुम लोग जा सकती हो। मैं कल सुबह बताऊंगा कि तुम्हें क्या करना है," इसके बाद उसने सुधीर से कहा, "सुधीर, तुम चाहो तो जाओ, सो जाओ।"

"नहीं, मैं मिस डोरा और मालती के साथ जा रहा हूं। रात को देर से आऊंगा।"

"अच्छी बात है," मेजर ने कहा।

मेजर को इस बात की प्रसन्नता थी कि डोरा और सुधीर का प्यार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। उसे मालती की चिन्ता थी जो इन दिनों आवश्यकता से अधिक अकेलापन अनुभव कर रही थी। मेजर मन ही मन भगवान से प्रार्थना करता रहता था कि मालती के साथ भी किसीका रोमांस आरंभ हो जाए।"

सब लोग चले गए तो मेजर मिसेज़ सरोज कपिल की प्रतीक्षा करने लगा।

आधे घंटे के बाद एक टैक्सी उसके आफिस के सामने आकर रुकी और उसमें से मिसेज़ सरोज कपिल उतरी। वह मुस्कराती हुई मेजर बलवन्त के आफिस में आई। उसने टैक्सी ड्राइवर से कह दिया था कि वह उसका इंतज़ार करे।

"आइए, तशरीफ रखिए।"

मिसेज़ सरोज कपिल ने बैठते हुए कहा, "आपने मुझे अपने आफिस में क्यों बुलाया ?"

"इसलिए कि मैं आपसे यहां इत्मीनान से बात कर सकता हूं। मिसेज़ सरोज कपिल, मुझे आपपर संदेह होने लगा है।"

"कैसा संदेह ?"

"यह कि आपने ही अपने पति सोमदत्त कपूर या रामपाल तलवाड़ की हत्या की है। आप ही ने राजस्थानी स्त्रियों के हाथों गुड़िया में बंद उसकी लाश अपने गुड़ियाघर में भिजवाई।"

"यह आप क्या कह रहे हैं ?"

"मैं किसी सीमा तक ठीक कह रहा हूं। क्योंकि इस समय तक सोमदत्त कपूर की हत्या का जो चित्र बन रहा है उसमें आपका करेक्टर स्पष्ट होता चला जा रहा है। आप अकेली हैं। एक धनवान व्यक्ति की रखैल हैं। आपको अपना व्यवसाय चमकाने के लिए धन चाहिए। इसलिए धन प्राप्त करने के लिए आप नीच से नीच काम भी कर सकती हैं।"

सरोज कपिल को यह आशा न थी के मेजर उसके चरित्र की इतनी कठोर समीक्षा करेगा। वह झल्ला उठी, "मैं अकेली हूं, एक धनवान सेठ की रखैल हूं, मुझे अपना धंधा चमकाने के लिए रुपया चाहिए; लेकिन मैं कोई भी नीच काम करने के लिए तैयार नहीं हूं। यानी मैंने हत्या नहीं की। अब रही मि० कठालिया की बात। मि० कठालिया किसी भी स्त्री को भरपूर प्यार करने की सीमा को पार कर चुके हैं। अब वे केवल स्त्री को सामने बैठाकर अपनी पुरानी यादों को ही ताज़ा कर सकते हैं। यह ठीक है कि मैं कुछ दिनों के लिए सीधे रास्ते से भटक गई थी। लेकिन वह पुरानी बात है। मैं पिछले छः साल से नेक ज़िन्दगी बिता रही हूं।"

मेजर ने देखा—सरोज कपिल के स्वर में वह दृढ़ता थी जो सचाई से पैदा होती है।

मेजर ने अपनी बातचीत की धारा परिवर्तित कर दी। उसने कहा, "मिसेज़ सरोज, मैंने जान-बूझकर आपको उत्तेजित करने का प्रयास किया है, ताकि मैं यह देख सकूं कि आपके चरित्र की गिरती हुई दीवार में कोई ईंट साबित है या नहीं। चलिए, अब मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर दीजिए। क्या मि० कठालिया ने किसी विदेशी स्मगलर से आपके सामने ज़ेवर खरीदकर आपको दिए थे ?"

"जी हां।"

"वह विदेशी स्मगलर स्त्री थी या पुरुष था ?"

"स्त्री भी और पुरुष भी," मिसेज़ सरोज कपिल ने कहा।

"क्या मतलब ?"

"वे दो स्त्रियां और दो पुरुष थे।"

"दो पुरुष कैसे थे ?"

"दोनों की आयु छत्तीस वर्ष से कम थी। दोनों बहुत ही तगड़े और हट्टे-कट्टे थे।"

"और वे स्त्रियां ?"

"उनमें से एक तो बहुत ही सुन्दर थी। दूसरी साधारण थी और कोई एथेलिट मालूम होती थी।"

"आपका तात्पर्य है कि वह कोई खिलाड़ी मालूम होती थी—तैराक, दौड़ने वाली, भाला फेंकने वाली, ऊंची छलांग लगाने वाली !"

"जी हां, उसने स्वेटर और तंग पतलून पहन रखी थी।"

"उन स्मगलरों को पता चल गया होगा कि सेठजी आपके लिए ज़ेवर खरीद रहे हैं।"

"उन्हें पता क्या चलना था। उन्हें विश्वास था कि सेठजी मेरे ही लिए ज़ेवर खरीद रहे हैं। उनके पास अनगिनत ज़ेवर थे और सेठजी मुझे ज़ेवर पसंद करा रहे थे।"

"उन लोगों ने किसी तरह आपके घर का पता तो मालूम नहीं कर लिया था ?"

"कुछ कह नहीं सकती। शायद बातों-बातों में सेठजी ने मेरे मकान का पता बता दिया हो। लेकिन मेरा खयाल है कि उन्हें मेरे मकान का पता मालूम नहीं हो सका था।"

"ज़ेवर खरीदने के बाद और ज़ेवर सेठजी से लेने के बाद क्या आप सेठजी के पास ही रही थीं या अपने घर चली गई थीं ?"

"अपने घर चली गई थी।"

"और स्मगलर सेठजी के पास बैठे रहे थे या वे भी जा चुके थे ?"

"सेठजी ने ज़ेवरों की कीमत उसी समय दे दी थी। मैं बाहर निकली तो वे भी मेरे पीछे-पीछे बाहर आ गए थे।"

"हूं···" मेजर ने कहा, "मिसेज़ सरोज कपिल, अब मेरे इस प्रश्न का उत्तर ज़रा सोच-समझकर दीजिएगा। उन स्मगलरों में से किसीने आपका पीछा तो नहीं किया था ? मैं यह बात इस-लिए कह रहा हूं कि हत्या के दोनों केसों में हर बात दोहरी

है । संभव है स्मगलरों ने ज़ेवर बेचकर आपसे छीन लेने की योजना बना ली हो ।"

"ओह, मैंने इस बात पर तो विचार किया ही नहीं था। असल में ज़ेवर पाकर मैं सारी दुनिया को भूल बैठी थी । मैंने यह भी ध्यान नहीं दिया था कि कोई मेरा पीछा कर रहा था या नहीं ।"

"आपने ज़ेवर कहां रखे थे ?"

"मैंने ज़ेवर एक संदूकची में बंद करके बैंक के लॉकर में रख दिए थे । जिस दिन मेरे पति का पत्र मिला कि वह बम्बई आ रहे हैं, मैं बैंक के लॉकर से ज़ेवर निकालकर लाई थी ।"

"क्यों ?"

"मैं उन ज़ेवरों को पहनकर मि० कपूर पर रोब जमाना चाहती थी कि अगर उन्होंने मुझे निस्सहाय समझकर छोड़ दिया और यह समझा कि मैं भूखों मरकर उनके पैरों में जा गिरूंगी तो यह उनका भ्रम था । मैं उन्हें दिखा देना चाहती थी कि उनके छोड़ देने पर मैं भूखों नहीं मरी, बल्कि धनवान हो गई हूं ।"

"खूब, क्या औरत अपनी इज़्ज़त बेचकर कमाई हुई दौलत के द्वारा भी ऐसा रोब जमा सकती है ?"

मेजर की यह बात सुनकर मिसेज़ सरोज कपिल झेंप गईं ।

"मिसेज़ सरोज कपिल, आपके ज़ेवर कब चोरी हुए ?"

"जिस दिन मैं बैंक के लॉकर से निकालकर लाई थी, उसी रात को ।"

"उस रात आप कहां थीं ?"

"घर में ही थी ।"

"क्या आपको चोरों के आने का पता नहीं चला ?"

"नहीं, किसीने सोते में सिरिंज से बेहोशी का इंजेक्शन लगा दिया था ।"

"क्या आप उसे देख नहीं पाईं ?"

"नहीं, केवल पलभर के लिए मेरी नज़र उसकी ओर उठी और फिर मैं बेहोश हो गई ।"

"क्या उस एक पल में भी आपने उसे नहीं देखा ?"

"देखा था । उसने नकाब पहन रखी थी ।"

"अब मेरे अन्तिम प्रश्न का उत्तर दीजिए," मेजर ने कहा, "क्या आप राजीव प्रभाकर नाम के किसी व्यक्ति को जानती हैं ?"

"जिसकी लाश आज किंग सर्किल के कुंए से निकली है ?"

"हां वही ।"

"मैं राजीव प्रभाकर को अच्छी तरह जानती हूं । कभी मेरे पति ने उसकी पत्नी को उससे छीनने की कोशिश की थी । और मैंने अपने पति को सताने के लिए झूठ-मूठ ही राजीव प्रभाकर से मेलजोल बढ़ा लिया था ।"

"क्या वह बम्बई में कभी आपसे मिला था ?"

"एक-दो बार ।"

"क्या उसने पुराने सम्बन्धों को ताज़ा करने की कोशिश की थी ?"

"जी हां, लेकिन मैंने कठोरता से उसे दुत्कार दिया था । फिर वह मेरे पास कभी नहीं आया ।"

"हूं," मेजर के होंठ गोल हो गए । उनसे एक सीटी निकली लेकिन उसने तुरंत रोक ली, "धन्यवाद मिसेज़ सरोज कपिल, मुझे आपसे बस इतना ही काम था ।"

सरोज कपिल के जाने के बाद मेजर ने अपनी डायरी में कुछ बातें नोट कीं और फिर सोने की तैयारी करने लगा ।

## ८. खानाबदोश

दूसरे दिन मेजर फिर सुबह सवेरे ही आफिस से निकल गया । वह मिसेज़ दिनशा शीरीं के घर पहुंचा । मिसेज़ शीरीं रेशमी नाइट सूट में उससे अपने बैडरूम में मिली ।

मेजर ने कहा, "क्षमा कीजिएगा मिसेज़ दिनशा, मैंने आपको असमय कष्ट दिया है ।"

"मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ । मेरी आदत सुबह उठने की है ।"

"मिसेज़ दिनशा, मुझे मालूम नहीं था कि चित्रकार ओंकार यादव से आपके इतने घनिष्ठ सम्बन्ध हैं । यानी इतने घनिष्ठ कि आप उसके साथ फिल्म देखने भी जा सकती हैं ।"

"इसका मतलब है आप मेरा पीछा कर रहे हैं । या आपने कुछ आदमी मेरे पीछे लगा रखे हैं ।"

"यह मेरे काम का एक हिस्सा है । जब तक हत्या के केस की पहेली हल नहीं हो जाती, तब तक हत्या के केस से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी करना जासूस का कर्तव्य होता है ।"

"चित्रकार यादव से मेरे सम्बन्ध घनिष्ठ नहीं हैं बल्कि मैं अपने एक उद्देश्य के लिए उसे इस्तेमाल कर रही हूं।"

"क्या मैं जान सकता हूं कि वह उद्देश्य क्या है ?"

"मैं एक निर्दोष व्यक्ति का जीवन बचाने के लिए ऐसा कर रही हूं।"

"किस निर्दोष व्यक्ति का जीवन ?"

"मैं इस समय यह नहीं बता सकती।"

मेजर बलवन्त हंसने लगा।

"आप हंस क्यों रहे हैं ?"

"इस केस में मैं जिस किसीसे भी काम का प्रश्न करता हूं वह यही कह देता है कि इस समय वह इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। या इस समय वह यह बात नहीं बता सकता।"

"क्या किसी और ने भी आपके प्रश्न का यही उत्तर दिया है ?"

"एक ने नहीं, दो-तीन ने।"

"किस-किसने ?"

"मैं यह नहीं बता सकता।"

मिसेज़ दिनशा इस बार खिलखिलाकर हंस पड़ीं। फिर उन्होंने कहा, "अब तो आप भी यही उत्तर दे रहे हैं।"

मेजर कुछ झेंप गया। उसने अपनी झेंप मिटाने के लिए कहा, "अगर आप यह नहीं बताना चाहतीं कि आप किस निर्दोष आदमी का जीवन बचाना चाहती हैं तो आप इतना ही बता दीजिए कि आप उस आदमी का जीवन किन लोगों से बचाना चाहती हैं ?"

"बहुत ही भयानक लोगों से," मिसेज़ दिनशा ने कहा, "समय आने पर मैं उन लोगों को आपके हवाले कर दूंगी।"

इसके बाद मिसेज़ दिनशा ने अपनी नौकरानी को बुलाया और उससे कॉफी लाने के लिए कहा।

मेजर और मिसेज़ दिनशा शीरीं कॉफी पी रहे थे कि नौकरानी ने अन्दर आकर कहा, "वही मिसेज़ ग्लोरिया आई हैं।"

"मिसेज़ ग्लोरिया ? वह सुबह सवेरे यहां क्या लेने आ गई ?" मिसेज़ दिनशा ने पलंग पर से उठते हुए कहा।

मिसेज़ दिनशा दूसरे कमरे में चली गईं। और दस मिनट के बाद लौट आईं। मेजर ने उचककर खिड़की में से झांककर देखा। उसे एक स्त्री की पीठ दिखाई दी जिसने तंग पतलून और समूर

वाली जाकट पहन रखी थी। उसकी पीठ पर एक भारी थैला था।

"यह मिसेज़ ग्लोरिया कौन थीं ?" मेजर ने पूछा।

"एक विदेशी महिला हैं। घूमने आई हैं यहां। कल मुझे 'माईलार्ड' होटल में मिली थीं। उनके पास दो-तीन बहुत ही अनोखी और मूल्यवान चीज़ें हैं जिन्हें वह बम्बई म्यूज़ियम को बेचना चाहती हैं। और इस काम में वह मेरी सहायता चाहती हैं।"

"मिसेज़ दिनशा, यह मिसेज़ ग्लोरिया स्मगलर तो नहीं हैं ?"

"आप कैसी बातें करते हैं ?"

"यों ही पूछ रहा था," मेजर ने कहा, "अच्छा तो मैं अब चलता हूं। आप उन लोगों को मेरे हवाले कब करेंगी, जो किसी निर्दोष व्यक्ति की जान लेना चाहते हैं ?"

"बहुत जल्द ! हम उनके चारों ओर अपना जाल बुन रहे हैं।"

"हम ··? क्या आपका कोई और साथी भी है ?" मेजर ने कहा।

मिसेज़ दिनशा को अपनी मूर्खता पर बहुत खेद हुआ कि उसके मुंह से 'हम' शब्द क्यों निकल गया। अब उसके लिए स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त और कोई चारा न रहा। उसने कहा, "हां है।"

"वह कौन है ? शायद इस प्रश्न का उत्तर भी आप इस समय नहीं दे सकेंगी," मेजर ने हंसते हुए कहा और उठ खड़ा हुआ, "अच्छा, फिर मिलेंगे।"

मिसेज़ दिनशा शीरीं के यहां से मेजर कालबादेवी पहुंचा। इस समय पौने दस बजे थे और सारी दुकानें खुल चुकी थीं।

मिसेज़ सरोज कपिल का गुड़ियाघर बंद था। मेजर गुड़ियाघर के बराबर वाली दूकान में गया जिसमें मोज़े और बनियानों का थोक व्यापार होता था। मेजर ने अपना परिचय दिया और गुड़ियाघर में हत्या होने की कहानी सुनाकर उस दूकानदार से पूछा, "उस दिन दो राजस्थानी औरतें गुड़ियाघर के लिए ठेले में एक केस लादकर लाई थीं। क्या आपने उन्हें देखा था ?"

"साहब, एक औरत तो बहुत ही खूबसूरत थी। हालांकि उन दोनों ने लम्बे-लम्बे घूंघट काढ़ रखे थे। बस एक-दो मिनट के लिए ही उनके मुंह नंगे हुए थे। उनमें से एक तो परियों को भी

मात करती थी। दूसरी भी बुरी नहीं थी। दोनों ही बड़ी ताकतवर थीं।"

"धन्यवाद," मेजर ने कहा और दूकान से बाहर आ गया।

इसके बाद मेजर चित्रकार ओंकार यादव के यहां पहुंचा। यादव अपने स्टूडियो में ही था और दो मुगलकालीन चित्रों में रंग भर रहा था।

मेजर ने उसके पास बैठते हुए पूछा, "यह आप क्या कर रहे हैं?"

"मैं इनमें आधुनिक ढंग का रंग भर रहा हूं। चित्रकला के शौकीन कुछ पर्यटक भारी मूल्य देकर इन चित्रों को खरीदना चाहते हैं।"

"क्या मिसेज़ दिनशा इन्हीं चित्रों के बेचने में आपकी सहायता कर रही हैं?"

मिसेज़ दिनशा का नाम सुनकर यादव चौंक पड़ा।

"घबराइए नहीं," मेजर ने कहा, "मैं जानता हूं कि इन दिनों मिसेज़ दिनशा आपपर बुरी तरह रीझी हुई हैं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि वह इन दिनों आपपर इतनी मेहरबान क्यों हैं?"

यादव ने चित्रों में रंग भरते हुए उत्तर दिया, "यह बात खुद मेरी समझ में नहीं आ रही। यह सिलसिला केवल छः दिन पहले आरंभ हुआ है। मिसेज़ दिनशा खुद ही मेरे पास आई थीं। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं अपने चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित करूं। वह मेरे चित्रों की प्रशंसा करती रहीं और जाते हुए मुझे एक होटल में कैबरे देखने की दावत दे गईं। इसके बाद तो एक चक्कर-सा चल पड़ा। छः दिन से कभी हम पार्क में जाते हैं, कभी सिनेमा जाते हैं, कभी समुद्र में नहाने जाते हैं। लेकिन जब मैं अधिक निकट जाने की कोशिश करता हूं तो वह मुझे इस तरह झटक देती हैं जैसे मुझसे उन्हें कोई सरोकार ही नहीं। मैं उनके इस रवैये की गहराई तक नहीं पहुंच पा रहा।"

"हर स्त्री आरंभ में ऐसा ही करती है," मेजर ने कहा। वह जिस काम से आया था वह पूरा हो चुका था। उसने यादव से विदा ली और अपने आफिस की ओर चल दिया। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की हल्की-सी झलक थी।

मेजर आफिस में पहुंचा तो सोनिया ने पूछा, "आज आप कुछ प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं।"

"हां, आज कुछ धुंध कुछ छटती-सी दिखाई दे रही है। इस खुशी में एक शे'र सुनिए—

हमने उठाए हिज्र में यों वस्ल के मजे
फोटो हम उनका सीने से लिपटा के पड़ रहे।"

डोरा ने हंसकर कहा, "यह झूठी तसल्ली है।"

डोरा की यह बात सुनकर सबने ज़ोर से कहकहा लगाया।

अभी कहकहा वातावरण में गूंज ही रहा था कि आफिस के बाहर घंटी बजने की आवाज़ आई। बैल के गले में बंधी हुई घंटी की आवाज़ जैसी।

फिर चौकीदार भारी कदम रखता हुआ अन्दर आया। उसने मेजर से कहा, "हुज़ूर, इस बैल वाले को मैं अन्दर नहीं आने दे रहा था लेकिन इसने कहा कि इसे आपसे काम है।"

सब दौड़कर बाहर पहुंचे। एक देहाती एक सजे हुए बैल को लिए बाहर खड़ा था।

"इस बैल को इतना क्यों सजा रखा है?" मालती ने पूछा।

"माई बाप, यह बैल नहीं, भविष्यवाणी है। आप अपने मन में कोई बात सोचिए और मुझे बता दीजिए। यह बैल आपको बता देगा कि आपने मन में क्या सोचा है और आपकी सोची हुई बात पूरी होगी या नहीं, और फिर उसने धीरे से कहा, "मैं मेजर साहब से मिलने आया हूं।"

मेजर ने आगे बढ़कर पूछा, "किसीने तुम्हें मेरे पास भेजा है?"

"जी हां, आप अपना कान मेरे मुंह के पास लाइए," देहाती ने कहा।

मेजर अपना कान देहाती के होंठों के पास ले गया। देहाती बहुत ही धीमे स्वर में कुछ कहता रहा और मेजर सिर हिलाता रहा। जब वह अपनी बात कह चुका तो मालती ने ज़िद की कि वह बैल का तमाशा देखेगी कि वह मन की बात कैसे जान लेता है।"

मेजर ने मालती को यह कहकर रोक दिया कि आज उन्हें बहुत ज्यादा काम करना है और बैल वाले देहाती को जाने के लिए कह दिया।

देहाती के जाने के बाद मेजर ने कहा, "कल मैंने सबको किंग सर्किल भेजा था, मिसेज़ सरोज कपिल की निगरानी के

लिए। आज मैं सबको चर्नी रोड भेजना चाहता हूं। शायद कल की तरह आज भी कुछ सफलता मिल जाए।"

"क्या कल कोई सफलता मिली थी ?"

"कल तो काफी सफलता मिली थी। लेकिन यह सफलता क्या थी यह तुम्हें बाद में मालूम होगा। आज तुम चर्नी रोड जाकर मिसेज़ दिनशा शीरीं की निगरानी करोगे। तुम सब एक नया मेकअप बनाकर जाओ। अगर तुम्हें कोई असाधारण बात दिखाई दे और मेरी आवश्यकता पड़े तो ट्रांसमीटर घड़ी द्वारा मुझे सूचित कर देना।"

वे सब मेकअप रूम की ओर जाने लगे तो सोनिया ने दरवाज़े में रुककर पूछा, "बैल वाला किसका संदेश लाया था ?"

"सूरजनारायण जुत्शी का।" मेजर ने कहा, "मैं उसके पास जा रहा हूं।"

एक घंटे बाद मेजर अंधेरी में था। वह समुद्र की ओर जाने वाली सड़क पर अपनी कार को धीरे-धीरे चला रहा था। वह खानाबदोशों के एक डेरे को खोज रहा था, जो उन्होंने सड़क के किनारे डाल रखा था। कुछ दूर जाने के बाद उसे खानाबदोशों का डेरा दिखाई दे गया। उसने कार रोक दी। और कार से उतरकर उस डेरे की ओर चल पड़ा। बैल वाले के संदेश के अनुसार, उसने उस डेरे के पास पहुंचकर एक खानाबदोश औरत से पूछा, "आप लोगों का चौधरी कहां है ?"

वह औरत एक छुरी को पत्थर के एक गोल पहिये पर रगड़कर उसकी धार तेज़ कर रही थी। उसने हाथ में पकड़ी छुरी से एक छकड़े की ओर इशारा कर दिया। यह छकड़ा अन्य सभी छकड़ों से बड़ा था और उसमें पीतल के बड़े-बड़े फूल जड़े हुए थे।

मेजर उस छकड़े के पास पहुंचा। छकड़े के नीचे एक घर-सा बना हुआ था। उस घर में एक ताकतवर खानाबदोश बैठा अपनी पत्नी के हाथ से कच्ची शराब पी रहा था। उसकी मूंछें बहुत ही नुकीली थीं। उसकी वास्कट में सीप के ढेर सारे बटन लगे हुए थे। सिर पर रस्सी की तरह बटी हुई पगड़ी थी।

मेजर को उसने देखकर भी जैसे नहीं देखा।

मेजर ने कहा, "मैं इस डेरे के चौधरी से मिलना चाहता हूं।"

चौधरी ने मेजर की बात जैसे सुनी ही नहीं।

मेजर ने थोड़ा-सा आगे बढ़कर अपनी बात दोहराई, "मैं इस

डेरे के चौधरी से मिलने आया हूं। मैं पुलिस अफसर हूं।"

पुलिस का नाम सुनते ही चौधरी छकड़े के नीचे से निकला और हाथ जोड़कर बोला, "हज़ूर, हम गरीब आदमी ज़रूर हैं, लेकिन चोर-उचक्के नहीं हैं।"

"मैं यह कब कह रहा हूं कि तुम लोग चोर-उचक्के हो," मेजर ने कहा, "मैं यहां 'लम्बू' की तलाश में आया हूं।"

मेजर ने बैल वाले के द्वारा बताया हुआ गुप्त शब्द दोहराया।

"सरकार, वह तो चला गया। कल से वह हमारे यहां ही था। लेकिन आज चला गया। उसे आज जाना तो नहीं था, लेकिन एक मेम साहब उसे ले गई।"

"मेम साहब ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां, उस मेम साहब ने तंग पतलून पहन रखी थी। ये बड़ी-बड़ी मोटी-मोटी जांघें थीं उसकी ! और ये बड़े-बड़े···," चौधरी कहते हुए शरमा गया, "उस मेम साहब ने बिल्ली की खाल का कोट पहन रखा था। उसकी पीठ पर एक भारी थैला था।

मेजर सोचने लगा कि चौधरी जिस मेम साहब की चर्चा कर रहा है, उसे वह आज सवेरे ही मिसेज़ दिनशा शीरीं के यहां देख चुका है।

"हज़ूर, वह मेम साहब, टैक्सी लेकर आई थी और उसी टैक्सी में लम्बू को ले गई। क्या कहूं सरकार, लम्बू बहुत ही प्यारा आदमी थां। जाते हुए पचास रुपये बख्शीश दे गया।"

मेजर निराश होकर खानाबदोशों के डेरे से निकल आया। उसे जुत्शी से ज़रूर मिलना था। उसने बैल वाले के द्वारा यह संदेश भेजा था कि वह उसे बहुत ही ज़रूरी बातें बताना चाहता है। लेकिन वह विदेशी पर्यटक स्त्री उसे न जाने कहां ले गई थी।

## ९. रात के ग्यारह बजे

मेजर को दफ्तर लौटे थोड़ी ही देर हुई थी कि इंस्पेक्टर राना वहां पहुंच गया।

"कहिए इंस्पेक्टर साहब, कैसे इधर भूल पड़े। क्या कोई नई घटना हो गई ?"

"नई घटना तो नहीं हुई, लेकिन एक नई बात मालूम हुई

है।" इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"कौन-सी नई बात ?"

इंस्पेक्टर ने उत्तर देने की बजाय जेब से वे ज़ेवर निकाले जो राजीव प्रभाकर के पास से मिले थे। उसने ज़ेवरों को मेज़ पर रखकर कहा, "ये सारे ज़ेवर स्मगल किए हुए हैं। यहां तैयार नहीं हुए हैं। इनमें से एक ज़ेवर पर तो न्यूयार्क के किसी जौहरी की मुहर है। हमने बहुत-से विदेशी पर्यटकों का पता लगाया, लेकिन वह स्मगलर नहीं सिद्ध हुए।"

"ये स्मगल किए हुए ज़ेवर हैं," मेजर ने जान-बूझकर आश्चर्य प्रकट किया, "बहुत ही पेचीदा मामला है!"

"जी हां, मैं खिलौनों की फर्म वंडर लैंड में भी गया था। वहां राजीव प्रभाकर की मृत्यु पर किसीको रत्ती-भर भी दुःख नहीं हुआ। मुझे पता चला है कि उसका स्वभाव बहुत ही रूखा, कठोर और चिड़चिड़ा था।"

"मैंने भी व्यक्तिगत रूप से जांच-पड़ताल कराई है। राजीव प्रभाकर की जेब में से जो ज़ेवर निकले हैं, असल में वे ढेर सारे ज़ेवरों का एक अंश मात्र हैं। बाकी ज़ेवर राजीव प्रभाकर के हत्यारों के पास हैं।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि आप अपना भेद खोले बिना छिपे-छिपे अपनी खोज में लगे हुए हैं और हमें उस भेद में शामिल करने के लिए तैयार नहीं हैं।"

"नहीं, यह बात नहीं है। जब तक किसी ठोस बात का पता न चले, तब तक खाली कारतूस चलाने से क्या लाभ ?"

"आप हमें यह बताइए कि हम किस दिशा में काम करें ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"आपने अभी कहा था कि आप विदेशी पर्यटकों का पता लगा रहे हैं। अगर संभव हो सके तो एक ऐसी स्त्री का पता लगाइए जो तंग पतलून और समूरदार कोट पहनती है। उसके कंधे पर एक भारी थैला होता है। सुना है उसके पास कुछ मूल्यवान और अनोखी चीज़ें हैं।"

"मैं अभी बम्बई की सारी पुलिस को इस काम में लगाए देता हूं," इंस्पेक्टर राना ने उठते हुए कहा।

इंस्पेक्टर राना के जाने के बाद मेजर सोचने लगा कि जिस स्त्री का पता उसने इंस्पेक्टर राना को दिया है और जो आज

सुबह मिसेज़ दिनेशा शीरीं से मिली थी और जो जुत्शी को अपने साथ खानाबदोशों के डेरे से ले गई; वह कौन है ? और उसका मिसेज़ दिनशा शीरीं और जुत्शी से मिलने का कारण क्या है ?

शाम को सात बजे मेजर बाहर जाने की तैयारी कर रहा था कि टेलीफोन की घंटी बज उठी।

मेजर ने क्रेडिल पर से रिसीवर उठाकर कहा, "हैलो !"

"मेजर साहब, मैं इंस्पेक्टर राना बोल रहा हूं। आपने जिस औरत का पता दिया था, वह मिल गई है।"

"कहां है ? क्या आपके दफ्तर में ?"

"नहीं; गेला नाइट होटल के रूम नम्बर २१६ में। मैं वहीं से बोल रहा हूं और वह मेरे सामने बैठी है। उसका नाम मिसेज़ ग्लोरिया रैंड है। उसके पास तीन अनोखी और मूल्यवान चीज़ें हैं। आप देखेंगे तो हैरान रह जाएंगे।"

"मैं आ रहा हूं।"

मेजर बलवन्त थोड़ी देर के बाद गेला नाइट होटल के रूम नम्बर २१६ में पहुंच गया। उसके पहुंचते ही इंस्पेक्टर राना ने कहा, "आइए, मिसेज़ ग्लोरिया से मिलिए और इनकी तीन अद्भुत चीज़ें देखिए !"

मेजर दरवाज़े में ही ठिठककर रह गया। मिसेज़ ग्लोरिया एक आरामदेह छोटे सोफे पर अधलेटी-सी बैठी थी। उसका समूरदार कोट खन से लथपथ था। कोट के सीने पर एक जला हुआ दाग था। गर्दन में एक चाकू आरपार था, रस्सी का एक फंदा भी गर्दन में पड़ा हुआ था।

"ये हैं तीन अद्भुत चीज़ें जो इनके पास हैं," इंस्पेक्टर राना ने कहा, "सीने में गोली, गर्दन में चाकू और रस्सी का फंदा। इनके कब्ज़े से और कोई अनोखी चीज़ बरामद नहीं हुई। कुछ कागज़ात मिले हैं, जिनसे यह पता चलता है कि मिसेज़ ग्लोरिया पर्यटक नहीं थीं बल्कि अमेरिका के 'फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टिगेशन' (F.B I.) की एक जासूस थीं।"

"क्या कहा ? ज़रा मैं भी इनके कागज़ात देखूं," मेजर ने हैरान होकर कहा।

इंस्पेक्टर राना ने कुछ कागज़ात मेजर के सामने रख दिए, जिनमें एक समुद्री तार भी था।

इंस्पेक्टर राना ने उस समुद्री तार की ओर इशारा करते हुए

कहा, "यह तार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह तार किसीने चार दिन पहले बम्बई से न्यूयार्क भेजा था। तार भेजने वाले ने अपना नाम 'हमदर्द' लिखा है।"

"हमदर्द···?" मेजर ने सबसे पहले वह तार उठाकर देखा। तार बहुत ही संक्षिप्त था। किसीने तार में गुप्त भाषा का प्रयोग किया था। तार में लिखा था :

"गंदे अंडे यहां बहुत बदबू फैला रहे हैं। विश्वास न हो तो खुद आकर देख लो।

—हमदर्द"

मेजर ने वह तार कई बार पढ़ा और फिर उसके होंठ गोल हो गए। वह सीटी बजाने लगा। इंस्पेक्टर राना को उसकी इस हरकत पर बड़ी हैरानी हुई।

मेजर ने कागज़ात में से टिकट और पासपोर्ट उठा लिया। मिसेज़ ग्लोरिया तीन दिन पहले ही हवाई जहाज़ द्वारा न्यूयार्क से बम्बई पहुंची थीं। उनके आइडेंटिटी कार्ड से भी यही मालम होता था कि वह अमेरिका की जासूस-संस्था एफ० बी० आई० की अनुभवी जासूस थीं।

मेजर सोचने लगा, वह कौन आदमी था जिसने मिसेज़ ग्लोरिया को न्यूयार्क से यहां बुलाया? गंदे अंडे क्या चीज़ थे? क्या न्यूयार्क से भागे हुए अपराधी थे? और क्या मिसेज़ ग्लोरिया उन्हींकी तलाश में यहां आई थीं?

फिर मेजर की विचारधारा पलट गई। वह सोचने लगा कि मिसेज़ ग्लोरिया अंधेरी में खानाबदोशों के डेरे में जाकर जुत्शी से मिलीं और उसे अपने साथ ले आईं। तो क्या जुत्शी ने ही मिसेज़ ग्लोरिया की हत्या की है?

"आपने होटल वालों से पूछा कि मिसेज़ ग्लोरिया के कमरे में कौन था?"

"होटल वालों को कुछ पता नहीं कि इनके कमरे में कोई आया था या नहीं।"

"क्या किसीने गोली चलने की अवाज़ भी नहीं सुनी?"

"जी नहीं।"

"यह तो हो नहीं सकता कि आकाश से यमराज उतरा और ग्लोरिया की हत्या कर गया। अच्छी तरह जांच-पड़ताल करने की ज़रूरत है। मैं जाता हूं और पूछताछ करता हूं। आप यहां

रहिए। आपके आदमी आ रहे होंगे।"

नीचे आकर मेजर होटल के लाउंज में गया। वहां होटल में ठहरे हुए यात्रियों की भीड़ लगी हुई थी। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। मेजर ने होटल के बहुत-से कर्मचारियों से पूछताछ की। अन्त में एक बैरे ने काम की एक बात बताई। उसने बिजली के एक मैकेनिक को, जिसने खाकी वर्दी और हाथों में रबड़ के दस्ताने पहन रखे थे, ऊपर जाते देखा था। उसके कंधे पर औज़ारों का थैला था। बैरे ने उस मैकेनिक से पूछा था कि वह ऊपर क्यों जा रहा है तो मैकेनिक ने उसे बताया था कि दूसरी मंज़िल के दो कमरों की बिजली के स्विच खराब हो गए हैं। होटल से फोन गया था। वह उन स्विचों को ठीक करने आया है।"

मेजर समझ गया कि हत्यारा बिजली के मैकेनिक के वेश में आया था। फिर भी इस बात की जांच कर लेनी चाहिए। होटल के मैनेजर ने मेजर को बताया कि होटल के किसी भी कमरे के स्विच खराब नहीं थे, इसलिए मैकेनिक को बुलाने का प्रश्न ही नहीं उठता था।

अपना इत्मीनान करने के बाद मेजर फिर रूम नम्बर २१६ में चला गया। इंस्पेक्टर राना के सहकारी अभी तक नहीं आए थे।

"मुझ हत्यारे का पता चल गया है," मेजर ने कहा।

"हत्यारा कहां है?" इंस्पेक्टर ने व्यग्रता से पूछा।

"मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस बात का पता चल गया है कि मिसेज़ ग्लोरिया की हत्या किसने की। मिसेज़ ग्लोरिया की हत्या एक ऐसे व्यक्ति ने की जो बिजली ठीक करने के बहाने एक मैकेनिक के वेश में आया था। वह औज़ारों के थैले में मिसेज ग्लोरिया को अपने ढंग से ठिकाने लगाने के हथियार लेकर आया था।"

"एक बात समझ में नहीं आई कि हत्यारा एक ही समय में गोली क्यों मारता है, चाकू गर्दन में क्यों घोंपता है और फिर गले में रस्सी का फंदा क्यों डालता है?" इंस्पेक्टर ने कहा।

"मैंने इस प्वाइंट पर विचार किया है। मुझे ऐसा लगता है कि जो भी हत्याएं की जा रही हैं, वे एक प्रतिज्ञा के अनुसार की जा रही हैं," मेजर बोला।

"प्रतिज्ञा के अनुसार ?" इंस्पेक्टर ने हैरान होकर कहा।

"जब इस प्वाइंट को पूरी तरह हल कर लूंगा, तब आपको बताऊंगा। अच्छा अब मैं चलता हूं। आप तो आवश्यक कार्रवाई समाप्त करने के बाद ही यहां से जा सकेंगे," यह कहकर मेजर दरवाज़े की ओर बढ़ गया।

मेजर जब अपने आफिस में पहुंचा तो वहां अकेली सोनिया को देखकर बहुत हैरान हुआ।

"क्यों सोनिया, तुम वापस आ गईं ?" उसने पूछा।

"आज मुझे थकान बहुत महसूस हो रही है। आप तो जानते ही हैं," सोनिया बोली।

"हां, मैंने आज सवेरे ही देख लिया था कि तुम्हारा रंग पीला है और तुम नहाकर भी नहीं आई हो," यह कहकर मेजर ने सोनिया को कुर्सी पर से उठा लिया। और उसे गोद में उठाकर चक्कर काटने लगा। फिर उसने सोनिया के होंठों और गालों पर चुम्बन की बौछार शुरू कर दी।

"आज तो आप जैसे पागल हुए जा रहे हैं," सोनिया ने मेजर को प्यार करते हुए कहा।

"सोनिया, बस यों समझ लो कि एक अंधेरे महल की दूसरी खिड़की खुल गई है जिसमें प्रकाश है।"

"इसका अर्थ है कि हत्या के इस केस पर जो पर्दे पड़े हुए थे धीरे-धीरे सरककर उठते जा रहे हैं।"

"हां," मेजर ने सोनिया को गोद से उतारकर फूल की तरह एक सोफे पर रख दिया। ठीक उसी समय मेजर को अपनी कलाई पर बंधी घड़ी में सरसराहट होती अनुभव हुई।

मेजर तेज़ी से अपनी मेज़ के पीछे पहुंचा और अपनी रिवाल्विंग चेयर पर जा बैठा। उसने घड़ी की चाबी खोलकर उसमें गोल सिरे वाला तार फंसा दिया। घड़ी की सुई घूमकर एक स्थान पर टिक गई।

"हैलो, एक्स स्पीकिंग—हैलो, एक्स स्पीकिंग" मेजर को अपने सिर पर लगे हैडफोन द्वारा आवाज़ सुनाई दी।

उसने तेज़ी से उत्तर दिया, "ज़ैड दिस एंड—ज़ैड दिस एंड।"

"मेजर साहब, मेरे खयाल में आप चले आइए। मामला कुछ अधिक गंभीर दिखाई दे रहा है।" दूसरी ओर से मालती की

आवाज़ आई।

"क्यों, क्या बात है ?"

"सुधीर कार चला रहा है। मैं और डोरा कार की पिछली सीट पर बैठी हैं। वहीं से मैंने आपसे सम्पर्क स्थापित किया है। हमारी कार के आगे-आगे दो कारें जा रही हैं। सबसे अगली कार में मिसेज़ दिनशा शीरीं हैं। और उनकी कार के पीछे जो कार है उसमें दो आदमी हैं। उनमें एक स्त्री है, दूसरा पुरुष है। हमें संदेह है कि वे मिसेज़ दिनशा शीरीं का पीछा कर रहे हैं।"

"इस समय तुम लोग कहां हो ?"

"चर्च गेट से गुज़र रहे हैं," मालती ने कहा, "आप ट्रांसमीटर घड़ी आन रखिएगा। हम आपको रास्ता बताते रहेंगे।"

"अच्छी बात है, मैं आ रहा हूं," मेजर ने उठते हुए कहा।

"मैं भी आपके साथ चलूंगी," सोनिया बोली, जो मछेरिन के वेश में थी।

"डोरा, मालती और सुधीर किस रूप में हैं ?" मेजर ने सोनिया से पूछा।

"डोरा एक तिब्बती लड़की बनी हुई है। मालती जापानी औरत के वेश में है और सुधीर आर्मी आफीसर की यूनीफार्म में।"

"ठीक है, मैं जब तक आवश्यक हथियारों से लैस होता हूं तब तक तुम क्रोकोडायल को उसके दरबे से निकाल लाओ।"

सोनिया क्रोकोडायल को लाने के लिए चली गई। मेजर उसके आने तक तैयार हो गया।

पोर्टिको की ओर बढ़ते हुए उसने हैडफोन फिर अपने सिर पर लगा लिया और घड़ी की सुई घुमाकर एक विशेष स्थान पर रोक दी।

"हैलो ज़ैड दिस एंड—हैलो ज़ैड दिस एंड," मेजर ने कहा।

दूसरी ओर से आवाज़ आई, "एक्स स्पीकिंग।"

"इस समय तुम कहां हो मालती ?" मेजर ने पूछा।

"कोलाबा जाने वाली सड़क पर हैं।"

"ठीक है।"

मेजर कार की ओर बढ़ा। सोनिया ने क्रोकोडायल को पिछली सीट पर बैठा दिया और स्वयं मेजर के बराबर अगली सीट पर आ बैठी।

मेजर ने बंगले से कार निकालकर सड़क पर डाल दी और उसकी स्पीड तेज़ कर दी। मेजर बहुत ही एक्सपर्ट ड्राइवर था।

वह भीड़ को चीरकर तेज़ी से कार बढ़ाता चला गया।

हर पांच मिनट बाद मालती मेजर को सूचना दे रही थी कि वे कहां हैं। धीरे-धीरे मालती और मेजर की कार के बीच की दूरी कम होती जा रही थी।

थोड़ी देर के बाद मेजर मालती के बताए रास्ते पर चलता हुआ कोलाबा की बाहरी बस्ती में पहुंच गया। उसे सुधीर की कार दिखाई दी। लेकिन वे दो कारें दिखाई न दीं जिनमें मिसेज़ दिनशा शीरीं और उसका पीछा करने वाले लोग थे।

मेजर ने अपनी कार एक सुरक्षित स्थान पर रोक दी। वह सोनिया और क्रोकोडायल के साथ उस पेड़ की ओर बढ़ा जिसकी आड़ में सुधीर, डोरा और मालती खड़े थे।

"तुम लोग यहां क्यों खड़े हो ?" मेजर ने पूछा।

"यही हमारी मंज़िल है।" मालती ने कहा।

"क्यों ?"

"आप वह सामने एक बैरिक देख रहे हैं जो खाली पड़ी है। मिसेज़ दिनशा शीरीं उसी बैरिक में गई हैं। उनका स्वागत करने के लिए वहां एक असाधारण लम्बा आदमी मौजद था। वह मिसेज़ दिनशा शीरीं को देखते ही अंदर चला गया और फिर चार मिनट के बाद एक नाटे कद के आदमी ने बैरिक के बाहर आकर मिसेज़ दिनशा शीरीं का स्वागत किया। मिसेज़ दिनशा शीरीं उसकी कमर में हाथ डालकर अंदर चली गईं।"

"क्या जुत्शी और उसका कोई साथी बैरिक में है ?"

"मालम तो ऐसा ही होता है।"

"वे लोग कहां हैं जो मिसेज़ दिनशा का पीछा कर रहे थे ?"

"वे कार को घुमाकर बैरिक के पीछे ले गए हैं," डोरा ने बताया।

"हमें भी बैरिक के पीछे चलना चाहिए। सबको सावधानी से काम लेना होगा। सोनिया, तुम क्रोकोडायल को पकड़े रहना। जब तक मैं आदेश न दूं इसे मत छोड़ना।"

वे सब सावधानी से कदम रखते हुए बैरिक के पीछे चले गए। बैरिक के पीछे कुछ झाड़ियां थीं। मेजर को उन लोगों की कार कहीं भी दिखाई न दी। मेजर ने अपने साथियों को आदेश दिया कि वे सब झाड़ियों के पीछे छिपकर बैठ जाएं।

"वे लोग कहां चले गए ?" डोरा ने पूछा।

"मेरा विचार है कि वे लोग अपनी कार को किसी सुरक्षित स्थान पर छोड़ने गए हैं। आते ही होंगे," मेजर ने कहा।

मेजर ने अभी अपनी बात पूरी ही की थी कि उन्हें दो साये बैरिक की ओर आते दिखाई दिए। क्रोकोडायल उन सायों को देखकर भौंक पड़ा। मेजर ने फौरन उसका मुंह बंद कर दिया। क्रोकोडायल समझ गया कि उसे भौंकना नहीं चाहिए था। वह दुबककर बैठ गया। लेकिन क्रोकोडायल ने भौंककर दुश्मन को चौकन्ना कर दिया।

दोनों साये बड़ी सावधानी से झाड़ियों की आड़ लेकर बढ़ने लगे। उन्होंने क्रोकोडायल के भौंकने की आवाज़ सुनकर शायद यह समझा कि कोई आवारा कुत्ता भौंका था। उन्हें बढ़ते देखकर मेजर बहुत प्रसन्न था।.

जब वे साये बहुत ही निकट आ गए तो एक साये ने बैरिक की एक खिड़की पर गोली चला दी। मेजर ने यह देख उस साये पर गोली चलाई। दोनों साये लपककर एक झाड़ी के पीछे दुबक गए। क्रोकोडायल ज़ोर-ज़ोर से उछलने लगा जैसे वह सोनिया से छट-कर दुश्मन पर टूट पड़ना चाहता हो।

इतने में दुश्मन ने दो गोलियां चलाईं। दोनों गोलियां मेजर के सीने में लगीं। वह पीछे हट गया। अगर उसके बदन पर बुलेट प्रूफ जाकेट न होती तो उसका काम तमाम हो जाता।

मेजर ने अपने साथियों से कहा, "दुश्मन ज़बर्दस्त निशानेबाज़ है। सावधानी से आक्रमण करना।"

मेजर के साथियों ने ताक-ताककर गोलियां चलानी शुरू कर दीं और दोनों साये उनकी गोलियों का उत्तर गोलियों से देने लगे। उनकी गोलियां झाड़ियों में आकर लग रही थीं। मेजर के साथी झाड़ियों से कुछ हटकर धरती पर औंधे मुंह पड़े गोली चला रहे थे। मेजर के दूसरे हाथ में सोनिया का रिवाल्वर था। वह दोनों हाथों से गोली चला रहा था।

मेजर भी साधारण निशानेबाज़ न था। उसने एक गोली चलाई और दूर झाड़ियों में से एक दबी हुई चीख सुनाई दी। और फिर भागते हुए कदमों की आवाज़ सुनाई दी।

"दुश्मन भाग रहा है," मालती ने कहा "क्या दुश्मन का पीछा किया जाए ?"

"नहीं, दुश्मन ज़बर्दस्त निशानेबाज़ है। उसका निशाना अचूक

है। उन्होंने अधिकतर गोलियां बैरिक की दो खिड़कियों पर चलाई थीं।" मेजर ने कहा, "क्या किसीके पास टार्च है ?"

"मेरे पास है," सुधीर ने कहा।

"लाओ, टार्च मुझे दे दो। हम बैरिक की ओर चलें।"

सुधीर ने मेजर को टार्च दे दी। टार्च की रोशनी धरती पर फेंकता हुआ मेजर बैरिक की ओर बढ़ा। उसने अपने साथियों को आदेश दिया कि वे अपने रिवाल्वर तानकर आगे बढ़ें। मेजर के पीछे-पीछे उसके साथी बैरिक के पास पहुंच गए। फिर मेजर बैरिक के उस हिस्से में पहुंचा, जिसपर दुश्मन ने गोलियां चलाई थीं। बैरिक खाली पड़ी थी।

बैरिक के एक दूसरे कमरे में मिसेज़ दिनशा पत्थर पर इस तरह बैठी थी जैसे पत्थर के चबूतरे पर चूने का कोई मूर्ति रखी हो। मेजर ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। मिसेज़ दिनशा के अतिरिक्त वहां और कोई न था। मिसेज़ दिनशा मेजर की ओर देख रही थीं लेकिन लगता था जैसे उनकी आंखें ज्योतिहीन हों। शायद किसी सदमे का उनपर गहरा असर हुआ था। मेजर हैरान था कि वह अकेली क्यों हैं ? जुत्शी और उसका नाटे कद का साथी कहां चले गए ?

कुछ देर बाद मिसेज़ दिनशा की आंखों की देखने की शक्ति लौटी तो उन्होंने मेजर को पहचाना। उनके होंठों पर एक फीकी-सी मुस्कराहट फैल गई।

"जुत्शी कहां है ?" मेजर ने पूछा।

"कौन जुत्शी ?" मिसेज़ दिनशा बोलीं।

"वही असाधारण लम्बा आदमी।"

"यहां असाधारण लम्बा आदमी कोई भी नहीं था।"

"आपका स्वागत किसने किया था ?"

"एक नाटे कद के आदमी ने।"

"क्या वही व्यक्ति वह निर्दोष व्यक्ति है जिसका जीवन बचाने के लिए आप दौड़-धूप कर रही हैं ?"

"जी हां।"

"वह कहां है ?"

"वह मेरी जान बचाकर चला गया।"

मेजर ने टार्च की रोशनी मिसेज़ दिनशा पर डाली। उनकी साड़ी सीने पर खून से तर थी।

"कोई गोली आपके तो नहीं लगी ?"

"नहीं, उस निर्दोष व्यक्ति की कुहनी में लगी थी। उसने अपने बदन की ढाल से छिपाकर मुझे मरने से बचा लिया।"

"लेकिन वह चला क्यों गया ?"

"वह अभी आपके सामने आना नहीं चाहता।"

"क्या उसने आपको यहां बुलाया था ?"

"जी हां।"

"आपने यहां आते हुए इतना भी ध्यान नहीं किया कि दुश्मन आपका पीछा कर रहा है ?"

"मैं अपने विचारों में खोई हुई थी।"

"अगर मेरे आदमी आपकी निगरानी न कर रहे होते तो उस निर्दोष व्यक्ति की जान बचाते-बचाते आप अपनी जान से हाथ धो बैठी होतीं," मेजर ने कहा "अच्छा, यह बताइए कि उस निर्दोष व्यक्ति ने आपको यहीं क्यों बुलाया था ?"

"वह मुझे कुछ हिदायतें देना चाहता था कि अब मुझे क्या करना चाहिए।"

"क्या आप मुझे अब बता सकती हैं कि कौन लोग उस निर्दोष व्यक्ति की जान लेना चाहते हैं ?"

"मैं अभी यह नहीं बता सकती।"

"क्या आपको मालूम है कि मिसेज़ ग्लोरिया जो आज सुबह आपसे मिलने आई थीं, उन्हें आज गेला नाइट होटल में मार डाला गया ?"

"हैं ?"

"मिसेज़ दिनशा, आपने आज सुबह मुझसे झूठ बोला था कि मिसेज़ ग्लोरिया एक पर्यटक हैं और उनके पास कुछ अनोखी चीजें हैं," मेजर ने कहा और फिर नाटकीय ढंग से बोला "लेकिन मिसेज़ ग्लोरिया अमेरिकन गुप्तचर विभाग की एक अनुभवी महिला जासूस थीं। क्या आपने उन्हें न्यूयार्क से बुलवाया था ?"

"नहीं।"

"फिर वह आपसे आकर क्यों मिलीं ?"

"वह उन लोगों के बारे में पूछताछ करती रहीं जिन्हें मैं अभी आपके हवाले नहीं कर सकती। मिसेज़ ग्लोरिया ने मुझसे कहा था कि मैं किसीको भी यह न बताऊं कि वह एक अमेरिकन जासूस हैं।"

"मिसेज़ दिनशा, आपपर और उस निर्दोष व्यक्ति पर घातक

आक्रमण हो चुका है। फिर आप उन लोगों के नाम बताने में क्यों हिचकिचा रही हैं ?"

"मेरे मित्र निर्दोष व्यक्ति का विचार है कि उन लोगों को बेनकाब करने का समय अभी नहीं आया है।"

"अच्छा तो आइए, हमारे साथ चलिए। हम आपको चर्नी रोड पहुचाकर अपने दफ्तर चले जाएंगे।"

मिसेज़ दिनशा उठकर खड़ी हो गईं। मालती ने उन्हें सहारा दिया।

मेजर ने बैरिक से बाहर आकर कहा, "मालती, तुम ज़रा मेरे साथ झाड़ियों तक चलो जहां से हल्की-सी चीख सुनाई दी थी।"

मालती मेजर के साथ चल दी। वह उन झाड़ियों में पहुंच गए जिनके पीछे से दुश्मन ने गोलियां चलाई थीं। एक झाड़ी के पीछे खन के कुछ छींटे दिखाई दिए। मेजर टार्च की रोशनी फैलाकर उस जगह को ध्यान से देखने लगा। एक जगह उसे एक चीज़ दिखाई दी। उसने वह चीज़ उठाकर अपने रूमाल में बांध ली।

"यह क्या चीज़ है ?" मालती ने पूछा।

"अभी तो मुझे भी मालम नहीं कि यह क्या है। दफ्तर पहुंचकर इसकी जांच करेंगे।"

मालती और मेजर उस जगह पहुंच गए जहां मिसेज़ दिनशा के साथ उनके साथी इंतज़ार कर रहे थे।

चालीस मिनट में वे चर्नी रोड पहुंच गए। मेजर कार से उतरकर मिसेज़ दिनशा की कार के पास आया जो उनके पिता के बंगले के सामने खड़ी थी।

"जाने से पहले मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हू मिसेज़ दिनशा।" मेजर ने कहा।

"पूछिए।"

"बैरिक में दो आदमी थे या एक आदमी था ?"

"एक ही आदमी था।"

"फिर मेरे साथियों ने दो आदमी क्यों देखे ?" मेजर ने कहा, "उन्होंने साफ-साफ देखा था कि उनमें से एक आदमी तो बहुत ही लम्बा था और दूसरा नाटे कद का था।"

"आपके साथियों को रात के अंधेरे में परछाइयों का धोखा हुआ होगा," मिसेज़ दिनशा ने कहा, "अच्छा गुडनाइट।"

"गुडनाइट।"

मेजर जब अपने साथियों के साथ दफ्तर पहुंचा तो रात के ग्यारह बज रहे थे ।

## १०. दो देहाती

मेजर बलवन्त ने विचार-विमर्श के लिए अपने साथियों को रोक लिया। उसने सिगरेट सुलगाकर बड़े इत्मीनान और सलीके से कश लगाते हुए कहा, "मैं आपको अधिक देर तक नहीं रोकूंगा। मैं केवल एक बात का स्पष्टीकरण चाहता हूं।"

"किस बात का स्पष्टीकरण चाहते हैं ?" मालती ने पूछा।

"मुझे एक बात बहुत परेशान कर रही है। मेरे दिमाग में एक गांठ बन गई है जो खुल नहीं रही। कोलाबा की बैरिक में असाधारण लम्बे ज्तशी को किसने देखा था ?"

"मैंने देखा था," सुधीर ने कहा।

"तुम्हें धोखा तो नहीं हुआ था ?"

"मैं विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता।" सुधीर ने उत्तर दिया।

"मुझे भी संदेह है कि मैंने एक लम्बे आदमी की परछाईं-सी देखी थी," मालती ने कहा।

"अच्छा, यह बताओ, नाटे कद के आदमी के विषय में तो किसीको संदेह नहीं ?"

"नहीं," सबने एकसाथ कहा।

"तुम लोग अब जा सकते हो, रात काफी बीत गई है। तुम सबको बड़ी सावधानी से अपने-अपने घर जाना होगा। यह ध्यान रखना कि कोई तुम्हारा पीछा न कर रहा हो।"

"आप निश्चिन्त रहिए।"

वे सब चले गए तो मेजर अपने बैडरूम में जाकर कपड़े बदलने लगा।

दूसरे दिन मेजर थोड़ी देर से जागा। वैसे वह रोज़ाना पांच बजे उठ बैठता था, लेकिन उस दिन पौने छः बजे तक सोता रहा।

मेजर बाथरूम में गुनगुना रहा था कि बैडरूम में टेलीफोन की घंटी बज उठी। वह जल्दी से नहाकर बाथरूम से निकला। उसने बदन पर एक तौलिया लपेट रखा था। बैडरूम में पहुंचकर उसने रिसीवर उठाकर कान से लगा लिया, "हैलो।"

"मेजर साहब, मैं इंस्पेक्टर राना बोल रहा हूं। अब तो आए दिन घटनाएं बढ़ती चली जा रही हैं।"

"क्यों क्या हुआ ?"

"दुश्मन ने मिसेज़ सरोज कपिल का मुंह अंधेरे अपहरण करके सीवड़ी के खेतों में मार डालने की कोशिश की। वे मिसेज़ सरोज कपिल के गले में फंदा डालकर उसे कसने ही वाले थे कि देहातियों ने घेर लिया। इसपर वे मिसेज़ सरोज कपिल को छोड़कर भाग गए। अगर देहाती पांच मिनट की देर कर देते तो आक्रमणकारी मिसेज़ सरोज कपिल का काम तमाम कर डालते।"

"मिसेज़ कपिल इस समय कहां हैं ?"

"इस समय मेरे पुलिस थाने में हैं," इंस्पेक्टर ने कहा।

"वह खुद आपके थाने में आई हैं या उस इलाके की पुलिस ने उन्हें आपके यहां पहुंचाया है ?"

"दो देहाती उनके कहने पर उन्हें मेरे थाने में लाए हैं।"

"उनको रोक रखिए। मैं आ रहा हूं।"

मेजर जल्दी से तैयार होकर पुलिस स्टेशन की ओर चल दिया।

इंस्पेक्टर राना के आफिस के बाहर दो हट्टे-कट्टे देहाती लट्ठ लिए एक बैंच पर बैठे थे। मिसेज़ सरोज कपिल इंस्पेक्टर राना के सामने एक कुर्सी पर बैठी थीं। उसके चेहरे का रंग पीला था। दाहिनी आंख के नीचे नील पड़ा हुआ था। दोनों कलाइयों पर गोलाई में नील पड़े हुए थे।

मेजर को देखकर मिसेज़ सरोज कपिल मुस्करा पड़ी। इंस्पेक्टर राना भी उसे देखकर प्रसन्न हुआ।

अभिवादन के बाद मेजर ने मिसेज़ सरोज कपिल के साथ वाली कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "बधाई हो, आपकी जान बच गई।"

मिसेज़ सरोज कपिल मेजर की इस बात पर बड़ी प्रसन्न हुई। उसके चेहरे का पीलापन दूर हो गया।

"आपको कष्ट तो होगा, कृपया विस्तार से सारी कहानी सुना दीजिए," मेजर ने कहा।

मिसेज़ सरोज कपिल ने एक गहरी सांस लेकर कहा, "आज सुबह चार बजे मुझे किसीने झंझोड़कर जगाया। उसने कहा—'उठो···' मैंने आंखें खोलीं तो मैंने अपनी गर्दन पर एक चाकू रखा देखा। एक नकाबपोश मेरे ऊपर झुका हुआ था। मेरी

चीख हलक में ही अटककर रह गई। उस नकाबपोश के पीछे एक और नकाबपोश खड़ा था। उसके हाथ में एक रस्सी थी। उस दूसरे नकाबपोश के पीछे एक तीसरा नकाबपोश खड़ा था, जिसके हाथ में रिवाल्वर था।'

"क्या उनका चेहरा आपने बिलकुल नहीं देखा ?"

'नहीं," मिसेज़ सरोज कपिल ने कहा, "उन्होंने मेरी कलाइयां रस्सी से बांधकर मेरे दोनों हाथ पीठ पर बांध दिए। जब वे मेरे मुंह में कपड़ा ठूंसने लगे तो मैंने एक नकाबपोश के हाथ में दांत गड़ा दिए। वह चीखकर पीछे हटा और फिर उसने मेरी दाहिनी आंख पर एक ज़ोरदार मुक्का मारा।"

मेजर ने मिसेज़ सरोज कपिल की दाहिनी आंख के नीचे और कलाइयों पर पड़े नील के निशान देखे। वे निशान मिसेज़ सरोज कपिल के बयान की पुष्टि कर रहे थे।

मिसेज़ सरोज कपिल ने कहा, "नकाबपोशों ने मेरे मुंह में कपड़ा ठूंस दिया। और एक हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने मुझे उठाकर अपने कंधे पर डाल लिया। उनकी कार मेरे मकान से लगभग दो फर्लांग दूर खड़ी थी। उस नकाबपोश ने मुझे कार की पिछली सीट पर डाल दिया। अंधेरे के कारण मुझे मालूम न हो सका कि वे मुझे कहां ले जा रहे हैं। कुछ देर बाद कार वीरान खेतों के पास पहुंचकर रुक गई। उसी हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने मुझे कार से निकालकर अपने कंधे पर डाल लिया और एक खेत में एक पेड़ के तने से टिकाकर बैठा दिया। भोर का उजाला अब थोड़ा-थोड़ा फैलने लगा था। हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने उस नकाबपोश से जिसके हाथ में रस्सी थी, कहा, "चलो, पहले तुम्हारी बारी है।" मैं एक सहमी हुई भेड़ की तरह उनकी ओर देखने लगी। हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने मेरी बेबसी को भांप लिया। उसने कहा, "हम विश्वासघात करने वाले की पत्नी को भी क्षमा नहीं करते। बताओ, तुमने बाकी ज़ेवर कहां छिपा रखे हैं ? मेरा मुंह बंधा हुआ था इसलिए मैं कोई उत्तर न दे सकी। मैंने अपने मुंह की ओर इशारा किया कि मेरा मुंह खोल दिया जाए। हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने अपने एक साथी को आदेश दिया, 'इसका मुंह खोल दो।' जब मेरा मुंह खोल दिया गया तो मैंने उत्तर दिया, 'मेरे पास जितने भी ज़ेवर थे चोरी हो गए। अब मेरे पास एक भी ज़ेवर नहीं है।' फिर मैंने पूछा तुम लोग मुझे विश्वासघाती की पत्नी क्यों

कह रहे हो ? तुम्हारा इशारा किसकी ओर है ? 'हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने कहा, 'सोमदत्त कपूर ।' यह सुनकर मैं चुप हो गई। हट्टे-कट्टे नकाबपोश ने रस्सी वाले नकाबपोश से कहा, 'पहले तुम्हारा हक है ।' वह नकाबपोश रस्सी लिए मेरी ओर बढ़ा। मैं सहम गई । उसने मेरी गर्दन में फंदा डाल दिया । जब वह फंदा कसने लगा तो मेरे मुंह से चीख निकल गई । मेरी चीख सुनते ही कुछ देहाती दौड़कर हमारी ओर आए। उन्होंने लगभग घेर लिया । आक्रमणकारी नकाबपोशों के हाथ-पांव फूल गए। वे बौखलाहट में मुझे गोली भी न मार सके ।"

"आपका तात्पर्य है कि अगर वे चाहते तो आपको गोली मार सकते थे ?"

"हां भागने से पहले मुझे गोली मार सकते थे ।"

"लेकिन फिर भी उन्होंने आपपर गोली नहीं चलाई !" मेजर ने कहा ।

मिसेज़ सरोज कपिल ने मेजर की ओर अर्थपूर्ण निगाहों से देखते हुए कहा, "वे लोग चारों ओर से बढ़ते हुए देहातियों को देखकर गोली चलाने के बजाय भाग जाने का रास्ता तलाश करने लगे थे ।"

"हूं ।"

"बीस-पचीस देहाती लट्ठ लिए मेरे पास आ गए । उन्होंने मेरे हाथ-पैर खोल दिए । कुछ देहातियों ने लाठियां लेकर नकाबपोशों का पीछा भी किया । लेकिन नकाबपोशों ने उनपर गोलियां चलाईं। इसलिए पीछा करने वाले देहाती रुक गए ।"

"देहातियों ने मेरे साथ बहुत ही सहानुभतिपूर्ण व्यवहार किया । मैं अकेली ही इंस्पेक्टर साहब के पास आना चाहती थी, लेकिन देहातियों ने कहा कि संभव है, आक्रमणकारी कहीं रास्ते में घात लगाए बैठे हों, इसलिए वे मेरे साथ यहां तक आए ।"

मेजर ने देहातियों की ओर मुंह मोड़कर कहा, "आपने मिसेज़ सरोज कपिल के बंधन खोले थे । इनके गले में पड़े हुए फंदे के विषय में आपकी क्या राय है ?"

एक देहाती ने अक्खड़ स्वर में कहा, "हुज़ूर, फंदा तो बड़ा मज़बूत रहा । बस एक कसाव और पड़ता तो बीबीजी की आंखें उबल पड़तीं और दम घुट जाता ।"

"लेकिन सरकार, मैं कुछ और ही कहूं हूं," दूसरा देहाती

बोला। इस देहाती की आयु पहले की अपेक्षा अधिक थी, "हमने भी रस्से की बहुत-सी गाठें दी हैं। मैंने वह गांठ देखी थी। मुझे तो उस गांठ में ज़्यादा कसाव दिखाई नहीं दिया।"

"हूं," मेजर ने कहा, "आप दोनों का बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके काम का हर्ज़ हुआ और आपको दूर से आना पड़ा है। है तो बुरी बात, लेकिन हमारी ओर से यह भेंट स्वीकार कर लीजिए," मेजर ने कहा और दस-दस रुपये के दो नोट उनकी ओर बढ़ा दिए।

दोनों देहातियों को जैसे सांप सूंघ गया, "सरकार, हम ये रुपये नहीं लेंगे। हमारे सिर पर पाप की गठरी न लादिए। आदमी के नाते हर आदमी का धरम है कि आदमी की मदद करे," यह कहकर दोनों देहाती उठ खड़े हुए और नमस्ते करके इंस्पेक्टर राना के आफिस से बाहर निकल गए।

मेजर ने कहा, "देखा, हमारे देश के देहात में अब भी कुछ इंसानियत बाकी है।"

इंस्पेक्टर राना ने कहा, "मिसेज़ कपिल पर आक्रमण क्यों किया गया? आक्रमणकारियों ने कहा था कि वे विश्वासघाती की पत्नी को भी क्षमा नहीं करते। क्या मिसेज़ सरोज कपिल के प्रति मि० कपूर इन आक्रमणकारियों के साथी थे? क्या उन्होंने अपने साथियों के साथ विश्वासघात किया था?"

"क्या कहा जा सकता है। मानव-चरित्र विचित्र होता है," मेजर ने कहा। और फिर उसने मिसेज़ कपिल से पूछा, "आपने आक्रमणकारियों की बातें सुनी थीं। आपने उनकी बोलचाल से क्या अंदाज़ा लगाया?"

"यद्यपि वे हिन्दुस्तानी में बात कर रहे थे, उनका उच्चारण भी शुद्ध था। लेकिन उनका बोलने का ढंग कुछ अपरिचित-सा था।"

"मिसेज़ सरोज कपिल, अब आप क्या करना चाहती हैं?"

"मैं अपने घर जाना चाहती हूं।"

"यह कैसे हो सकता है," इंस्पेक्टर राना ने कहा, "आपकी ज़िन्दगी खतरे में है। दुश्मन आपकी टोह में होगा। आपको सुरक्षा की आवश्यकता है।"

"मेरा विचार है कि अब मैं अपनी हिफाज़त कर लूंगी," मिसेज़ सरोज कपिल ने कहा।

"आप अपनी हिफाज़त कैसे कर पाएंगी ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"मैं अपनी सहेली के यहां चली जाऊंगी, उसके बंगले में हथियारबन्द चौकीदार रहता है।"

"अगर आप चाहें तो आप मेरे यहां चल सकती हैं," मेजर ने प्रस्ताव रखा।

"नहीं नहीं," मिसेज़ कपिल ने कहा और वह अपनी कुर्सी पर कसमसाने लगी।

"खैर, आप अपनी सहेली के यहां चली जाइए। आइए, मैं आपको छोड़ दूंगा।"

मिसेज़ कपिल उठकर खड़ी हो गई, "आप मुझे मेरे घर पर छोड़ दीजिएगा। वहां से सामान लेकर मैं अपनी सहेली के यहां चली जाऊंगी।"

"अच्छी बात है," मेजर ने कहा और इंस्पेक्टर से विदा लेकर दरवाज़े की ओर बढ़ गया। मिसेज़ सरोज कपिल उसके पीछे थीं।

रास्ते में मेजर ने मिसेज़ सरोज कपिल से कोई विशेष बात नहीं की। बस इतना ही पूछा कि उनकी सहेली कहां रहती है।

मिसेज़ सरोज कपिल ने बताया, "मेरी सहेली सीता रमन बांदरा में रहती हैं। उनकी कोठी का नाम 'मनोहर कुंज' है।"

इसके बाद मेजर ने मिसेज़ सरोज कपिल से कुछ नहीं पूछा। और उन्हें किंग सर्किल में उनके मकान के सामने उतारकर अपने आफिस की ओर चल पड़ा।

मेजर जब अपने आफिस में पहुंचा तो उसके सभी साथी उसकी प्रतीक्षा में बैठे हुए थे।

मेजर ने उन्हें आज की घटना सुनाई, जिसे सुनकर मालती ने कहा, "अगर आपका फार्मूला आज की घटना पर भी लागू किया जाए तो यह घटना भी दोहरी घटना हो सकती है। मैं काफी सोच-विचार के बाद इस परिणाम पर पहुंची हूं कि कल रात की घटना भी दोहरी थी।"

"क्या कल रात की घटना तुम्हें दोहरी मालूम होती है ?" मेजर ने पूछा।

"अगर आप कल की घटना की कड़ियां मिलाएं तो उसको दोहरा सिद्ध करने में कोई कठिनाई न होगी," मालती ने उत्तर दिया।

"तुम सिद्ध करो कि कल की घटना दोहरी थी।" मेजर ने कहा।

"मैं इसका स्पष्टीकरण करती हूं," मालती बोली, "कल हम मिसेज़ दिनशा शीरीं के बंगले की निगरानी करते रहे। मिसेज़ दिनशा शीरीं को मालूम हो चुका था कि उनके बंगले की निगरानी की जा रही है। उन्होंने फोन पर किसी व्यक्ति को सूचित किया होगा कि उनके बंगले की निगरानी की जा रही है। उस आदमी ने हमें धोखा देने के लिए मिसेज़ दिनशा को राय दी होगी कि वह घर से निकलें और हम लोगों को अपना पीछा करने दें। उसीके परामर्श के अनुसार मिसेज़ दिनशा हमें धोखा देकर बैरिक की ओर ले गईं। और फिर उन्होंने गोलियां चलाने का नाटक रचाया।"

"मालती, तुम्हारा तर्क उचित मालूम होता है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि उन्होंने यह नाटक क्यों रचाया?"

"हमें यह दिखाने के लिए कि हत्या की घटनाओं से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि उनकी ज़िन्दगी के लिए खतरा है।"

"मैं तुम्हारी इस बात पर विचार करूंगा," मेजर ने कहा, "मेरे पास एक चीज़ है, जिसे मैंने धोकर सूखने के लिए रख दिया है। यह चीज़ कल कोलाबा की बैरिक के पीछे मुझे एक झाड़ी के पीछे मिली थी।"

"हां, मैं आपके साथ थी। मैंने उसके विषय में आपसे पूछा भी था।"

"मैं तुम सबको वह चीज़ दिखाता हूं। मेरा विश्वास है कि हम उस चीज़ के द्वारा मामले की गहराई तक पहुंच जाएंगे।"

यह कहकर मेजर बाथरूम में चला गया। जब वह पांच मिनट बाद लौटा तो उसने देखा इंस्पेक्टर राना भी वहां पहुंच गया था।

"कहिए इंस्पेक्टर साहब, कैसे आना हुआ?" मेजर ने पूछा।

"मैं एक विशेष कारण से आया हूं," इंस्पेक्टर राना ने कहा, "मिसेज़ ग्लोरिया के थैले से कुछ और चीज़ें भी निकली हैं। कुछ गुप्त कागज़ात हैं, जो गुप्त भाषा में लिखे हुए हैं। मैंने गुप्त भाषा के विशेषज्ञों को वे कागज़ दिखाए थे। वे लोग बड़ी कोशिशों के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मिसेज़ ग्लोरिया को यहां के ही किसी निवासी ने बुलाया था। वह व्यक्ति मिसेज़ ग्लोरिया का मित्र

था। उसने मिसेज ग्लोरिया को यह कहकर बुलाया था कि वह पिछले डेढ़ वर्ष से जिन अपराधियों को पकड़ पाने में असफल रही हैं वह उन्हें पकड़वा सकता है।"

"खब, लेकिन वह है कौन ?" मेजर ने पूछा।

"कागज़ात से इस बात का पता नहीं चलता।"

"क्या आप उन कागज़ातों को मेरे पास छोड़ सकते हैं ?"

"मैं आप ही के लिए लाया हूं," यह कहकर इंस्पेक्टर राना ने अपनी जेब से कुछ कागज़ात निकालकर मेजर के सामने रख दिए और फिर उसने पूछा, "आपके हाथ में यह कैसा कागज़ है ?"

"अभी बताता हूं कि इस कागज़ में क्या है," मेजर ने कहा और कागज़ खोलकर एक चीज़ अपनी हथेली पर ले और फिर एक-एक कर सबको दिखाने लगा। जब उसने वह चीज़ सबको दिखा दी तो उसने पूछा, "क्या आप लोग बता सकते हैं कि यह चीज़ क्या है ?"

"विचित्र-सी चीज़ है," डोरा बोली।

"मुझे तो किसी जानवर का सूखा हुआ गोश्त मालूम होता है," सुधीर ने कहा।

"इंस्पेक्टर साहब, आपकी क्या राय है ?"

"मुझे तो यह किसी कुतिया के थन का अगला हिस्सा मालूम होता है" इंस्पेक्टर राना ने उत्तर दिया।

"आप लोग नहीं बता सकेंगे कि यह चीज़ क्या है," मेजर ने कहा, "यह किसी स्त्री के स्तन का अगला भाग है। गोश्त के अंदर जो लाल-सी धारी दिखाई देती है, यह ऊन का धागा है जो गोश्त में फंस गया है। कल रात हममें से किसीकी गोली से किसी स्त्री के स्तन का अगला भाग उड़ गया। वह स्त्री स्वेटर पहने हुए थी।"

"कल रात आपमें से किसीकी गोली से किसी स्त्री के स्तन का अगला हिस्सा उड़ गया था ?" इंस्पेक्टर ने उत्सुकता से पूछा।

"जी हां," मेजर ने कहा और फिर पिछली रात की पूरी कहानी इंस्पेक्टर राना को सुना दी।

"ओह, इसका मतलब तो यह है कि दुश्मन अब खुलकर सामने आ रहा है," इंस्पेक्टर राना बोला।

मेजर ने कुछ सोचते हुए इस रहस्य को खोलते हुए कहा, "आपने स्तन का जो भाग देखा है वह किसी भारतीय नारी के

स्तन का नहीं है। यह किसी गौर वर्ण नारी का है। और इसी आधार पर मैं कह सकता हूं कि मिसेज़ दिनशा ने कल नाटक नहीं रचाया था, बल्कि हमपर सचमुच ही दुश्मन ने आक्रमण किया था। दुश्मन के गिरोह में एक गोरी स्त्री भी है। और यह भी संभव है कि दुश्मन गोरे लोग ही हों।"

"मैं नहीं मानता। इन गोरों को सोमदत्त कपूर और राजीव प्रभाकर से क्या द्वेष हो सकता था ?" इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"मामला बहुत ही पेचीदा है," मेजर बोला, "लेकिन इंस्पेक्टर साहब, आज आपको बहुत दौड़धूप करनी होगी। आपके पास बम्बई में आए हुए विदेशी पर्यटकों और हिप्पियों की लिस्ट होगी। उससे आपको उन लोगों के ठिकाने का पता भी चल जाएगा। आप इन लोगों में ऐसी स्त्री को खोजिए, जिसका सीना घायल हो।"

"मैं अभी जाकर दौड़धूप शुरू कर देता हूं," इंस्पेक्टर राना ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा।

इंस्पेक्टर राना के चले जाने के बाद मेजर ने सोनिया और मालती से कहा, "तुम दोनों मिसेज़ सरोज कपिल के मकान पर जाओ और यह देखो कि वह वहां है या नहीं। अगर वहां न हो तो फिर बांदरा में जाओ। वहां मनोहर कुंज नामक बंगले में होगी। यह बंगला उसकी सहेली सीता रमन का है। तुम दोनों नये मेकअप में जाना।"

मालती और सोनिया उठकर मेकअप रूम में चली गईं।

मेजर ने डोरा और सुधीर से कहा, "तुम दोनों धोबी और धोबिन के वेश में चर्नी रोड जाकर मिसेज़ दिनशा शीरीं के बंगले की निगरानी करो।"

सुधीर और डोरा भी मेकअप रूम में चले गए।

मेजर ने क्रेडिल पर से रसीवर उठाकर मिसेज़ दिनशा शीरीं का नम्बर डायल किया।

दूसरी ओर से मिसेज़ दिनशा शीरीं की आवाज़ सुनाई दी, "हैलो।"

"मिसेज़ दिनशा, आप दुश्मनों को मेरे हवाले करने केलिए तैयार हैं या नहीं ?"

"अभी नहीं," मिसेज़ दिनशा ने कहा।

"तो फिर आप मेरे एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। आप जिस

व्यक्ति के प्राण बचाने की कोशिश कर रही हैं वह भारतीय है या विदेशी है ?"

दूसरी ओर से मिसेज़ दिनशा के हंसने की आवाज़ आई। उन्होंने कहा, "वह भारतीय है और अभारतीय भी है।"

"मैं समझा नहीं," मेजर बोला।

"समय आने पर आप समझ जाएंगे।"

"अच्छी बात है। धैर्य रखना मेरा स्वभाव है," यह कहकर मेजर ने रिसीवर रख दिया।

डोरा, सुधीर, मालती और सोनिया के चले जाने के बाद मेजर ने इंस्पेक्टर राना को फोन किया। वह अपने आफिस में नहीं था। फोन रिसीव करने वाले से मेजर ने पूछा, "इंस्पेक्टर राना की अनुपस्थिति में थाने का इंचार्ज कौन होता है ?"

"मैं ही होता हूं, मेजर साहब," एक हैड कांस्टेबल ने उत्तर दिया।

"क्या तुम एक काम कर सकते हो ?"

"फर्माइए।"

"सोमदत्त कपूर के सूटकेस से जो चीज़ें बरामद हुई थीं, वे एक अल्मारी में रखी हुई हैं। उनमें एक चीज़ ऐसी है जो देखने में जूता, डम्बल और बाक्सिग में काम आने वाले दस्ताने भी मालूम होती है। क्या तुम वह चीज़ मेरे पास भिजवा सकते हो ?"

"अभी भिजवाए देता हूं," हैड कांस्टेबल ने कहा।

मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

थोड़ी देर बाद ही एक कांस्टेबल मोटर साइकिल पर वह चीज़ लेकर आ गया।

मेजर ने बड़े ध्यान से उस चीज़ को देखा। उसकी समझ में न आया कि वह चीज़ क्या है और किस काम के लिए बनाई गई है। और सोमदत्त के सूटकेस में यह चीज़ क्यों थी ? वह काफी देर तक उस चीज़ की बनावट का अध्ययन करता रहा और फिर उसने अपने माथे पर ज़ोर से हाथ मारकर कहा, 'मैं भी कितना मूर्ख हूं। मैं अभी तक क्यों नहीं समझ पाया कि यह चीज़ किस काम के लिए बनाई गई है। यह तो एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण चीज़ है। यही मुझे मेरी मंज़िल तक ले जाएगी ?"

मेजर ने वह चीज़ एक विशेष अल्मारी में बंद कर दी और उन कागज़ात का अध्ययन करने लगा जो मिसेज़ ग्लोरिया के थैले

से निकले थे और जिनको इंस्पेक्टर राना उसकी मेज पर रख गया था। तीन घंटे की कोशिश के बाद मेजर को उन कागजातों को पढ़ पाने में सफलता मिल गई। उसके होंठ गोल हो गए और वह जोर-ज़ोर से सीटी बजाने लगा। तभी नौकरानी कॉफी लेकर आ गई।

नौकरानी को देखकर मेजर ने दीवार पर लटके क्लॉक पर नजर डाली। शाम के पांच बज रहे थे।

"ओह, मैंने आज इन दो चीज़ों में कितने घंटे बर्बाद कर डाले," मेजर ने कहा और कॉफी पीने लगा।

अचानक टेलीफोन की घंटी बज उठी। मेजर ने रिसीवर उठाकर कहा, "हैलो।"

"मेजर साहब, इस शताब्दी में केवल आप ही चमत्कार दिखा रहे हैं," दूसरी ओर से इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"क्यों, क्या हुआ ?"

"मैंने आपके आदेश के अनुसार शहर-भर की पुलिस को उस पर्यटक या हिप्पी स्त्री की खोज करने में जुटा दिया जिसके सीने पर पट्टी बंधी हो।"

"क्या ऐसी स्त्री मिल गई ?"

"नहीं, उन लोगों में तो नहीं मिली।"

"फिर कहां मिली ?"

"श्मशान घाट पर।"

"आप क्या कह रहे हैं ?" मेजर ने आश्चर्य से पूछा।

"मैं सच कह रहा हूं," इंस्पेक्टर ने हंसते हुए कहा, "आप जिन लोगों की तलाश में हैं वे साधारण लोग नहीं हैं। वे अपने अपराध को छिपाने के लिए ऐसी चाल चलते हैं कि आदमी दंग रह जाए।"

"आप इस समय कहां से बोल रहे हैं ?"

"श्मशान घाट के पास के एक बंगले से।"

"आप किस कालोनी के श्मशान घाट के पास हैं ?"

"जोगेश्वरी के श्मशान घाट के पास।"

"क्या आप जोगेश्वरी के श्मशान घाट पर मिलेंगे ?"

"अगर आप उस स्त्री से मिलना चाहते हैं तो चले आइए। उससे मिलकर आप भी दंग रह जाएंगे।"

"मैं अभी पहुंच रहा हूं।"

मेजर ने जल्दी-जल्दी कॉफी पी और जोगेश्वरी के श्मशान

घाट की ओर चल दिया। घंटे-भर बाद मेजर की कार श्मशान घाट पर पहुंच गई। इंस्पेक्टर राना ने श्मशान घाट के द्वार पर ही मेजर का स्वागत किया और फिर उसे अंदर ले जाकर एक बहुत ही सजी हुई अर्थी के पास खड़ा कर दिया। उस अर्थी पर बहुत ही सुन्दर रंगीन दुशाला पड़ा हुआ था। अर्थी के चारों ओर रंग-बिरंगे गुब्बारे बंधे हुए थे और सारी अर्थी रंग-बिरंगे फूलों से सजी हुई थी।

इंस्पेक्टर राना ने अर्थी के सिरहाने की ओर से दुशाला हटाकर अंदर की चादर भी हटा दी। चादर के नीचे एक गोरी स्त्री की नंगी लाश थी। उसके दाहिने स्तन की नोक कटी हुई थी।

"यही वह स्त्री है न, जिसके बनियान या स्वेटर का हिस्सा आपकी या आपके किसी साथी की गोली से उड़ गया था?" इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"यह वही स्त्री हो सकती है," मेजर ने कहा।

"मेजर साहब, मैं अपने शब्द फिर दोहराता हूं कि इस शताब्दी में केवल आप ही चमत्कार दिखा सकते हैं। आपने कहा था कि एक स्त्री के स्तन का अगला भाग गोली से उड़ गया है। आपका अनुमान बिल्कुल सत्य सिद्ध हुआ।"

"लेकिन यह स्त्री अर्थी में यहां कैसे पहुंची?" मेजर ने पूछा।

"जो लोग इस अर्थी को यहां तक लाए, उनकी सूझबूझ की प्रशंसा करनी पड़ेगी," इंस्पेक्टर राना ने कहा।

मेजर बड़े ध्यान से उस गोरी स्त्री की लाश देख रहा था। उसके गले में रस्सी का फंदा था और एक चाकू गर्दन के आर-पार था। लेकिन उसके सीने में गोली का निशान नहीं था। वह स्त्री सुन्दर तो नहीं कही जा सकती थी, लेकिन फिर भी उसका डीलडौल आकर्षक था।

"आप इत्मीनान से इस स्त्री की अर्थी यहां लाए जाने की कहानी सुनाइए।"

इंस्पेक्टर राना ने कहा, "इस इलाके के लोगों ने पहली बार एक सजी हुई अर्थी के साथ केवल चार आदमी देखे। केवल चार आदमियों को अर्थी उठाए देखकर लोगों के मन में उनके प्रति सहानुभूति जाग उठी और वे उनकी सहायता के लिए अर्थी के साथ चल पड़े। धीरे-धीरे अर्थी के जुलूस में सम्मिलित लोगों की संख्या बढ़ती गई। जो चारों आदमी अर्थी उठाए हुए थे, थकान

और घबड़ाहट अनुभव करने लगे। अर्थी को खूब सजी हुई देखकर लोगों ने समझा कि किसी ऐसे व्यक्ति की अर्थी है जिसने लम्बी उम्र पाई थी। यह सोचकर लम्बी उम्र पाने और पुण्य कमाने के लिए लोगों ने चारों लोगों को हटाकर अर्थी को कंधा देना शुरू कर दिया। अर्थी श्मशान घाट में लाकर रख दी गई। और जो चारों आदमी अर्थी लेकर आए थे, श्मशान घाट के पास वाली टाल से चिता के लिए लकड़ी लेने चले गए। उन चारों के जाने के बाद जो लोग अर्थी के पास रह गए, उन्होंने सोचा, क्यों न उस वृद्ध महापुरुष के दर्शन कर लिए जाएं जिसने इतनी लम्बी उम्र पाई है। उन्होंने दुशाला और चादर हटाकर मरने वाले का चेहरा जैसे ही देखा, कुहराम मच गया। वे चारों आदमी शोर सुनकर भाग खड़े हुए। भाग्य ने उनकी सारी योजना मिट्टी में मिला दी। वह चाहते थे कि चुपके से अर्थी श्मशान घाट पहुंच जाए और फिर उसे चिता पर रखकर वे अपने अपराध का नाम-निशान मिटा दें।"

"उनकी चाल थी तो बड़ी शानदार," मेजर ने कहा, "लेकिन कभी-कभी भाग्य इंसान का साथ नहीं देता।"

"मैं तभी से सोच रहा हूं कि इस स्त्री की हत्या क्यों की गई ?" इंस्पेक्टर राना ने कहा।

"यह एक सीधा-सा मामला है। हमारी गोली से इस स्त्री का स्तन घायल हो गया। वे लोग इसे न तो किसी अस्पताल में भर्ती करा सकते थे और न किसी प्राइवेट डाक्टर से ही इलाज करा सकते थे। क्योंकि डाक्टरों को देखते ही पता चल जाता कि स्तन के सिरे के उड़ने का कारण क्या है। और स्तन का यह घाव ऐसा था जो किसी भी पेटेंट मरहम से ठीक नहीं हो सकता था। इसलिए इस स्त्री के साथियों के सामने इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था। उन्होंने इसे मौत के घाट उतार दिया," मेजर ने विस्तार से बताया।

"एक बात और भी है। इन लोगों ने इस स्त्री की हत्या करने का ढंग वही क्यों अपनाया जिस ढंग से राजीव प्रभाकर और सोमदत्त कपूर की हत्या की गई थी ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"लेकिन आपने देखा है कि वह अंदाज़ पूरी तरह नहीं अपनाया गया है। इस स्त्री की गर्दन में रस्सी का फंदा है, गले में चाकू भी आरपार है, लेकिन सीने पर गोली का निशान नहीं है। और इस हत्या का यह अधूरा ढंग मुझे बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिखाई

दे रहा है।"

'यह महत्त्वपूर्ण क्यों है ?"

"मुझे इस बात पर विचार करना पड़ेगा। आप मुझे यह बताइए कि जो चार आदमी इस अर्थी को उठाकर लाए थे वे कैसे थे और उनका हुलिया क्या था ?"

"उनमें से एक के सिर पर तो पगड़ी थी और शेष तीनों के सिर मुंडे हुए थे। वे लोगों को यह दिखाना चाहते थे जैसे उनकी मां मर गई हो। चौथा पगड़ी वाला आदमी किसी फर्म का ड्राइवर मालूम होता था। उसने ड्राइवरों जैसी वर्दी पहन रखी थी।"

"तीन आदमियों के सिर मुंडे हुए थे और उसने पगड़ी बांध रखी थी ?" मेजर ने कहा।

"जी हां।"

"बड़े आश्चर्य की बात है," मेजर बोला, "वे तीनों अपना सिर कैसे मुंडा सकते थे। उनमें से एक तो किसी भी दशा में सिर नहीं मुंडा सकता था।"

इंस्पेक्टर मेजर की इस बात पर बहुत हैरान हुआ, और बोला, "क्यों, उनमें से एक अपना सिर क्यों नहीं मुंडा सकता था ?"

मेजर ने हंसकर कहा, "यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्वाइंट है। मैं फिर बताऊंगा। आप यह बताइए कि उन तीनों का रंग कैसा था ?"

'लोग कहते हैं कि तीनों का रंग सांवला था। उनमें से एक ने खद्दर के कुर्ते पर काले चमड़े की जाकेट पहन रखी थी और जाकेट के नीचे गले में एक मोटा-सा मफलर लपेट रखा था। वह खांस रहा था। शायद उसे बुखार था। लोगों की राय है कि शायद वह बुखार से उठा था और उसे सर्दी लग रही थी।"

इंस्पेक्टर की यह बात सुनकर मेजर हंस पड़ा।

"आप हंस क्यों रहे हैं ?" इंस्पेक्टर राना ने कुछ झेंपकर कहा।

"उस आदमी को बुखार नहीं था। मैं जानता हूं कि वह कौन था—वह आदमी नहीं, औरत थी।"

"कृपया साफ-साफ बताइए न।"

"आपको सब कुछ साफ-साफ बताने का समय निकट आ गया है," मेजर ने कहा, "यहां से जाकर आपको तुरंत एक काम करना

होगा ।"

"क्या काम करना होगा ?"

"आपको अमेरिकन गुप्तचर मिसेज़ ग्लोरिया के हेडक्वार्टर को एक समुद्री तार देना होगा । और यह पूछना होगा कि मिसेज़ ग्लोरिया को बम्बई क्यों भेजा गया था । वह किन लोगों की तलाश में यहां आई थी । और जिस समय मिसेज़ ग्लोरिया न्यूयार्क से रवाना हुई, वे लोग कहां रहते थे । और मिसेज़ ग्लोरिया को तार देने वाला हमदर्द कौन था ?"

इंस्पेक्टर राना ने सारी बातें नोट कर लीं ।

"अच्छा, अब मैं चलता हू । फिर मुलाकात होगी," मेजर ने कहा और श्मशान घाट से बाहर खड़ी अपनी कार की ओर चल दिया ।

## ११. साधु

मेजर के आफिस में मालती और सोनिया उसके इंतज़ार में बैठी थीं । मेजर ने देखा कि जिस तरह वह उन्हें कुछ बताने के लिए व्यग्र था, उसी तरह वे दोनों भी मेजर को कुछ बताने के लिए व्यग्र थीं । पहले मेजर ने आज की सारी कहानी सुनाई । कहानी सुनाते समय मेजर बार-बार सोनिया की ओर देख रहा था क्योंकि सोनिया बेल बाटम की ड्रेस में बहुत ही सुन्दर पारसी युवती दिखाई दे रही थी । मालती ने जीन और बहुत ही कसा हुआ ब्लाउज़ पहन रखा था । दोनों किसी सम्पन्न परिवार की सदस्या दिखाई दे रही थीं ।

मेजर जब अपनी कहानी सुना चुका तो मालती ने कहा, "विचित्र बात है । जिन तीन आदमियों की चर्चा आपने की है, वैसे ही तीन आदमियों को हम अभी-अभी देखकर आ रहे हैं ।"

"कहां ?"

"मिसेज़ सीता रमन के बंगले मनोहर कुंज में ।" सोनिया बोली ।

"क्या कह रही हो तुम ?"

मालती ने हंसते हुए कहा, "हमने जो कुछ देखा है वही आपको बता रही हैं । जिन तीन व्यक्तियों का आपने उल्लेख किया है, डेढ़ घंटे पहले मिसेज़ सरोज कपिल से उनकी सहेली सीता रमन

के बंगले में मिले। मिसेज़ सरोज कपिल उन तीनों को मि० कठालिया के यहां ले गईं। सोनिया ने मिसेज़ कपिल का पीछा किया और मैं मिसेज़ सीता रमन से पूछताछ करने के लिए रुक गई।

"तुम्हें मिसेज सीता रमन से क्या बातें मालूम हुईं ?"

"मिसेज सीता रमन होम्योपैथ डाक्टर हैं। बहुत ही सीधी-सादी महिला हैं। उन्होंने आज से पांच साल पहले सरोज कपिल का इलाज किया था। इलाज के दिनों में ही उन दोनों में मित्रता हो गई। मिसेज़ सीता रमन विधवा हैं। उनके दो बच्चे हैं। एक लड़का और एक लड़की। लड़की बंगलौर में पढ़ रही है और लड़का इंग्लैंड में टेक्सटाइल इंजीनियरिंग का कोर्स कर रहा है। मिसेज़ सीता रमन संदिग्ध स्त्री मालूम नहीं होतीं।"

मेजर ने सोनिया से कहा, "तुम अपनी रिपोर्ट दो सोनिया।"

सोनिया ने कहा, "मुझे मालूम नहीं था कि मिसेज़ सरोज कपिल उन तीनों आदमियों को मि० कठालिया के यहां ले जाएंगी। वह उन तीनों को वहां छोड़कर आ गईं तो मैंने दोबारा उनका पीछा किया। वह फिर मिसेज़ सीता रमन के बंगले में लौट आईं और फिर कहीं नहीं गईं।"

• "तुमने बहुत बड़ी भूल की सोनिया।" मेजर ने कहा।

"क्यों ?"

"तुम्हें मि० कठालिया के मकान की निगरानी करनी चाहिए थी। और जब वे तीनों आदमी बाहर आते तो उनका पीछा करतीं।"

सोनिया ने अपनी भूल स्वीकार कर ली।

मेजर ने कहा, "सोनिया, तुम्हें इस भूल के लिए दंड दिया जाएगा। तुम इसी समय जाओ और कठालिया के मकान की निगरानी करो।"

"मैं इस दंड को हल्का करने में सोनिया की सहायता करूंगी," मालती ने कहा।

सोनिया और मालती उठकर आफिस के दरवाज़े की ओर बढ़ गईं।

उन दोनों को गए हुए अधिक देर नहीं हुई थी कि सुधीर और डोरा आ गए। मेजर उस समय ह्विस्की पी रहा था।

"हम एक बहुत ही सनसनीपूर्ण समाचार लाए हैं। आज मिसेज़ दिनशा शीरीं ग्वालियर टैंक के भैरों के मंदिर में एक साध

से मिलीं।"

"साधु से ?"

"जी हां।" सुधीर ने कहा।

"साधु कैसा था ?" मेजर ने कहा, "विचित्र बात है कि एक पारसी स्त्री हिन्दू देवताओं की पूजा करने लगी है। क्या वह कोई चमत्कारी साधु था ?"

"मैंने मंदिर में आने-जाने वाले लोगों से उस साधु के विषय में पूछा तो पता चला कि वह साधु एक दिन पहले ही मंदिर में आया है। वह पिछली रात साढ़े ग्यारह बजे मंदिर में आया था। उसने अपने बदन पर भभूत रमाई हुई थी। उसने अपने आगे धरती में एक त्रिशूल गाढ़ रखा था। उसने दोनों बांहों पर कीममी पत्थरों से जड़े चौड़े-चौड़े मखमली फीते बांध रखे थे।"

"जड़ाऊ फीते कोहनियों पर बांध रखे थे ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां।"

"उस साधु का डीलडौल और कद कैसा था ?"

"कद पांच फुट आठ इंच से अधिक नहीं था। चेहरे पर राख मली होने पर भी वह सुन्दर दिखाई दे रहा था।"

"मिसेज़ दिनशा शीरीं उसके पास क्यों गई थीं ?"

"उन्होंने उस साधु के सामने श्रद्धा का आश्चर्यजनक प्रदर्शन किया। वह एक टोकरी भरकर फूल लाई थीं। टोकरी में मिठाई भी थी। साधु ने वह मिठाई तो मंदिर में इकट्ठे गरीबों में बांट दी और फूल अपने सामने धूनी के चारों ओर बिखेर लिए। इसके बाद वह मिसेज़ दिनशा का हाथ अपने हाथ में लेकर मुंह ही मुंह में कुछ बड़बड़ाने लगा जैसे वह उनकी किस्मत का हाल बता रहा हो।"

"क्या तुम दोनों में से कोई भी उनकी बातचीत नहीं सुन पाया ?" मेजर ने पूछा।

"जी नहीं, वे बहुत ही धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।"

"वे दोनों कितनी देर तक बातें करते रहे ?"

"आधे घंटे तक।"

"इसके बाद क्या हुआ ?"

"मिसेज़ दिनशा शीरीं ने साधु के पांव छुए और वहां से चली आईं।"

"क्या वह साधु अभी भी ग्वालियर टैंक के भैरों के मंदिर में

ही है ?"

"उसे हम वहीं छोड़कर आए हैं।"

"चलो मेरे साथ। मैं उस साधु से मिलना चाहता हूं," मेजर ने उठते हुए कहा।

उन दोनों को कार में बैठाकर मेजर ग्वालियर टैंक की ओर चल पड़ा। जब वे लोग मंदिर में पहुंचे तो साधु वहां से जा चुका था। लोग कह रहे थे कि वह साधु खुफिया पुलिस का कोई अफसर था। उसकी हर बात संदिग्ध थी।

मेजर ने मंदिर के प्रबन्धकों से पूछा कि वह साधु अपने साथ कुछ सामान भी लाया था या नहीं, तो प्रबन्धकों ने बताया कि उसके पास एक छोटी-सी पोटली के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

मेजर ने आफिस पहुंचते ही मिसेज़ दिनशा को फोन किया तो दूसरी ओर से किसी बूढ़े आदमी की आवाज़ सुनाई दी, "हैलो।"

"मैं मिसेज़ दिनशा शीरीं से बात करना चाहता हूं," मेजर ने कहा।

"वह तो सो रही हैं।"

"कोई बात नहीं, उन्हें जगा दीजिए। उनसे कहिए कि मेजर बलवन्त उनसे बात करना चाहते हैं।"

"आप ज़रा ठहरिए।"

दस मिनट के बाद मिसेज़ दिनशा की आवाज़ आई, "कहिए मेजर साहब, इतनी रात गए मुझसे क्या काम आ पड़ा ?"

"मिसेज़ दिनशा, वह साधु कौन था जिससे आप ग्वालियर टैंक के भैरों मन्दिर में मिली थीं ?"

"मैं फोन पर आपको कुछ भी नहीं बता सकती।"

"क्यों ?"

"मुझे धमकी दी गई है।"

"क्या धमकी दी गई है ?" मेजर ने पूछा।

"यही कि मैं अपना मुंह बंद रखूं और पुलिस के किसी भी प्रश्न का उत्तर न दूं। अगर मैंने पुलिस अफसरों से बात की तो मुझे बारह घंटे के अन्दर-अन्दर मार डाला जाएगा। मेजर साहब, आपने फोन करके मेरी ज़िन्दगी खतरे में डाल दी है।"

"क्या आपको डर लग रहा है ?" मेजर ने पूछा।

"मैं बहुत ही भयभीत हूं मेजर साहब।"

"आप घबड़ाइए नहीं। यह बताइए कि आपको धमकी फोन पर दी गई या आपको संदेश द्वारा प्राप्त हुई ?"

"मुझे धमकी फोन पर ही दी गई।"

"धमकी देने वाला पुरुष था या स्त्री ?"

"स्त्री थी।"

"क्या आप उस स्त्री की आवाज़ को पहचानती हैं ?"

"जी नहीं।"

"फिर तो मिसेज़ दिनशा, आपको मेरे निर्देशों का पालन करना पड़ेगा।"

"कहिए।"

"कल सुबह आप घर से बाहर नहीं निकलेंगी। मैं आपकी सुरक्षा के लिए दो आदमी भेज रहा हूं। एक बार फिर सुन लीजिए; जब तक मैं न कहूं आप अपने घर से बाहर पांव न रखेंगी।"

"मैं आपके प्रत्येक आदेश का पालन करूंगी।"

मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और डायरेक्टरी में मिसेज़ सीता रमन का फोन नम्बर ढूंढ़ने लगा।

मिसेज़ सीता रमन को फोन करने पर पता चला कि मिसेज़ कपिल वहां नहीं हैं। पूछने पर पता चला कि वह घंटा-भर हुआ, बाहर गई हैं और कह गई हैं कि रात को वापस नहीं आएंगी।

मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और सोचने लगा। अचानक उसे मि० कठालिया की याद आ गई। मिसेज़ सरोज कपिल कठालिया की रखैल थी। वह रात गुज़ारने कठालिया के यहां तो नहीं गई ? मेजर ने फिर डायरेक्टरी खोल ली। और मि० कठालिया का नम्बर मिलाया। मि० कठालिया की प्राइवेट सेक्रेटरी ने बताया कि मि० कठालिया घंटा-भर हुआ, वहां से बाहर गए हैं।

"क्या वह रात को लौटेंगे ?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"क्या मि० कठालिया ने कोई दूसरा फ्लैट भी ले रखा है ?" मेजर ने पूछा।"

"उन्होंने शहर में दो-तीन फ्लैट किराये पर ले रखे हैं। लेकिन उनके पते मुझे मालूम नहीं।"

"धन्यवाद," मेजर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

मेजर अपनी रिवाल्विंग चेयर पर जा बैठा और सोचने लगा—यह बात निश्चित थी। मिसेज़ सरोज कपिल और मि० कठालिया ने कहीं मिलने का निश्चय किया होगा, और वे कहीं इकट्ठे होंगे। एक प्रश्न मेजर को परेशान कर रहा था। वह यह था कि जो तीन रुंडमुंड आदमी अपनी साथी स्त्री को श्मशान घाट पर ले गए थे, श्मशान घाट से फरार होते ही मिसेज़ सरोज कपिल से क्यों मिले ? और वह उन्हें मि० कठालिया के पास क्यों ले गई ? यह मामला क्या है ? मेजर सोचने लगा कि अगर मालती और सोनिया मि० कठालिया के बंगले के आसपास पहुंच गई होंगी और उन्होंने कठालिया को बंगले से बाहर निकलते हुए देख लिया होगा तो इस समय वे उनका पीछा कर रही होंगी। और यही आशा की एक किरण थी।

मेजर उन दोनों के संदेश की बेचैनी से प्रतीक्षा करने लगा। सोनिया के पास ट्रांसमीटर घड़ी थी। अगर उन्हें कोई संदिग्ध बात दिखाई दी या कोई महत्त्वपूर्ण घटना हुई तो वे मेजर को अवश्य सूचित करेंगी।

उन दोनों के संदेश की प्रतीक्षा करता हुआ मेजर उठकर आफिस में टहलने लगा।

## १२. मज़ेदार बातचीत

डेढ़ घंटे तक सोनिया और मालती का कोई संदेश नहीं मिला। मेजर की परेशानी बढ़ गई। दुश्मन ने उन दोनों को कहीं घेर न लिया हो। मेजर ने परेशानी की दशा में फिर अल्मारी से ह्विस्की की बोतल ली और गिलास में एक बड़ा पैग डाला। उसने एक सांस में ही गिलास खाली कर दिया। फिर वह दूसरा पैग डाल ही रहा था कि पोर्टिको में एक कार के रुकने की आवाज सुनाई दी।

और दूसरे ही क्षण मालती और सोनिया ने तेज़ी से कमरे में प्रवेश किया। मेजर समझ गया कि वे अवश्य ही कोई महत्त्वपूर्ण सूचना लेकर आई हैं।

मेजर ने कहा, "तुम दोनों ने आज मुझे बहुत परेशान किया। तुमने मुझे कोई सूचना क्यों नहीं दी ? किस परेशानी में फंस गई थीं ?"

"अगर हम किसी परेशानी में पड़ जातीं तो आपको सूचना अवश्य देतीं । हमें कोई परेशानी नहीं हुई," मालती ने कहा ।

"अच्छा तो यह बताओ कि क्या खबर लाई हो ?"

"हम दोनों मिसेज़ सरोज कपिल और मि० कठालिया की मज़ेदार बातचीत सुनकर आ रही हैं," सोनिया ने कहा, "दोनों में खूब झगड़ा हुआ । सम्बन्ध-विच्छेद तक की नौबत आ गई । लेकिन बाद में मेल हो गया ।

"बड़ा मज़ा उस मिलाप में है, जो सुलह हो जाए जंग होकर," मेजर ने हंसते हुए कहा ।

"बस ऐसी ही कुछ बात थी ।"

"तुम दोनों मुझे विस्तार से सारी बात बताओ ।"

मालती बोली, "आपने सोनिया को सज़ा दी तो सोनिया ने उसे बहुत महसूस किया । वह कार को बहुत ही तेज़ी से दौड़ाकर मि० कठालिया के घर के पास पहुंच गई । कार पार्क करके हमने कठालिया के मकान की निगरानी आरंभ कर दी ।"

सोनिया ने कहा, "हमें बड़ी हैरानी हुई जब हमने मिसेज़ कपिल को एक टैक्सी से उतरते देखा ।

"इसमें हैरानी की कौन-सी बात थी···?" मालती ने शरारत-भरे स्वर में कहा ।

"वह अपने प्रेमी के साथ रात बिताने के लिए आई थी ।" मेजर ने मालती की बात लपकते हुए कहा ।

"आप बीच में टोकिए नहीं," सोनिया नाराज़ होकर बोली, "मिसेज़ कपिल मि० कठालिया के मकान में केवल पंद्रह मिनट तक रहीं । इसके बाद मि० कठालिया के साथ बाहर आईं ।"

"मि० कठालिया गैरेज से अपनी कार निकालने के लिए चले गए तो हम दोनों भी अपनी कार में जा बैठीं । और जब मि० कठालिया मिसेज़ कपिल को कार में बैठाकर हमारे पास से गुज़र गए तो हमने भी उन दोनों का पीछा करना आरंभ कर दिया," मालती बोली ।

"मि० कठालिया मिसेज़ कपिल को जूहू के एक बंगले में ले गए । शायद वह पूरा बंगला मि० कठालिया ने किराये पर ले रखा है । उस बंगले की देखभाल एक बूढ़ा चौकीदार करता है ।" सोनिया ने बताया ।

"मि० कठालिया ने चौकीदार को आदेश दिया कि वह जाकर

सो जाए। रात काफी जा चुकी थी। बूढ़ा चौकीदार शायद अपने मालिक के स्वभाव से परिचित था। वह चुपके से अपनी कोठरी में चला गया और दरवाज़ा बंद करके उसने बत्ती बुझा दी। हमारे लिए मैदान साफ हो गया," मालती बोली।

"बंगले के अन्दर दूर एक कमरे में रोशनी हुई। हम दोनों दबे पांव बंगले में घुस गईं। एक कमरे से मि० कठालिया की अप्रसन्नता-भरी आवाज़ आ रही थी। हम उस कमरे के साथ वाले कमरे में जा बैठीं।" सोनिया ने कहा।

"उन दोनों के बीच जो मज़ेदार बातचीत हुई, वह संक्षेप में इस प्रकार हैं : 'डार्लिंग, तुम्हें मालम नहीं, मैंने जानबूझकर उन ज़ेवरों की कीमत तुम्हें कम बताई थी। मैंने जो ज़ेवर तुम्हें दिए थे उनकी कीमत एक लाख नहीं, इससे भी दस गुनी थी। तुम्हीं सोचो, मैं तुम्हें दस लाख के ज़ेवर कैसे दे सकता हूं ?' मि० कठालिया ने कहा।

" 'मैं नहीं जानती—तुम एक चीज़ मुझे दे चुके हो और वह मेरी हो चुकी है,' मिसेज़ कपिल ने बड़े नखरे से कहा।

" 'डार्लिंग, किसीकी बात मान भी लिया करते हैं। मैंने वे सारे ज़ेवर तुम्हारा मन रखने के लिए तुम्हें दे दिए थे। तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि ये जेवर मेरे पास किसीकी धरोहर के रूप में रखे हुए थे।'

" 'इसका मतलब है कि तुमने मेरे साथ मज़ाक किया था। तुमने मेरी उदारता नहीं देखी कि जब भी तुमने उन ज़ेवरों में से कोई ज़ेवर मांगा मैंने चुपचाप तुम्हें दे दिया। मैं काफी ज़ेवर तुम्हें लौटा चुकी हूं और अब मैं तुम्हें एक भी ज़ेवर नहीं दूंगी।'

" 'इनकार करके तुम अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल रही हो सरोज।'

" 'मेरी ज़िन्दगी को कोई खतरा नहीं है।'

" 'तुम्हारी ज़िन्दगी के लिए न सही, लेकिन मेरी ज़िन्दगी के लिए तो खतरा है ही।' मि० कठालिया ने कहा, 'क्या तुम मुझे प्यार नहीं करतीं ?'

" 'यह अच्छा प्यार है कि तुम मुझे जो भी चीज़ भेंट देते हो वापस ले लेते हो।'

" 'सुनो डार्लिंग, हम ऐसा क्यों न करें कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। हम एक चाल क्यों न चलें कि कम से कम

तीन-चार लाख के ज़ेवर हड़प कर सकें। तुम्हें मालूम है कि ज़ेवर किस भयानक और ज़ालिम आदमी के हैं। तुम्हारे पास जो ज़ेवर हैं, उनमें से आधे उसे दे देते हैं और आधे अपने पास रख लेते हैं।'

" 'क्या वह आधे ज़ेवर लेकर चुप बैठ जाएगा ?' मिसेज़ सरोज कपिल ने कहा।

" 'तुम मेरी बात नहीं समझीं। मैं उसे आधे ज़ेवर देकर कह दूंगा कि मैं तुम्हें धीरे-धीरे मना रहा हूं। बाकी ज़ेवर भी धीरे-धीरे लौटा दूंगा। मेरा विचार है कि वह मान जाएगा।'

" 'फिर आधे ज़ेवर हम कैसे हड़प कर पाएंगे ?"

" 'मैं उसे गिरफ्तार करा दूंगा।' मि० कठालिया ने कहा।

" 'तुम्हारी योजना तो सुन्दर है।' मिसेज़ कपिल ने कहा, 'अगर उसे गिरफ्तार ही कराना है तो आधे ज़ेवर देने से पहले ही क्यों न गिरफ्तार करा दिया जाए ?'

" 'पागल हो रही हो ! उसे अभी गिरफ्तार करा देना संभव नहीं है। वह हमें फंसा देगा। पहले हमें उसके नीचे दबी अपनी उंगली निकालनी होगी। और फिर उसे गिरफ्तार कराना होगा। तब हमपर कोई आंच न आने पाएगी।'

" 'तुम ठीक कहते हो। मैं आधे ज़ेवर दे दूंगी।'

" 'डार्लिंग, मैं तुम्हें रत्ती-भर भी दुखी न होने दूंगा। तुम जो आधे ज़ेवर वापस दोगी उनके नमूने के नक़ली ज़ेवर उसी ज़ालिम से दिलवा दूंगा।'

" 'प्रॉमिस ?'

" 'डार्लिंग, मैंने आज तक तुमसे कोई झूठा वायदा किया है ?'

" 'वे ज़ेवर कब तक उसे देने हैं ?'

" 'वह तो आज ही मांग रहा था। मैंने उससे कह दिया है कि कल मुंह अंधेरे पहुंचा दूंगा।'

" 'क्या ज़ेवर वापस करने मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूं ?'

" 'अगर तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं है तो ज़रूर चलो। मैं मुंह अंधेरे ही जाऊंगा। बताओ, तुम कहां मिलोगी ? हां, और तुमने ज़ेवर कहां रख रखे हैं ?"

" 'किंग सर्किल वाले मकान में ही हैं। तुम मुझे मेरे घर छोड़ आओ। सुबह मैं तैयार मिलूंगी। तुम कितने बजे पहुंच जाओगे ?'

" 'मैं सुबह पांच बजे पहुंच जाऊंगा।' मि० कठालिया ने कहा।"

सोनिया बोली, "इसके बाद हम दोनों बंगले से बाहर आकर

उनकी प्रतीक्षा करने लगीं। आधे घंटे के बाद वे दोनों बंगले से बाहर निकले और कार में बैठकर चल दिए।"

"हम मिसेज़ कपिल को किंग सर्किल छोड़कर आ रही हैं," मालती बोली।

"इसका मतलब यह है कि हमें सुबह साढ़े चार बजे ही किंग सर्किल पहुंच जाना चाहिए। देखें, वे कहां जाते हैं," मेजर ने कहा।

"अगर आप सुबह साढ़े चार बजे किंग सर्किल जाना चाहते हैं तो हम दोनों यहीं रुक जाएं?"

"हां, तुम दोनों यहीं रुको। सुधीर और डोरा मिसेज़ दिनशा की निगरानी करने गए हैं। इसलिए सुबह तुम दोनों मेरे साथ चलना।"

"ठीक है," मालती बोली, "क्या आप खाना खा चुके?"

"हां, मैं खाना खा चुका हूं, तुम लोग भी खा लो। मैं तो सोने के लिए जा रहा हूं। तुम लोग भी खाना खाकर जल्दी ही सो जाना। सुबह बहुत सबेरे उठना है।"

"आप निश्चिन्त रहिए। हम पौने चार बजे ही जाग जाएंगी।"

मेजर उन दोनों को बैठा छोड़कर अपने बैडरूम में चला गया।

मालती और सोनिया के साथ मेजर ठीक चार बजे किंग सर्किल की ओर चल पड़ा।

रास्ते में मेजर ने मालती और सोनिया को हिदायत दी, "हम मि० कठालिया और मिसेज़ सरोज कपिल का पीछा करेंगे। अगर वे किसी बिल्डिंग या किसी बंगले में जाएं तो हमें स्थिति का अध्ययन करने के बाद एकदम उस बंगले या बिल्डिंग पर हल्ला बोल देना होगा।"

मेजर ने किंग सर्किल में मिसेज सरोज कपिल के मकान से ज़रा हटकर अपनी कार रोक दी और फिर मालती और सोनिया से कहा, "तुम दोनों मिसेज़ कपिल के मकान के पास चली जाओ। मैं यहीं कार में रहूंगा।"

पांच बजे थे कि मि० कठालिया की कार मिसेज़ कपिल के मकान के सामने आकर रुक गई। मिसेज़ कपिल के मकान की बत्ती पहले से ही जल रही थी। कार की आवाज़ सुनते ही बत्ती बुझा दी गई। मिसेज़ कपिल अपने मकान से बाहर आईं और उन्होंने दरवाज़े में ताला लगा दिया। इसके बाद वह मि० कठालिया की

कार में उनके बराबर वाली सीट पर आ बैठीं।

मालती और सोनिया पहले से ही मेजर की कार के पास पहुंच चुकी थीं।

मेजर ने मालती से कहा, "मुझे एक नई बात सूझी है मालती। अगर वह बात मेरे अनुमान के अनुसार सच निकली तो मेरा विचार है कि हम दुश्मन को पकड़ पाने में सफल हो जाएंगे।"

"आपको नई बात क्या सूझी है ?" कार का पिछला दरवाज़ा खोलते हुए मालती ने पूछा।

"तुम यहीं रुको। मैं सोनिया के साथ इन लोगों का पीछा करता हूं।"

"मैं यहां रहकर क्या करूं ?"

"तुम्हें चोरी करनी होगी।"

"चोरी ?"

"हां, तुम्हें मिसेज़ कपिल के बाकी ज़ेवरों की चोरी करनी होगी, तुम उन ज़ेवरों का पता लगाओ। वह मकान में ही कहीं छिपे रखे होंगे। उन्हें खोज निकालने के बाद तुम आफिस पहुंच जाना।"

"आपने मुझे बड़ा नेक काम सौंपा है," मालती बोली।

"दूसरों की भलाई के लिए जासूसों को कभी-कभी इससे भी बुरे काम करने पड़ जाते हैं," यह कहकर मेजर ने कार स्टार्ट कर दी।

मालती मेजर की कार को जाते हुए देखती रही और फिर मिसेज़ कपिल के मकान की ओर चल पड़ी।

मेजर और सोनिया बड़ी सावधानी से मि० कठालिया की कार का पीछा करते रहे। मि० कठालिया की कार आधे घंटे के बाद वर्ली पहुंच गई और समुद्र के किनारे की एक छोटी-सी बिल्डिंग के सामने पहुंचकर रुक गई। फिर वे दोनों कार से उतरकर बिल्डिंग के अन्दर चले गए।

मेजर ने अपनी कार सड़क पर रोक दी और सोनिया से बोला, "तुम इस बिल्डिंग की दायीं दीवार के पीछे चली जाओ। मैं बिल्डिंग के सामने रहूंगा। जब मैं बिल्ली की तरह म्याऊं की सी आवाज़ निकालूं तो तुम दौड़कर मेरे पास च ी आना। मैं इन लोगों को इत्मीनान से बातचीत करने और सौदेबाज़ी करने का समय देना चाहता हूं।"

सोनिया कार से उतरकर सुबह के अंधेरे में उस बिल्डिंग की

दीवार के पीछे चली गई। मेजर ने अपनी कार फुटपाथ पर खड़ी कर दी और बिल्डिंग की ओर देखने लगा। दो कमरों में रोशनी हुई तो मेजर कार से उतरकर कार की ओट में खड़ा हो गया और उन कमरों की ओर देखने लगा।

दस मिनट के बाद उसने म्याऊं की आवाज़ की। आवाज़ सुनते ही सोनिया दौड़कर उसके पास पहुंच गई।

मेजर ने सोनिया से कहा, "मेरे पीछे-पीछे आओ।"

वे दोनों उस बिल्डिंग की ओर बढ़े। अभी वे बिल्डिंग के सदर दरवाज़े तक भी न पहुंच पाए थे कि एक ज़ोरदार धमाका हुआ। बिल्डिंग की पहली मंज़िल के उन दोनों कमरों की खिड़कियों के शीशे टूटकर नीचे गिरे और फिर एक खिड़की में से धुंआ निकलने लगा। उस बिल्डिंग की आसपास की बिल्डिगों की बत्तियां एक साथ जल उठीं और चारों ओर शोर मच गया। लोगों के बिल्डिंग तक पहुंचने से पहले ही मेजर पहली मंज़िल पर पहुंच गया। सोनिया उसके पीछे थी। ऊपर की मंज़िल का एक कमरा धुएं से भरा हुआ था और उस धुएँ से बारूद की गंध आ रही थी।

दो मिनट में धुआं छंटा तो मेजर ने देखा, एक मानव-शरीर के अनेक टुकड़े उस कमरे में चारों ओर फैले हुए थे। ठीक उसी समय मेजर को एक सरसराहट-सी सुनाई दी। उसने सोनिया से कहा, "सोनिया, जल्दी से नीचे भागो। दूसरा धमाका होने वाला है," और फिर वह सोनिया की बांह पकड़कर भागता हुआ नीचे पहुंच गया। नीचे कुछ लोग बिल्डिंग के दरवाज़े तक पहुंच गए थे। मेजर ने उन्हें रोकते हुए ऊंची आवाज़ में कहा, "कोई भी ऊपर न जाए। सब लोग बिल्डिंग से दूर हट जाएं।"

ठीक उसी समय निचली मंज़िल पर दूसरा ज़ोरदार धमाका हुआ। खिड़कियों के शीशे उड़कर दूर तक बिखर गए। अगर मेजर ने लोगों को वहां से हटा न दिया होता तो कई लोग घायल हो गए होते। लोगों को संदेह हुआ कि मेजर और सोनिया ही ने बिल्डिंग पर आक्रमण किया है। मेजर ने कुछ लोगों को अपना आइडेंटिटी कार्ड दिखाकर उनका संदेह दूर कर दिया।

पांच मिनट के बाद मेजर कुछ लोगों के साथ फिर बिल्डिंग में घुसा। मिसेज़ कपिल का कहीं पता न था। केवल एक लाश के टुकड़े वहां पड़े थे। मेजर ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगा पाया कि वह किसकी लाश के टुकड़े हैं। लेकिन उसे संदेह था कि ये टुकड़े

मि० कठालिया की लाश के ही हो सकते हैं।

मेजर ने पास की बिल्डिंग से पुलिस इंस्पेक्टर राना को फोन किया कि वह फौरन चला आए।

इंस्पेक्टर राना के आने तक मेजर उस बिल्डिंग का निरीक्षण करता रहा। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि वह बिल्डिंग मि० कठालिया ने किराये पर ले रखी थी। बिल्डिंग के कुछ कमरों में मि० कठालिया के फोटो लगे हुए थे और उनके पहनने के कई जोड़ी कपड़े रखे हुए थे। उस बिल्डिंग में समुद्र की ओर जाने के लिए एक रास्ता भी मिला। मेजर समझ गया कि दुश्मन मिसेज़ कपिल के साथ इसी रास्ते से समुद्र की ओर निकल गया होगा।

इंस्पेक्टर राना के आने पर मेजर ने पूरी घटना सुनाने के बाद कहा, "आप परेशान होंगे कि हत्याओं पर हत्याएं होती चली जा रही हैं और हत्यारों का पता नहीं चल रहा। इसलिए आपके उच्च अधिकारी आपको निकम्मा समझकर इस केस को किसी अन्य अफसर को सौंप देंगे।"

"मुझे यही चिन्ता सता रही है। हाल ही में मुझे प्रमोशन मिलने वाला है। अगर इस केस में मुझे सफलता न मिली तो प्रमोशन तो दूर, कहीं मेरा यह पद भी न छीन लिया जाए।"

मेजर ने इंस्पेक्टर राना की पीठ थपथपाते हुए कहा, "चिन्ता न कीजिए। हत्यारों की गिरफ्तारी का समय निकट आ गया है।"

"क्या सच!" इंस्पेक्टर ने प्रसन्न होकर कहा।

"बिलकुल सच!" मेजर ने कहा, "आप यह बताइए कि आपके समुद्री तार का कोई उत्तर मिला या नहीं?"

"मिल गया," इंस्पेक्टर राना ने कहा, "उस उत्तर से जिस रहस्य का उद्घाटन होता है उसका इस केस से कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता।"

"आप मुझे वह उत्तर दिखाइए।"

इंस्पेक्टर राना ने अपने तार के उत्तर में मिला तार मेजर को दे दिया। मेजर ने उसे पढ़कर कहा, "आप कहते हैं कि इस तार का सम्बन्ध इस केस से नहीं है और न इस तार का कोई महत्त्व ही है। लेकिन इस तार ने मेरी कठिनाई दूर कर दी है। अगर भाग्य ने साथ दिया तो भयानक हत्यारे दो-तीन घंटे के अन्दर ही गिरफ्तार किए जा सकते हैं। आप फोन करके अपने किसी असिस्टेंट को यहां की कार्रवाई के लिए बुला लीजिए। उससे यह भी

मि० कठालिया की लाश के ही हो सकते हैं।

मेजर ने पास की बिल्डिंग से पुलिस इंस्पेक्टर राना को फोन किया कि वह फौरन चला आए।

इंस्पेक्टर राना के आने तक मेजर उस बिल्डिंग का निरीक्षण करता रहा। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि वह बिल्डिंग मि० कठालिया ने किराये पर ले रखी थी। बिल्डिंग के कुछ कमरों में मि० कठालिया के फोटो लगे हुए थे और उनके पहनने के कई जोड़ी कपड़े रखे हुए थे। उस बिल्डिंग में समुद्र की ओर जाने के लिए एक रास्ता भी मिला। मेजर समझ गया कि दुश्मन मिसेज़ कपिल के साथ इसी रास्ते से समुद्र की ओर निकल गया होगा।

इंस्पेक्टर राना के आने पर मेजर ने पूरी घटना सुनाने के बाद कहा, "आप परेशान होंगे कि हत्याओं पर हत्याएं होती चली जा रही हैं और हत्यारों का पता नहीं चल रहा। इसलिए आपके उच्च अधिकारी आपको निकम्मा समझकर इस केस को किसी अन्य अफसर को सौंप देंगे।"

"मुझे यही चिन्ता सता रही है। हाल ही में मुझे प्रमोशन मिलने वाला है। अगर इस केस में मुझे सफलता न मिली तो प्रमोशन तो दूर, कहीं मेरा यह पद भी न छीन लिया जाए।"

मेजर ने इंस्पेक्टर राना की पीठ थपथपाते हुए कहा, "चिन्ता न कीजिए। हत्यारों की गिरफ्तारी का समय निकट आ गया है।"

"क्या सच !" इंस्पेक्टर ने प्रसन्न होकर कहा।

"बिलकुल सच !" मेजर ने कहा, "आप यह बताइए कि आपके समुद्री तार का कोई उत्तर मिला या नहीं ?"

"मिल गया," इंस्पेक्टर राना ने कहा, "उस उत्तर से जिस रहस्य का उद्घाटन होता है उसका इस केस से कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता।"

"आप मुझे वह उत्तर दिखाइए।"

इंस्पेक्टर राना ने अपने तार के उत्तर में मिला तार मेजर को दे दिया। मेजर ने उसे पढ़कर कहा, "आप कहते हैं कि इस तार का सम्बन्ध इस केस से नहीं है और न इस तार का कोई महत्त्व ही है। लेकिन इस तार ने मेरी कठिनाई दूर कर दी है। अगर भाग्य ने साथ दिया तो भयानक हत्यारे दो-तीन घंटे के अन्दर ही गिरफ्तार किए जा सकते हैं। आप फोन करके अपने किसी असिस्टेंट को यहां की कार्रवाई के लिए बुला लीजिए। उससे यह भी

कहिए कि वह अपने साथ तीन बहुत ही होशियार कांस्टेबल लेता आए जो रिवाल्वर चलाने में बहुत ही कुशल हों।"

इंस्पेक्टर राना ने मेजर की हिदायत के अनुसार थाने को फोन कर दिया। आधे घंटे में उसके आदमी वहां पहुंच गए।

"चलिए इंस्पेक्टर साहब; अपने तीन आदमियों को लेकर मेरे साथ चलिए," मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर राना अपने आदमियों के साथ जीप में जा बैठा तो मेजर ने कहा, "आप मेरी कार के पीछे अपनी जीप लगा दीजिए।"

मेजर की कार कुछ देर बाद किंग सर्किल में मिसेज़ सरोज कपिल के मकान के सामने पहुंचकर रुक गई।

उस समय सुबह के सवा छः बजे थे।

## १३. कैदी इंस्पेक्टर

मिसेज़ सरोज कपिल के मकान के सामने पहुंचकर मेजर अपनी कार से उतर आया और इंस्पेक्टर राना, सोनिया और उसके दो कांस्टेबलों के साथ उस मकान की ओर बढ़ गया। मिसेज़ सरोज कपिल के मकान का दरवाज़ा बंद नहीं था। केवल भिड़ा हुआ था। यह देखकर मेजर बहुत हैरान हुआ। उसने दरवाज़े पर हाथ रखकर उसे खोल दिया। अंदर मालती थी, जो अपने कपड़ों को ठीक कर रही थी। वह मेजर को देखकर और मेजर उसे देखकर हैरान रह गया।

"मालती, तुम्हारा काम पूरा हो गया?" मेजर ने पूछा।

"हां, पूरा हो गया," मालती ने कहा और फिर मेज़पोश में बंधी चीज़ों की ओर इशारा करते हुए बोली, "ये चीज़ें फ्लश के शेंक से मिली हैं।"

"कोई इधर आया तो नहीं?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, कोई नहीं," मालती ने उत्तर दिया।

"ऐसा मालूम होता है कि भाग्य हमारा साथ दे रहा है," मेजर बोला, "अब हमें यहां से फौरन चल देना चाहिए। इंस्पेक्टर साहब और इनके तीनों आदमी यहां रहेंगे," यह कहकर मेजर ने इंस्पेक्टर राना से कहा, "क्षमा कीजिएगा, मुझे आपको इस भवन में बंद करके जाना होगा।"

"मैं समझा नहीं कि हमें कैदी क्यों बनाया जा रहा है?"

"आप ज़रा अलग चलकर मुझसे बात कीजिए।"

मेजर इंस्पेक्टर राना को एक ओर ले गया और पांच मिनट तक उससे बातें करता रहा। और जब वे दोनों मालती की ओर आए तो इंस्पेक्टर राना मुस्करा रहा था।

मेजर ने माललो से कहा, "मालती, यह पोटली उठाकर बाहर निकलो। सोनिया, तुम भी चलो।"

मालती ने पोटली उठा ली और सोनिया के साथ बाहर आ गई। बाहर आकर मेजर ने अपनी जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला और मिसेज़ सरोज कपिल के मकान के दरवाज़े में ताला लगा दिया।

मेजर सोनिया और मालती के साथ सात बजे अपने आफिस में पहुंच गया। चौकीदार ने कागज़ की एक स्लिप लाकर मेजर के सामने मेज़ पर रख दी। मेजर ने उसे पढ़ा। लिखा था :

"मैं आपसे ठीक नौ बजे आकर मिलूंगा। मुझे आपको बहुत कुछ बताना है। आशा है आप दुश्मनों को पकड़ सकेंगे। वैसे मैं अभी तक बहुत भयभीत हूं।—जुत्शी"

मेजर मुस्कराया। उसने वह स्लिप रद्दी की टोकरी में फेंक दी। फिर उसने मालती से पोटली खोलने के लिए कहा। मालती ने पोटली खोली तो उसमें से निकले ज़ेवरों ने सबकी आंखों में चकाचौंध पैदा कर दीं। मेजर ने ज़ेवरों को ध्यान से देखकर कहा, "ये ज़ेवर असली हैं। ये ही हमें इस केस को हल करने में मदद देंगे।"

यह कहकर मेजर ने रिसीवर उठा लिया और मिसेज़ दिनशा शीरीं का फोन नम्बर मिलाकर बोला, "हैलो!"

दूसरी ओर से मिसेज़ दिनशा की आवाज़ सुनाई दी, "हैलो, मेजर साहब।"

"कहिए, आपकी रात आराम से बीती?"

"जी हां।"

"क्या आप साढ़े आठ बजे मेरे आफिस पहुंच सकती हैं?"

"ज़रूर पहुंच सकती हूं।"

"आपके मकान के बाहर मेरे दो आदमी आपके मकान की निगरानी कर रहे होंगे। धोबी और धोबिन के वेश में। अपने साथ उन्हें भी लेती आइएगा।"

"अच्छी बात है।"

मेजर ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया और मालती तथा

सोनिया से बोला, "थोड़ी देर में एक नाटक होने वाला है। तुम दोनों चुपचाप बैठी नाटक देखती रहना। और मैं जो भी आदेश दूं उसका तुरन्त पालन करना।" यह कहकर मेजर ने मालती से कहा, "मालती, नौकरानी से कहो, नाश्ता ले आए।"

आठ बजे नाश्ता करने के बाद मेजर ने मालती और सोनिया से कहा, "तुम दोनों मेरी मेज़ की दायीं-बायीं ओर आकर बैठ जाओ। सोनिया, तुम अपना बैग खुला रखना ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुम आसानी से रिवाल्वर निकाल सको। और मालती, तुम स्टोर से बहुत-से टेप उठा लाओ। जब मैं आदेश दूं, तुम मेरे सामने बैठे आदमी को टेप से बांध देना।"

मालती और सोनिया मेजर की बातें समझ न पा रही थीं। उन्होंने कुछ पूछना चाहा तो मेजर ने कहा,"मैं कह चुका हूं कि तुम मेरी किसी बात में हस्तक्षेप न करो, बस चुपचाप बैठी रहो।"

मालती उठकर स्टोर से टेप ले आई।

सोनिया से रहा न गया। उसने पूछा, "आप क्या करना चाहते हैं?"

"हत्यारों को पकड़ना चाहता हूं।"

यह कहकर मेजर ने दो जगह और फोन किया। उसने यह फोन कठालिया की पत्नी और उसकी प्राइवेट सेक्रेटरी को किया था। उसने मिनट-दो मिनट तक उनसे बातें कीं और जब उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा तो वह खुलकर मुस्करा रहा था।

ठीक साढ़े आठ बजे एक टैक्सी पोर्टिको में आकर रुकी। मेजर ने मालती और सोनिया को तैयार होने का इशारा किया। टैक्सी से पहले सुधीर और डोरा उतरे और फिर मिसेज़ दिनशा शीरीं उतरीं। सुधीर ने टैक्सी का किराया चुकाया।

मिसेज़ दिनशा मुस्कराती हुई आफिस में आईं, लेकिन मेजर को गम्भीर देखकर कुछ सहम-सी गईं। मेजर ने उठकर उनकी ओर अपना दायां हाथ बढ़ा दिया। उन्होंने मेजर का हाथ अपने हाथ में लेकर बड़ी गर्मजोशी से दबाया, लेकिन जब मेजर ने कोई उत्साह प्रकट न किया तो उनका उत्साह भी ठंडा पड़ गया।

मेजर ने हल्के-से आदेशात्मक स्वर में कहा, "बैठ जाइए!"

मिसेज़ दिनशा मेजर का स्वर सुनकर चौंक पड़ीं। वह चुपके से मेजर के सामने की कुर्सी पर बैठ गईं।

"मिसेज़ दिनशा, आप मुझे अधिक दिनों तक धोखा न दे

सकीं। आप बहाने करती रहीं कि आप बहुत जल्द अपराधियों को मेरे हवाले कर देंगी, जबकि अपराधी स्वयं आप ही हैं।"

"मैं···मैं···," मिसेज़ दिनशा की घिग्घी बंध गई, "आप अच्छे जासूस हैं ! एक निरपराध को अपराधी बता रहे हैं।"

"मिसेज़ दिनशा, आप निरपराध कहां हैं ! आप संदिग्ध लोगों से मिलती रही हैं। घर में एक अमेरिकन महिला जासूस से, कोलाबा की बैरिक में एक अजनबी से, ग्वालियर टैंक के भैरों मन्दिर में एक साधु से···।"

"और कल रात एक ऐसी स्त्री से मिलीं जो सिर से पांव तक अपने-आपको कपड़ों में छिपाए हुए थी।" डोरा ने कहा।

"मैंने उस स्त्री का पीछा किया लेकिन वह मुझे गच्चा देने में सफल हो गई।" सुधीर ने कहा।

"सुना मिसेज़ दिनशा मेरे असिस्टेंट क्या कह रहे हैं ?"

मिसेज़ दिनशा से कोई उत्तर न बन पड़ा। उन्होंने हकलाते हुए कहा, "मैं, मैं···आपकी बातें समझ नहीं पा रही हूं।"

"मिसेज़ दिनशा, अगर आप आपराधी नहीं हैं तो क्या आप मुझे अपराधियों के पास ले चल सकती हैं ?"

"मैं यह तो जानती हूं कि अपराधी कौन हैं, लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि वे कहां रहते हैं।"

"अब आप मुझे धोखा नहीं दे सकतीं।" यह कहकर मेजर ने मालती से कहा, "मालती, इन्हें टेप से इसी कुर्सी पर बांध दो।"

मालती ने फुर्ती से मिसेज़ दिनशा को बांध दिया।

"अब इनके मुंह में कपड़ा ठूंसकर इनके मुंह पर टेप लगा दो," मेजर ने दूसरा आदेश दिया।

मेजर के इस आदेश का भी मालती ने पालन कर दिया। सोनिया और मालती दोनों हैरान थीं कि क्या मिसेज़ दिनशा ने ही शहर में ऊधम मचा रखा था। उन्हें विश्वास नहीं हो पा रहा था। लेकिन वे मेजर से कुछ पूछने का साहस न कर सकीं।

मेजर की निगाहें दरवाज़े पर लगी हुई थीं। फिर न जाने क्या खयाल आया। उसने उठकर अल्मारी से वह विचित्र-चीज़ निकाली जो सोमदत्त कपूर के सूटकेस से बरामद हुई थी। मेजर ने वह चीज़ अपनी मेज़ के नीचे छिपा दी। और फिर उसने मेज़ की दराज से एक पत्र और एक फोटो निकाला। यह पत्र मिसेज़ दिनशा का लिखा हुआ था और फोटो भी उन्हींका था। ये दोनों

चीजें भी सोमदत्त कपूर के सूटकेस से ही निकली थीं।

मेजर मिसेज़ दिनशा के फोटो को देख रहा था कि आफिस के बाहर हल्के कदमों की चाप सुनाई दी। कोई संभल-संभलकर आफिस की ओर आ रहा था। दूसरे ही पल एक असाधारण लम्बा आदमी दरवाज़े में दिखाई दिया और काफी झुककर दरवाज़े के अंदर आया। वह मेजर को देखकर मुस्कराया, लेकिन दूसरे ही पल मिसेज़ दिनशा को कुर्सी पर बंधा देखकर ठिठक गया। मेजर ने तेज़ी से मेज़ की दराज से रिवाल्वर निकालकर कहा, "मि० जुत्शी, मुड़कर भागने की कोशिश न कीजिएगा। आप बहुत होशियार बनते हैं। मुझे पत्र और संदेश भेजकर यह सिद्ध करने की कोशिश करते रहे हैं कि आप निर्दोष हैं। मिसेज़ दिनशा भी आपको निर्दोष कहती रहीं, लेकिन मुझे मालूम था कि हत्या की इन घटनाओं के पीछे आपका और मिसेज़ दिनशा का हाथ है।"

"आपकी बातें सुनकर मुझे आपकी ओर से बहुत निराशा हुई मेजर साहब। इसका अर्थ तो यह हुआ कि आपको जासूसी का क-ख़ भी नहीं आता।"

जुत्शी की यह बात सुनकर मेजर मुस्कराया, "चुपचाप इस कुर्सी पर आकर बैठ जाइए," मेजर ने रिवाल्वर की नाल जुत्शी की ओर उठाते हुए कहा। सोनिया ने भी अपना रिवाल्वर निकाल लिया। जुत्शी का माथा पसीने से भीग गया। वह चुपचाप आगे बढ़ा और मेजर की मेज़ के सामने एक कुर्सी पर आ बैठा।

"मालती, इन्हें भी टेप द्वारा कुर्सी से बांध दो," मेजर ने मालती को आदेश दिया और मालती ने पलक झपकते जुत्शी को कुर्सी से बांध दिया। मेजर ने दूसरा आदेश दिया, "इनके मुंह में कपड़ा ठूंसकर मुंह पर टेप लपेट दो।"

मालती ने मेजर के इस आदेश का भी पालन कर दिया।

मेजर कुर्सी पर से उठा और उसने मिसेज़ दिनशा और जुत्शी की कुर्सियां उठाकर दीवार से लगा दीं और फिर अपनी कुर्सी पर आ बैठा। उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखा और बोला, "मैंने तो अपना काम पूरा कर दिया। इंस्पेक्टर राना का काम भी अब तक पूरा हो जाना चाहिए था। इतनी देर नहीं होनी चाहिए थी। मेरा अनुमान गलत सिद्ध नहीं हो सकता। इंस्पेक्टर राना को अब तक यहां पहुंच जाना चाहिए था।"

"आप ही तो उन्हें मिसेज़ कपिल के मकान पर छोड़कर आए

हैं। अगर मिसेज़ दिनशा और मि० जुत्शी अपराधी थे तो बेचारे इंस्पेक्टर राना को मिसेज़ कपिल के घर में बंद करने की क्या आवश्यकता थी ?" सोनिया ने कहा।

"अभी तुम्हें मुझसे बहुत कुछ सीखना है सोनिया," मेजर ने उसे चुप रहने का इशारा किया।

मेजर ने सारे ज़ेवर एक-एक कर मेज़ पर फैला दिए जो मालती मिसेज़ सरोज कपिल के घर से चुराकर लाई थी।

पांच मिनट की असह्य खामोशी के बाद मेजर के आफिस के पोर्टिको में पहले एक टैक्सी और फिर उसके तुरंत बाद एक जीप आकर रुकी। टैक्सी से इंस्पेक्टर राना और ब्लाउज़ व स्कर्ट पहने एक गोरी स्त्री उतरी। उस स्त्री का सिर मुंडा हुआ था। इंस्पेक्टर राना ने टैक्सी का किराया चुकाया। और टैक्सी ड्राइवर ने टैक्सी आगे बढ़ा दी। फिर इंस्पेक्टर राना ने जीप को आगे लाने का आदेश दिया।

जीप से हाथों में रिवाल्वर लिए तीन कांस्टेबल बाहर कूद पड़े। फिर उन्होंने रिवाल्वरों से दो आदमियों को उतरने का इशारा किया। जीप में से दो गोरे आदमी उतर आए। उनके सिर भी मुंड़े हुए थे। उन्होंने बहुत शानदार सूट पहन रखे थे। उन लोगों के बाद मिसेज़ कपिल जीप से बाहर आईं।

इंस्पेक्टर राना ने अपने काफिले के साथ दफ्तर में प्रवेश किया। सोनिया और मालती आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगीं।

एक गोरे-चिट्टे आदमी की बिल्ली जैसी आंखें मेजर की मेज़ पर जमकर रह गईं और उसके चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई। जब उसने मिसेज़ दिनशा और मि० जुत्शी को कुर्सी पर टेप से जकड़ा हुआ पाया तो उसकी मुस्कराहट और भी खिल उठी। उसने कहा, "हमें आप बेकार ही पकड़ लाए हैं। वास्तविक अपराधी तो यहां मौजूद हैं।" उसने मिसेज़ दिनशा और जुत्शी की ओर इशारा किया और फिर बोला, "हमारे ज़ेवर शायद इन्हीं लोगों के पास से बरामद हुए हैं।"

जुत्शी उस गोरे-चिट्टे आदमी को घृणा से देखने लगा।

"मि० ब्राकवे, यह निर्णय तुम नहीं कर सकते कि अपराधी कौन है ? तुम चुपचाप इस कुर्सी पर बैठ जाओ।" मेजर ने उस गोरे-चिट्टे आदमी से कहा। वह मेजर के मुंह से अपना नाम सुनकर बहुत हैरान हुआ और चुपचाप कुर्सी पर जा बैठा।

मेजर ने दूसरे रुंडमुंड गोरे आदमी से कहा, "मि० रिचर्ड आस्ब्रोन, तुम भी अपने साथी के बराबर जा बैठो।"

दूसरा व्यक्ति भी मेजर के मुंह से अपना नाम सुनकर चकित रह गया। वह चुपके से अपने साथी ब्राकवे के बराबर वाली कुर्सी पर जा बैठा।

मेजर ने रुंडमुंड गोरी स्त्री से कहा, "आप पहले मिस एडथर थीं। फिर आप मिसेज़ सुखदेव बन गईं। आपका खयाल था कि विवाह के बाद आप सुख और शान्ति से विवाहित जीवन व्यतीत कर सकेंगी। लेकिन आपका अतीत कलंकपूर्ण था। ब्राकवे उस कलंक में प्रमुख रूप से जुड़ा था। आप समझ रही थीं कि शिकागो विश्व-विद्यालय के भारतीय वैज्ञानिक सुखदेव कपूर के साथ रहकर आप आराम से जीवन व्यतीत कर सकेंगी। लेकिन ब्राकवे मनहूस साये की तरह आपसे लिपटा रहा। ब्राकवे, जो शिकागो का कुख्यात बटमार, चोर, सेंधमार और पिस्तौलबाज़ है।"

सब हैरान थे कि मेजर यह कहानी कहां से पढ़कर सुना रहा है। मिस एडथर या मिसेज़ सुखदेव कपूर चुपचाप खड़ी रहीं। उनके गालों पर आंसू बह रहे थे।

"क्या आप अपने पुराने पति सुखदेव कपूर से मिलना चाहेंगी? मैं जानता हूं कि आप अपराधी हैं, साथ ही मि० सुख-देव कपूर को आप बहुत प्यार करती हैं। लेकिन ब्राकवे इस प्यार का गला घोंट देना चाहता है। मिस एडथर, क्या आप अपने पिछले पति से मिलना चाहती हैं?" मेजर ने पूछा।

मिस एडथर ने 'हां' में सिर हिला दिया।

मेजर ने मुड़कर मालती से कहा, "मि० जुत्शी के टेप खोल दो।"

मिस एडथर ने जुत्शी की ओर देखा। वह उसे पहचान न पाईं। मेजर ने हंसकर कहा, "अभी आप अपने पति सुखदेव कपूर को पहचान न पाएंगी।"

मालती ने जुत्शी के टेप खोल दिए तो मेजर ने वह विचित्र चीज़ मेज़ पर रख दी जो सोमदत्त कपूर के सूटकेस से निकली थी। मेजर ने उस चीज़ की ओर संकेत करके कहा, "इस चीज़ ने मुझे इस केस को हल करने में सहायता दी। यह चीज़ लम्बे जूते, डम्बल और बाक्सिंग के दस्ताने जैसी दिखाई दे रही है। लेकिन यह एक स्प्रिंगदार जूता है जिसे पहनकर आदमी का कद लम्बा हो जाता है।" इस रहस्योद्घाटन के बाद मेजर ने जुत्शी से

कहा, "मि० सुखदेव कपूर, आपने भी ऐसे ही जूते पहन रखे हैं। उन्हें उतार दीजिए ताकि आप असाधारण लम्बे दिखाई न दें। जूते उतारकर खड़े हो जाइए और सिर पर से यह भद्दी टोपी उतार दीजिए, ताकि आपका वास्तविक चेहरा दिखाई देने लगे।"

जुत्शी उर्फ सुखदेव कपूर ने जूते और टोपी उतार दी और कुर्सी पर से उठकर खड़ा हो गया। उसका कद अब पांच फुट आठ इंच से अधिक नहीं था।

"ओह, डार्लिंग," मिस एडथर बांहें फैलाकर सुखदेव कपूर की ओर बढ़ी और उससे लिपटकर बोली, "मैं आपके योग्य नहीं थी, और अब भी नहीं हूं। मैं आपको अन्तिम बार अपने सीने से लगा रही हूं।"

इंस्पेक्टर राना, उसके तीनों कांस्टेबल, मालती, सोनिया, डोरा और सुधीर आश्चर्य में डूबे मेजर को देख रहे थे जो एक के बाद एक आश्चर्यजनक चमत्कार दिखा रहा था।

मेजर ने जुत्शी से कहा, "आप बिल्कुल निरपराध हैं। आपकी सूझबूझ प्रशंसनीय है। अगर आप अपना कद न बढ़ाते तो ब्राकवे ने आपको कभी का मार डाला होता। आप अपनी कुर्सी पर बैठ जाइए।"

फिर मेजर ने मिस एडथर से कहा, "आप इधर आकर मेरी असिस्टेंट सोनिया के पास बैठ जाइए।"

सोनिया ने मिस एडथर को इशारे से अपने पास बुला लिया।

मेजर ने मिसेज़ दिनशा से कहा, "मिसेज़ दिनशा, मैं आपसे क्षमा चाहता हूं कि मैंने आपको इतना कष्ट दिया। असल में मैं हत्यारों को धोखा देना चाहता था। आपको यहां बांधकर इन लोगों को यह दिखाना चाहता था कि वास्तविक अपराधी आप और मि० सुखदेव कपूर हैं। इसके अतिरिक्त मेरा एक उद्देश्य और भी था। मैं नहीं चाहता था कि आप दोनों को यहां देखकर हत्यारे बौखलाकर आपपर आक्रमण कर बैठें। मिसेज़ दिनशा, आप एक वफादार भारतीय नारी हैं। आपका मुकाबला पश्चिमी नारियां नहीं कर सकतीं। आपने अपने कालेज के मित्र और प्रेमी सुखदेव कपूर को अपनी जान पर खेलकर हत्यारे से दूर रखा," यह कहकर मेजर ने मालती से कहा, "मालती, इनके बंधन खोल दो।"

मालती मिसेज़ दिनशा के बंधन खोलने लगी तो जुत्शी उर्फ सुखदेव कपूर अपनी कुर्सी पर से उठकर आया और मेजर के पैर

छूकर बोला, "मुझे क्षमा कर दीजिए मेजर साहब, मैंने आपके साथ बहुत ही अभद्रतापूर्ण व्यवहार किया और यह कह दिया कि आप जासूसी का क-ख भी नहीं जानते। लेकिन आप तो महान जासूस हैं। मैं हैरान हूं कि यह सारा किस्सा आपको कैसे मालूम हो गया! दुश्मन मुझे पहचान नहीं पाया, लेकिन आपने मुझे पहचान लिया।"

"आप अपनी कुर्सी पर जा बैठिए। मैं ज़रा अपना काम समाप्त कर लूं।"

सुखदेव कपूर अपनी कुर्सी पर जा बैठा तो मेजर ने मिसेज़ सरोज कपिल से कहा, "अब केवल तुम रह गई हो। मैं अभी तक यह निश्चय नहीं कर पाया हूं कि तुम्हें किस श्रेणी में स्थान दूं। क्षमा करना, मैं आपके स्थान पर तुम शब्द का प्रयोग कर रहा हूं। मैं किसी भी चरित्रहीन स्त्री को 'आप' के सम्मानपूर्ण शब्द से सम्बोधित नहीं कर सकता। तुम्हारा पति सोमदत्त कपूर भी चरित्रहीन था। उसे अपने किए का दंड मिल गया। वह यद्यपि सुखदेव कपूर का मित्र था और तुमसे सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने के बाद वह शिकागो चला गया था। लेकिन वह अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आया था। वहां जाकर उसने ब्राकवे की एक रखैल से इश्क लड़ाया और उसके ज़ेवर चुराकर यहां भाग आया। मि० सुखदेव कपूर को अपनी पत्नी एडथर के चरित्र का पता चल गया था, इसलिए इन्हें यहां आना पड़ा। ब्राकवे सोमदत्त कपूर की हत्या की योजना बना चुका था। सोमदत्त कपूर जब इन लोगों के हाथ से निकल गया तो इसने सुखदेव कपूर को अपना निशाना बनाया। ब्राकवे स्मगलर भी था। शिकागो की पुलिस इसके पीछे हाथ धोकर पड़ गई थी। उसने अपने साथियों के साथ अमेरिका छोड़कर भारत में सोने और हीरों को ज़ेवरों के रूप में स्मगल करने की योजना बनाई। ब्राकवे की बहन पहले से ही भारत में मौजूद थी, जो अमेरिकन डालर और स्मगल किया हुआ सोने का धंधा करती थी। ब्राकवे अपने साथियों के साथ यहां आ गया। वह सोना स्मगल करने और सोमदत्त कपूर तथा सुखदेव कपूर की हत्या करने के इरादे से यहां आया था। वह अपनी बहन मिसेज़ कपिल की सहायता से सोमदत्त कपूर की हत्या करने में सफल हो गया।"

यह कहकर मेजर ने एक मुक्का ज़ोर से मेज़ पर मारा और मिसेज़ कपिल की ओर देखते हुए कहा, "मिसेज़ कपिल, तुमने

यद्यपि हत्याओं में सक्रिय भाग नहीं लिया, लेकिन परोक्ष रूप से भाग अवश्य लिया है। इसलिए तुम भी ब्राकवे के पास जा बैठो।''

मिसेज़ कपिल चुपचाप ब्राकवे के पास जा बैठी।

मेजर ने कहा, ''मुझे खेद है कि हत्यारों की एक भयानक साथी मिस हाल्बीन यहां नहीं है। ब्राकवे को विवश होकर उसकी हत्या करनी पड़ी। क्योंकि वह हमारी गोली से घायल हो गई थी,'' यह कहकर मेजर ने इंस्पेक्टर राना से कहा, ''इंस्पेक्टर साहब, क्या ये लोग मेरे अनुमान के अनुसार ही मिसेज़ कपिल के यहां पहुंचे थे ?''

इंस्पेक्टर ने पल-भर के लिए मेजर को प्रशंसा-भरी नजरों से देखा और फिर कहा, ''मैं आपको आज के युग का महान जासूस मानता हूं। आपके अनुमान के अनुसार ही, ये लोग मिसेज़ कपिल के मकान के दरवाज़े का ताला खोलकर अंदर पहुंचे और हमने इन्हें दबोचकर गिरफ्तार कर लिया।

मेजर ने कहा, ''अब मैं आपको यह बताता हूं कि मैंने हत्याओं के इस उलझे हुए केस को कैसे सुलझाया।''

सब लोग बड़े ध्यान के साथ मेजर की बात सुनने लगे।

## १४. लम्बे जूते

मेजर ने सिगरेट सुलगाकर बड़े आराम से एक कश लगाया और फिर बोला, ''हत्या का यह केस इस दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है कि यह स्त्री-पुरुष के पवित्र नाते, स्त्री की वफा-बेवफाई, पुरुष की दुश्चरित्रता और उसके पाश्चात्ताप की कहानी है। आजकल के मानवीय रिश्तों की एक ट्रेजडी है। क्योंकि आधुनिक युग में मानवीय इच्छाओं में सीमा से अधिक वृद्धि हो गई है। और धन-संग्रह का लालच अपनी सीमा पार कर गया है। हत्या का यह केस एक यथार्थ को और भी उजागर करता है।''

''किस यथार्थ को ?'' इंस्पेक्टर ने पूछा।

''इस यथार्थ को कि अपराध करने वाला भले ही कितना ही चालाक और साहसी क्यों न हो, उसे दंड अवश्य मिलता है,'' मेजर ने कहा, ''मैं इस केस की बहुत-सी बातें आपको बता चुका हूं कि इस केस ने किस प्रकार शिकागो में जन्म लिया, जहां वैज्ञानिक सुखदेव कपूर और गुंडों का सिरताज ब्राकवे रहते थे। ब्राकवे का

सम्बन्ध दो स्त्रियों से था। मिस एडथर और मिस हाल्बीन से। सुखदेव कपूर ने मिस शीरीं को ठुकराकर जीवन की सबसे बड़ी मूर्खता की। अब कहा नहीं जा सकता कि मिसेज़ दिनशा शीरीं अपने पुराने प्रेमी सुखदेव कपूर को स्वीकार करेंगी या नहीं।"

तभी मिसेज़ दिनशा शीरीं बोल उठीं, "मैं सुखदेव कपूर के यहां आते ही इनसे विवाह कर चुकी हूं।"

"ओह, अब मैं समझा कि आप सुखदेव कपूर की सुरक्षा के लिए अपनी जान क्यों लड़ा रही थीं।"

"मैं तो मिस एडथर को भी अपनी तरह ही एक सताई हुई स्त्री समझती हूं। अगर यह हमारे पास रहना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति न होगी।"

"अगर मुझे इस देश में रहने की अनुमति मिल जाए तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता होगी," मिस एडथर ने कहा, "मैं ऐसे देश में रहना चाहती हूं जिस देश की नारी आज भी पतिव्रता पत्नी, ममतामयी मां और स्नेहमयी बहन मानी जाती है।"

"आप मेरे साथ ही रहिए," मिसेज़ दिनशा ने कहा।

"लीजिए, एक समस्या तो हल हो गई," मेजर ने कहा, "अब मैं संक्षेप में इस केस पर से पर्दा उठाता हूं। मैं पहले ही कह चुका हूं कि इन लम्बे जूतों ने इस केस को सुलझाने में सहायता दी," मेजर ने मेज़ पर रखे लम्बे जूतों की ओर इशारा किया।

"वह कैसे ?" इंस्पेक्टर ने कहा।

"जब पहली बार मेरी भेंट मि० सुखदेव कपूर उर्फ जुत्शी से धोबी तालाब पर हुई तो मुझे संदेह हुआ कि इनके कद की इतनी लम्बाई अप्राकृतिक है। इनके भय ने मुझे बताया कि यह सच बोल रहे हैं। इन्होंने मुझे अपने मित्र सोमदत्त कपूर उर्फ रामपाल तलवाड़ की हत्या का पता लगाने के लिए चैक दिया तो वह भी सच्चा था। मैं समझ गया कि परिस्थितियों के अनुसार सोमदत्त कपूर के हत्यारे दिखाई देते हुए भी मि० जुत्शी हत्यारे नहीं हैं। सोमदत्त कपूर के सूटकेस से निकले हुए लम्बे जूतों की मैंने जांच की तो यह पहेली हल हो गई। मैं समझ गया कि सोमदत्त कपूर अपने मित्र सुखदेव कपूर के लिए ये विशेष जूते बनवाकर लाया था। वह जूते बनाने में कुशल था। और आगरे में उसकी जूते तैयार करने की फैक्टरी भी थी। जुत्शी का कद सामान्य था। इसका प्रमाण कोलाबा की बैरिक में मिला। मेरे आदमियों ने कहा कि मिसेज़

दिनशा का स्वागत दो पुरुषों ने किया। जिनमें से एक असाधारण रूप से लम्बा था और दूसरे का कद सामान्य था। असल में वे दोनों एक ही थे। जिस समय सुखदेव कपूर बैरिक में टहल रहे थे तो इन्होंने लम्बे जूते पहन रखे थे। लेकिन जब इन्होंने मिसेज़ दिनशा का स्वागत किया तो इन्होंने लम्बे जूते उतार दिए। इस केस की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसके हत्यारे भी दोहरे, मृतक भी दोहरे और घटनाएं भी दोहरी थीं। जैसे जुत्शी सुखदेव कपूर है। रामपाल तलवाड़ सोमदत्त कपूर था। मिसेज़ सरोज कपिल राजरानी बलगोत्रा हैं।"

मिसेज़ कपिल अपना पहला नाम सुनकर चौंक पड़ीं।

"खैर मैं वास्तविक कहानी की ओर आता हूं," मेजर ने कहा, "तीसरी बात जिसने मुझे हत्या का यह केस सुलझाने में सहायता दी, वह हत्याओं का ढंग था। मृतक के गले में फंदा, गर्दन के आर-पार चाकू और सीने में गोली का निशान। मैंने सोचा और इस परिणाम पर पहुंचा कि हत्या किसी प्रतिज्ञा के अनुसार की जाती है।"

"प्रतिज्ञा के अनुसार ?" सुखदेव कपूर के मुंह से निकला।

"जी हां, प्रतिज्ञा के अनुसार। तीन व्यक्ति सोमदत्त कपूर से बदला लेना चाहते थे। ब्राकवे, आस्ब्रोन और मिस हाल्बीन। ब्राकवे ने सोमदत्त कपूर के गले में फंदा डाला। आस्ब्रोन ने उसकी गर्दन में चाकू आरपार किया और मिस हाल्बीन ने सीने में गोली मारी। फिर उन्होंने ठीक इसी प्रकार राजीव प्रभाकर की हत्या की। मिस हाल्बीन को मारने के लिए भी यही ढंग अपनाया। लेकिन उसके गले में रस्सी का फंदा और चाकू आरपार होने के साथ सीने में गोली का घाव नहीं था।"

"आप यह बताइए कि सोमदत्त कपूर की हत्या क्यों की गई ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"उसने ब्राकवे की रखैल हाल्बीन से इश्क लड़ाया तो उसे मालूम नहीं था कि वह ब्राकवे की रखैल है। जब उसे यह मालूम हुआ तो उसने मिस हाल्बीन को उसकी बेवफाई का दंड उसके ज़ेवर चुराकर दिया। उसने इस सफाई से ज़ेवर चुराए कि ब्राकवे और मिस हाल्बीन को उसपर रत्ती-भर भी संदेह नहीं हुआ। जब सोमदत्त कपूर और सुखदेव कपूर शिकागो से चले आए तो ब्राकवे और हाल्बीन को पता चला कि सोमदत्त कपूर ज़ेवर चुराकर ले गया है। इन्होंने सुखदेव कपूर और सोमदत्त कपूर दोनों

को मार डालने की योजना बना ली।"

"सुखदेव कपूर की हत्या करने की योजना क्यों बनाई गई ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"इनका विचार था कि इस चोरी में सुखदेव कपूर का हाथ भी है। इन लोगों ने यहां पहुंचकर अपनी बहन से सम्पर्क स्थापित किया। ब्राकवे की बहन मि० कठालिया की पत्नी है।"

"ब्राकवे की बहन मिस्टर कठालिया की पत्नी है ?"

"जी हां, हम अभी उससे मिलने चलेंगे," मेजर ने कहा।

"एक बात समझ में नहीं आती कि सोमदत्त की लाश हत्या के बाद मिसेज़ कपिल के गुड़ियाघर में क्यों लाई गई ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"ब्राकवे और उसके साथी स्थानीय लोगों की सहायता चाहते थे। ब्राकवे को अपनी बहन से पता चला कि मिसेज़ सरोज कपिल कठालिया की रखैल हैं। आपको याद होगा कि जब सोमदत्त कपूर ने मिसेज़ सरोज कपिल को पत्र लिखा तो उसमें उसने लिखा था कि अब उसके पास ढेर सारा धन है। जिसका अर्थ था कि सोमदत्त के पास सचमुच मिस हाल्वीन के ज़ेवर थे। मि० कठालिया से इन्हें यह भी पता चला गया कि मिसेज़ सरोज कपिल अपने पति से मेल करना चाहती हैं। वह मेल होने देना नहीं चाहते थे और मिसेज़ सरोज कपिल को ब्लैकमेल करके सोमदत्त से अपने ज़ेवर वापस लेना चाहते थे।"

"क्या मि० कठालिया ने मिसेज़ सरोज कपिल को जो ज़ेवर दिए थे वे ब्राकवे के ज़ेवर थे ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"ब्राकवे के भी थे और सोमदत्त के भी थे।"

"सोमदत्त के ज़ेवर मिसेज़ सरोज कपिल के पास कैसे आए ?"

"पहले यह सुनिए कि सोमदत्त की हत्या कैसे की गई और राजीव प्रभाकर हत्यारों के हत्थे कैसे चढ़ गया। सुखदेव कपूर ने सच कहा था कि उनके मित्र सोमदत्त को सीधे किंग सर्किल में मिसेज़ सरोज कपिल के घर नहीं जाना चाहिए था। सोमदत्त मिसेज़ सरोज के यहां पहुंचा तो वहां मिसेज़ सरोज के अतिरिक्त और कोई नहीं था। दोनों के बीच मेल हो गया और सोमदत्त ने बहुत-से ज़ेवर सरोज को दे दिए, जो सरोज ने छिपाकर रख दिए। ठीक उसी समय कठालिया ब्राकवे और उसके साथियों को लेकर वहां पहुंच गया। ब्राकवे ने सोमदत्त को पहचान लिया और

उसे मार डाला। जिस समय सोमदत्त की हत्या की जा रही थी, राजीव प्रभाकर भी वहां पहुंच गया। उसे मालूम हो गया था कि आज सोमदत्त बम्बई पहुंच रहा है। उसने भी सोमदत्त को मार डालने की योजना बना ली। वह जब मिसेज़ सरोज के घर पहुंचा तो सोमदत्त की हत्या की जा चुकी थी। यह देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन क्योंकि उसने ब्राकवे और उसके साथियों को सोमदत्त की हत्या करते देख लिया था, इसलिए ब्राकवे ने उसे भी मार डाला और उसकी लाश कुएं में फेंक दी। अपने पति की लाश को देखकर मिसेज़ सरोज बिगड़ खड़ी हुई। ब्राकवे ने उसे भी मार डालना चाहा। लेकिन ज़ेवरों के बिना हाथ आए वह मिसेज़ सरोज कपिल को मार नहीं सकता था। इसलिए उसने मिसेज सरोज को हमेशा के लिए अपने वश में रखने के लिए लाश उसके गुड़ियाघर में ले जाकर रख दी।''

''ज़रा ठहरिए, क्या मि० कठालिया किसी मिल के मालिक नहीं थे ?'' इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

''नहीं, उसने झूठ बोला था। उसे मेरे पास इसलिए भेजा गया था कि मेरा ध्यान ज़ेवरों की ओर से हट जाए।''

''कठालिया की हत्या क्यों की गई ?''

'' ब्राकवे के आते ही वह समझ गया था कि उसकी पत्नी उसे धोखा दे जाएगी। वह ज़ेवर हथियाना चाहता था ताकि पत्नी के चले जाने के बाद वह आराम से जीवन बिता सके। उसके इस षड्यन्त्र का उसकी पत्नी को पता चल गया। और उसने ब्राकवे को यह बात बता दी। ब्राकवे ने कठालिया से ज़ेवरों का तकाज़ा आरंभ कर दिया। जब उसे ज़ेवर न मिले तो कठालिया को उसने ठिकाने लगा दिया। कठालिया से बहुत ही भयंकर बदला लिया गया। बारूद से उसके बदन के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिए गए।

'' अब मैं केवल दो बातों का स्पष्टीकरण करना चाहता हूं। जब मिसेज़ सरोज कपिल से ज़ेवर न मिल सके तो हत्यारे उसकी हत्या तो कर नहीं सकते थे केवल उसे भयभीत कर सकते थे। वे उसे एक खेत में ले गए और उन्होंने मिसेज़ सरोज को मार डालने का ढोंग रचा। इसीलिए मिसेज़ सरोज के गले में रस्सी का जो फंदा डाला गया वह मज़बूत नहीं था। ब्राकवे और उसके साथी चाहते थे कि शोर मच जाए और उन्हें भागने का मौका मिल जाए।''

"उन्होंने यह ढोंग क्यों रचा था ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"वे पुलिस को यह बताना चाहते थे कि मिसेज़ सरोज एक जालसाज़ औरत है और उसने जानबूझकर अपने-आपपर आक्रमण कराया है। इस प्रकार पुलिस उसीको हत्यारा समझ ले।"

"ब्राकवे बहुत ही बुद्धिमान अपराधी है।"

"ब्राकवे नहीं, इसकी बहन बुद्धिमान अपराधी है जो कठालिया की पत्नी है, जिससे हम अभी मिलने चलेंगे," मेजर ने कहा, "अब मैं अन्तिम प्वाइंट को स्पष्ट करता हूं। सुखदेव कपूर ने अमेरिकन जासूस मिसेज़ ग्लोरिया को यहां बुलाया। इन्हें यह आशा नहीं थी कि मिसेज़ ग्लोरिया के यहां पहुंचते ही उसकी हत्या कर दी जाएगी। मुझे इन हत्यारों के नाम मिसेज़ ग्लोरिया के हेडक्वार्टर के तार द्वारा मालूम हुए," मेजर ने सिगरेट फर्श पर फेंककर जूते से मसल दी और कुर्सी परसे उठते हुए बोला, "आइए, हम सब ब्राकवे की बहन से मिलने चलें।"

मेजर सबको लेकर माहिम में कठालिया के मकान गुलशन विला के पास पहुंचा तो सबने देखा बिल्डिंग की दूसरी मंज़िल पर एक खिड़की के पर्दे के पीछे एक स्त्री खड़ी थी, जो उन लोगों की ओर देख रही थी। सब लोग गुलशन विला के उस कमरे में पहुंचे तो एकदम ठिठककर रुक गए। मेजर एक पल रुककर खिड़की के पास पहुंचा।

"क्यों क्या हुआ ?" इंस्पेक्टर राना ने पूछा।

"अंदर आकर देख लीजिए।" मेजर ने उत्तर दिया।

सोनिया, मालती, डोरा, सुधीर, मिसेज़ दिनशा शीरीं, सुखदेव कपूर और मिस एडथर के मुंह से चीख निकलते-निकलते रह गई। खिड़की के पास दीवार के सहारे एक स्त्री खड़ी थी और उसकी गर्दन को पार करता हुआ एक फलवाला लम्बा चाकू दीवार में घुसा हुआ था।

और उस स्त्री के सारे कपड़े खून से तर थे।

* * *

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-३२ 

# मौत की भूल

## कर्नल रंजीत

हत्या की हर वारदात दोहरी थी, हर व्यक्तित्व दोहरा था, हत्यारे भी दोहरे, हताहत भी दोहरे और उनकी गतिविधियां भी दोहरी थीं···कर्नल रंजीत की अत्यन्त लोकप्रिय जासूसी उपन्यासमाला का यह पुष्प हर दृष्टि से डबल है। लेखक ने एक अनोखी कल्पना के ताने-बाने से इस उपन्यास का कथानक बुना है, जो अपनी उलझनों व गुत्थियों के कारण रहस्य और रोमांच के अद्भुत वातावरण की सृष्टि करता है।

भारत की सर्वप्रथम पॉकेट बुक्स

हिन्द पॉकेट बुक्स